घुड़सवार मेंढक

घुड़सवार मेढक

—चीन की लोककथाएं (भाग १)

विदेशी भाषा प्रकाशन-गृह, पेइचिङ

कथाक्रम

घुड़सवार मेढक

(तिब्बती जाति की लोककथा)

एक समय की बात है। एक दूर-दराज इलाके में ऊंचे पहाड़ पर एक गरीब किसान दम्पति रहता था। पहाड़ की अनुपजाऊ ढलान पर वह पहाड़ी जौ और आलू उगाता था। वह दिनरात मेहनत करता था। फिर भी उसका गुजारा मुश्किल से चल पाता था।

दम्पति के कोई सन्तान न थी। धीरे-धीरे दोनों की उम्र ढलती गई। वे कमजोर होते गए। दोनों सन्तान के लिए बेचैन रहते। वे कहते थे : "काश, हमारा भी एक नन्हा-सा बच्चा होता! जब हम बूढ़े हो जाते, तो वह हमारी जमीन जोतता, हमारे बदले मजिस्ट्रेट के पास बेगार करता और ईंधन के लिए लकड़ी काट लाता। और जब हम बहुत बूढ़े हो जाते, तो अंगीठी के पास बैठकर कुछ देर कमर सीधी कर सकते!"

इसलिए दोनों भगवान गिरिराज से पुत्रप्राप्ति की प्रार्थना करने लगे। कुछ ही दिनों में किसान की पत्नी गर्भवती हो गई। लेकिन सात महीने बाद उसने बच्चे की जगह एक मेढक को जन्म दिया, जिसकी दो बड़ी-बड़ी आंखें बाहर को निकली हुई थीं।

बूढ़े किसान ने कहा : "कितने आश्चर्य की बात है! बच्चे के बदले यह बड़ी-बड़ी आंखों वाला एक मेढक पैदा हो गया है। चलो, इसे बाहर

घुड़सवार मेंढक

(तिब्बती जाति की लोककथा)

एक समय की बात है। एक दूर-दराज इलाके में ऊंचे पहाड़ पर एक गरीब किसान दम्पति रहता था। पहाड़ की अनुपजाऊ ढलान पर वह पहाड़ी जौ और आलू उगाता था। वह दिनरात मेहनत करता था। फिर भी उसका गुजारा मुश्किल से चल पाता था।

दम्पति के कोई सन्तान न थी। धीरे-धीरे दोनों की उम्र ढलती गई। वे कमजोर होते गए। दोनों सन्तान के लिए बेचैन रहते। वे कहते थे : "काश, हमारा भी एक नन्हा-सा बच्चा होता! जब हम बूढ़े हो जाते, तो वह हमारी जमीन जोतता, हमारे बदले मजिस्ट्रेट के पास बेगार करता और ईंधन के लिए लकड़ी काट लाता। और जब हम बहुत बूढ़े हो जाते, तो अंगीठी के पास बैठकर कुछ देर कमर सीधी कर सकते!"

इसलिए दोनों भगवान गिरिराज से पुत्रप्राप्ति की प्रार्थना करने लगे। कुछ ही दिनों में किसान की पत्नी गर्भवती हो गई। लेकिन सात महीने बाद उसने बच्चे की जगह एक मेंढक को जन्म दिया, जिसकी दो बड़ी-बड़ी आंखें बाहर को निकली हुई थीं।

बूढ़ किसान ने कहा : "कितने आश्चर्य की बात है! बच्चे के बदले दो बड़ी-बड़ी आंखों वाला एक मेंढक पैदा हो गया है। चलो, इसे बाहर

रोजमर्रा के कमरतोड़ काम में तुम्हारा हाथ बंटा सके।"

"बेटा, बेसिरपैर की न उड़ाओ," मां ने कहा। "तुम जैसे बदसूरत और छोटे प्राणी को अपनी लड़की कौन देगा! यह न भूलो कि तुम एक मेंढक हो, जिसे चुटकियों में कुचला जा सकता है!"

"मां, तुम मेरे लिए एक रोटी तो बना दो," मेंढक ने कहा। "मजिस्ट्रेट मेरी बात जरूर मान जाएगा।"

अन्त में मां राजी हो गई। "ठीक है, मैं तुम्हारे लिए एक रोटी बना देती हूं," वह बोली। "लेकिन मुझे डर है कि कहीं लोग तुम्हें देखते ही तुम्हारे ऊपर राख न उंडेल दें, जैसा कि लोग भूत-प्रेत भगाने के लिए अक्सर करते हैं। अगर ऐसा हुआ, तो तुम क्या करोगे?"

"नहीं मां," मेंढक ने उत्तर दिया, "वे लोग ऐसा करने की जुर्रत नहीं कर सकते।" मां ने दूसरे दिन सुबह मोटे अनाज की एक बड़ी-सी रोटी बनाई और उसे एक थैले में रख दिया।

मेंढक ने थैले को अपनी पीठ पर लाद लिया और फुदकता हुआ घाटी के सिरे पर खड़े मजिस्ट्रेट के किले की तरफ चल पड़ा।

जब मेंढक किले के फाटक पर पहुंचा, तो उसने जोर से आवाज लगाई: "अरे ओ मजिस्ट्रेट, दरवाजा तो खोलो।"

मजिस्ट्रेट ने उसकी आवाज सुनी। सोचा, कोई उसे बुला रहा है। यह पता लगाने के लिए कि कौन आया है, उसने अपने सेवक को भेजा।

मेंढक को देखते ही सेवक हैरान रह गया। लौट कर मालिक से बोला: "बड़े ताज्जुब की बात है, मालिक! फाटक पर एक मेंढक खड़ा है, एक छोटा-सा मेंढक! वह आपका नाम लेकर पुकार रहा है।"

मजिस्ट्रेट के दीवान ने बड़े विश्वास के साथ सलाह दी: "सरकार, यह जरूर कोई प्रेत-पिशाच है। इसके ऊपर राख डलवा दो।"

मजिस्ट्रेट उसकी बात से सहमत न हुआ। "ठहरो, जरा इन्तजार करो; हो सकता है, यह प्रेत-पिशाच न हो," वह बोला। "मेंढक आम तौर पर पानी के अन्दर रहते हैं। कहीं ऐसा तो नहीं है कि नागराज ने इसे

किसी काम से अपने महल से यहां भेजा हो। इसलिए इस पर दूध का छिड़काव करो, जैसा कि देवताओं के सम्मान में किया जाता है। फिर इससे मिलने मैं खुद जाऊंगा।"

सेवकों ने मजिस्ट्रेट के आदेशानुसार काम किया। मेढक का स्वागत-सत्कार देवताओं की तरह किया गया। उसके ऊपर दूध छिड़का गया, कुछ दूध आसमान की ओर भी छिड़क दिया गया।

मजिस्ट्रेट स्वयं फाटक पर जा पहुंचा और बोला, "मेढक महाशय, क्या आप नागराज के महल से आए हैं? कहिए मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूं?"

"मैं नागराज के यहां से नहीं आया," मेढक ने जवाब दिया। "मैं तो अपने निजी काम से आया हूं। आपकी तीनों लड़कियां विवाह योग्य हो गई हैं। मैं उनमें से एक को अपनी पत्नी बनाना चाहता हूं। कृपया आप अपनी एक लड़की मुझे दे दीजिए।"

मजिस्ट्रेट और उसके साथी यह सुनकर दंग रह गए। मजिस्ट्रेट ने कहा : "तुम कैसी ऊलजलूल बातें कर रहे हो, मेढक महाशय! जरा अपनी सूरत तो देखो! कैसे बदसूरत और बौने हो तुम! मेरी लड़कियों का विवाह तुम्हारे साथ कैसे हो सकता है? मैं बड़े-बड़े मजिस्ट्रेटों को भी लड़की देने से इनकार कर चुका हूं। भला तुम जैसे बदसूरत मेढक को कैसे दे सकता हूं! तुम बड़े मूर्ख हो जो ऐसी बेतुकी मांग पेश कर रहे हो।"

"अच्छा तो इसका मतलब यह है कि तुम अपनी लड़की देने को राजी नहीं हो," मेढक ने कहा। "ठीक है, अगर तुम राजी नहीं हो, तो मैं हंसना शुरू करता हूं।"

मजिस्ट्रेट को यह सुनकर बड़ा क्रोध आया। "अरे ओ मेढक के बच्चे, लगता है तेरा दिमाग बिलकुल फिर गया है! अगर तू हंसना ही चाहता है तो हंस ले। कौन रोक रहा है तुझे?"

मेढक ने हंसना शुरू कर दिया। उसकी हंसी की आवाज मेढकों के तालाब से रात के अंधेरे में आने वाली टर्राने की आवाज से दस गुनी

ऊंची थी, सौ गुनी ऊंची थी। उसकी हंसी से पृथ्वी डोलने लगी, मजिस्ट्रेट के किले की ऊंची-ऊंची मीनारें इस तरह हिलने लगीं जैसे अभी-अभी गिर पड़ेंगी। दीवारों में दरारें पड़ने लगीं। कंकड़-पत्थर और धूल के कण हवा में उड़ने लगे। उजाला अंधेरे में बदल गया। चारों ओर कुहराम मच गया। मजिस्ट्रेट के परिवार के लोग और सेवक अपनी जान बचाने के लिए इधर-उधर दौड़ने लगे और भगदड़ में एक-दूसरे से टकराने लगे। कुछ लोगों ने मेज-कुर्सियां सिर पर उठा लीं और कंकड़-पत्थरों से बचने के लिए उन्हें ढाल के तौर पर इस्तेमाल करने लगे।

मजिस्ट्रेट ने निराश होकर खिड़की से बाहर झांका और गिड़गिड़ाकर मेढक से विनती की : "मेढक महाशय, कृपा करके हंसना बन्द कर दो। नहीं तो हम सब लोगों की जान खतरे में पड़ जाएगी। मैं अपनी बड़ी लड़की का विवाह तुमसे करने को तैयार हूं।"

मेढक ने हंसना बन्द कर दिया। धीरे-धीरे पृथ्वी का डोलना बन्द हो गया; इमारतें स्थिर हो गईं।

मजिस्ट्रेट को मजबूर होकर अपनी बड़ी लड़की मेढक को देनी पड़ी। उसने सेवक को आज्ञा दी कि वह दो घोड़े ले आए : एक लड़की की सवारी के लिए और दूसरा दहेज ले जाने के लिए।

बड़ी लड़की मेढक से शादी करने के लिए बिलकुल तैयार नहीं थी। घोड़े पर चढ़ने से पहले जब वह छज्जे के पास से गुजर रही थी तो उसने चुपचाप चक्की का एक पाट अपने कपड़ों में छिपा लिया।

मेढक फुदकता हुआ आगे-आगे चलता जा रहा था और बड़ी लड़की घोड़े पर उसके पीछे-पीछे चल रही थी। वह घोड़े को जोर से हांक रही थी, इस उम्मीद से कि घोड़े को तेज रफ्तार से दौड़ाकर वह मेढक के पास पहुंच जाएगी और घोड़े के पांव से कुचल कर उसका काम तमाम कर देगी। लेकिन मेढक कभी दाईं ओर फुदक जाता तो कभी बाईं ओर। इसलिए लड़की की इच्छा पूरी न हो पाई। अन्त में वह बेहद अधीर होकर मेढक के नजदीक जा पहुंची और कपड़ों के अन्दर से चक्की का

पाट निकालकर उसे फुदकते मेढक पर दे मारा। इसके बाद उसने अपने घोड़े को तेजी से घर की ओर दौड़ा लिया।

वह अभी कुछ ही दूर गई होगी कि पीछे से मेढक की आवाज सुनाई दी : "अरी ओ लड़की, ठहरो! मुझे तुमसे एक जरूरी बात कहनी है।" लड़की ने गरदन मोड़ी तो देखा, मेढक खड़ा है। उसका ख्याल था मेढक कुचलकर मर गया होगा। पर वह तो चक्की के पाट के बीच में बने छेद से बाहर निकल आया था।

लड़की बेहद घबरा गई। उसने अपने घोड़े की लगाम खींच ली। मेढक उससे बोला : "विधाता ने शायद हमें एक-दूसरे के लिए नहीं बनाया है। तुम घर लौट सकती हो। शायद ऐसा ही तुम भी चाहती हो।" मेढक ने उसके घोड़े की लगाम थाम ली और उसके घर की तरफ चल पड़ा।

किले में पहुंचने के बाद मेढक ने मजिस्ट्रेट से कहा : "हमारे विचार एक-दूसरे से मेल नहीं खाते। इसलिए इस लड़की को वापस लौटा रहा हूं। अब तुम मुझे अपनी दूसरी लड़की दे दो। शायद वही मेरे भाग्य में हो।"

"कैसे घमण्डी मेढक हो तुम! लगता है, तुम अपनी औकात बिलकुल नहीं जानते!" मजिस्ट्रेट क्रोध से बौखलाकर बोला। "तुम मेरी पहली लड़की लौटा रहे हो और दूसरी लड़की मांग रहे हो। जानते हो, मैं एक मजिस्ट्रेट हूं? तुम्हें मनपसन्द लड़की कैसे दे सकता हूं?" वह क्रोध से थरथर कांप रहा था।

"इसका मतलब यह है कि तुम अपनी लड़की देने को राजी नहीं हो," मेढक ने कहा। "अगर तुम राजी नहीं हो, तो मैं रोना शुरू करता हूं।"

मजिस्ट्रेट ने मन ही मन सोचा, इस छोटे-से मेढक के रोने से क्या फर्क पड़ने जा रहा है। यह इसकी हंसी जैसा भयानक नहीं हो सकता। इसलिए उसने त्यौरियां चढ़ाकर उत्तर दिया, "रोना चाहते हो, तो रोओ! तुम्हारे रोने से यहां कौन डरने जा रहा है!"

मेढक ने रोना शुरू कर दिया। उसके रोने की आवाज ऐसी थी

मानो बरसात की रात में मूसलाधार पानी बरस रहा हो। ज्योंही मेढक ने रोना शुरू किया, चारों तरफ अंधेरा छा गया, आकाश में बिजली कड़कने लगी और पहाड़ की तलहटी में बाढ़ आ गई। शीघ्र ही समूची धरती सागर में बदलने लगी ; पानी लगातार बढ़ता जा रहा था और किले की पत्थर की मीनारों तक पहुंचने वाला था। मजिस्ट्रेट और उसके परिवार के लोगों को एक मीनार की छत पर शरण लेनी पड़ी। मजिस्ट्रेट ने गरदन बाहर निकाली और ऊंची आवाज में मेढक से बोला, "मेढक महाशय, रोना बन्द करो। नहीं तो हम सबकी जान खतरे में पड़ जाएगी। मैं अपनी दूसरी लड़की तुम्हें देने को तैयार हूं!"

मेढक ने रोना बन्द कर दिया। पानी धीरे-धीरे घटने लगा।

मजिस्ट्रेट ने मजबूर होकर फिर दो घोड़े लाने को कहा—एक लड़की की सवारी के लिए और दूसरा दहेज ले जाने के लिए। उसने अपनी दूसरी बेटी से मेढक के साथ जाने को कहा।

दूसरी बेटी भी मेढक के साथ शादी करने को राजी नहीं थी। उसने घोड़े पर चढ़ने से पहले चक्की का दूसरा पाट उठा लिया और उसे अपने कपड़ों में छिपा लिया। रास्ते में उसने भी मेढक को घोड़े से कुचलने की पूरी कोशिश की। मौका पाकर उसने भी मेढक के ऊपर चक्की का पाट दे मारा और घोड़े को एड़ मारकर घर की ओर लौट गई।

मेढक ने उसे भी जोर से आवाज लगाकर रोका: "अरी ओ लड़की, ठहरो! विधाता ने हमें एक दूसरे के लिए नहीं बनाया है। तुम अपने घर जा सकती हो।" घोड़े की लगाम पकड़कर मेढक ने उसे भी मजिस्ट्रेट को लौटा दिया। मेढक ने अब मजिस्ट्रेट की सबसे छोटी लड़की की मांग की।

यह सुनकर मजिस्ट्रेट आपे से बाहर हो गया। वह भर्राई हुई आवाज में बोला, "तुमने मेरी बड़ी लड़की को लौटा दिया, तो मैंने अपनी दूसरी लड़की तुम्हें दे दी। लेकिन अब तुम दूसरी लड़की को भी लौटा रहे हो और तीसरी लड़की की मांग कर रहे हो। यह सचमुच तुम्हारी बहुत

ज्यादती है। पूरी दुनिया में मेरे सिवाय एक भी मजिस्ट्रेट ऐसा नहीं जो तुम्हारी इस हरकत को बरदाश्त कर सके। तुम्हें . . . तुम्हें . . . तुम्हें . . . दरअसल कायदे-कानूनों की खाक परवाह नहीं है! . . ." वह इतने आवेश में आ गया कि उसकी जबान लड़खड़ाने लगी और वह अपनी बात भी पूरी नहीं कर पाया। उसने मन ही मन सोचा : जैसा मेरे साथ हुआ है, वैसा आज तक किसी दूसरे मजिस्ट्रेट के साथ नहीं हुआ होगा।

मेढक ने बड़ी शान्ति से उत्तर दिया : "मजिस्ट्रेट साहब, तुम इतने तैश में क्यों आ रहे हो? तुम्हारी दोनों बड़ी लड़कियां मेरे साथ जाने को बिलकुल राजी नहीं हैं। इसलिए मैंने उन्हें तुम्हारे पास वापस लौटा दिया है! लेकिन तुम्हारी तीसरी लड़की मेरे साथ जाने को तैयार है। उसे मेरे साथ क्यों नहीं भेजते?"

"नहीं, यह हरगिज नहीं हो सकता!" मजिस्ट्रेट ने तिरस्कारभरे स्वर में इनकार किया। "वह तुम्हारे साथ जाने को बिलकुल राजी नहीं है। कोई लड़की मेढक के साथ विवाह करने को भला कैसे राजी हो सकती है! अब मैं तुम्हारी मांग हरगिज पूरी नहीं कर सकता!"

"इसका मतलब यह है कि तुम राजी नहीं हो?" मेढक बोला। "अगर तुम मेरी बात नहीं मानोगे, तो मैं कूदना शुरू कर दूंगा।"

यह सुनकर मजिस्ट्रेट बहुत डर गया। पर बाहर से कड़ा रुख दिखाता हुआ बोला : "अगर तुम यही चाहते हो, तो कूद लो। मैं तुम्हारे कूदने से डर गया, तो भला मजिस्ट्रेट कैसे कहला सकता हूं।"

मेढक ने कूदना शुरू कर दिया। उसके कूदने से धरती कांप उठी। उसमें तूफानी सागर के समान हिलोरें उठने लगीं। पर्वत जोर-जोर से हिलने लगे। वे एक दूसरे से टकराने लगे। कंकड़-पत्थर और बालू के कण आकाश में उड़ने लगे। सूरज की रोशनी धुंधली पड़ गई। मजिस्ट्रेट के किले की दीवारें व मीनारें जोर-जोर से हिलने लगीं और ऐसा प्रतीत होने लगा मानो वे किसी भी समय चरमराकर गिर पड़ेंगी।

मजिस्ट्रेट को हार माननी पड़ी और अपनी तीसरी लड़की का विवाह

मेढक के साथ करने का वायदा करना पड़ा। मेढक ने कूदना बन्द कर दिया। धरती और पहाड़ फिर एक बार स्थिर हो गए।

मजिस्ट्रेट को अपनी तीसरी लड़की को मजबूरन मेढक के साथ भेजना पड़ा। एक घोड़े पर उसे बिठा दिया गया और दूसरे घोड़े पर उसका दहेज लाद दिया गया।

तीसरी लड़की अपनी दोनों बहिनों से भिन्न थी। वह बड़ी दयालु थी। उसने मन ही मन सोचा, हो न हो यह कोई विलक्षण शक्ति और बुद्धि वाला मेढक है। इसलिए वह उसके साथ जाने को तैयार हो गई।

मेढक उसे अपने घर ले गया। मां ने जब दोनों को आते देखा, तो आश्चर्य में पड़ गई। उसने सोचा, "कमाल की बात है! मेरे बदसूरत बेटे को इतनी खूबसूरत बहू कैसे मिल गई!"

बहू बड़ी मेहनती थी। रोज अपनी सास के साथ खेतों में काम करने जाती थी। सास उसे बहुत प्यार करने लगी। वह भी अपनी सास का

बड़ा आदर करने लगी। ऐसी गुणवान बहू पाकर सास की खुशी का ठिकाना न रहा।

कुछ समय बाद शरद का मौसम आ गया। स्थानीय रिवाज के मुताबिक हर साल शरद में फ़सल कटने के बाद एक त्यौहार मनाया जाता था। इस मौके पर एक घुड़दौड़ का आयोजन भी किया जाता था। घुड़दौड़ में शामिल होने या उसे देखने अमीर-गरीब सब तरह के लोग अपने-अपने खाल के तम्बुओं और नई फसल के अनाज के साथ सैकड़ों कोस से एक खुले मैदान में पहुंच जाते थे। वे लोग चन्दन की लकड़ी जलाकर देवी-देवताओं की पूजा करते थे, स्थानीय शराब पीते थे, नाचते-गाते थे और घुड़दौड़ में भाग लेते थे। इस त्यौहार के मौके पर युवक-युवती अपने-अपने जीवन-साथी भी चुनते थे। मां की इच्छा थी कि इस वर्ष मेढक भी उनके साथ घुड़दौड़ देखने जाए। लेकिन उसने इनकार कर दिया। बोला, "मैं नहीं जाऊंगा, मां। वहां जाने के लिए बहुत से पहाड़ों को पार करना पड़ता है। मेरे लिए वहां तक पहुंचना मुश्किल है।" इसलिए वह घर पर ही रह गया। परिवार के बाकी सब लोग घुड़दौड़ देखने चले गए।

यह त्यौहार सात दिन तक मनाया जाता था। अन्तिम तीन दिनों में घुड़दौड़ होती थी। हर रोज घुड़दौड़ समाप्त होने के बाद विजयी युवकों को नौजवान लड़कियां घेर लेती थीं और उन्हें अपने मां-बाप या भाइयों के तम्बुओं में पहाड़ी जौ की शराब पीने के लिए आमंत्रित करती थीं। यह शराब बड़े-बड़े मर्तबानों के अन्दर लड़कियां खुद बनाती थीं।

घुड़दौड़ के तीसरे दिन अन्तिम दौड़ शुरू होने के ठीक पहले हरे कपड़ों में सजा एक बांका जवान हरे रंग के घोड़े पर सवार होकर घुड़दौड़ के मैदान में आ पहुंचा। वह एक हृष्टपुष्ट और खूबसूरत नौजवान था। उसके कपड़े बढ़िया किमखाब और रेशम के थे। उसके घोड़े की काठी पर सोना-चांदी और मनि-मानिक जड़े हुए थे। उसके कन्धे पर चांदी व मूंगे से जड़ी बन्दूक लटकी हुई थी। जब उसने अन्तिम दौड़ में

बड़ा आदर करने लगी। ऐसी गुणवान बहू पाकर सास की खुशी का ठिकाना न रहा।

कुछ समय बाद शरद का मौसम आ गया। स्थानीय रिवाज के मुताबिक हर साल शरद में फ़सल कटने के बाद एक त्यौहार मनाया जाता था। इस मौके पर एक घुड़दौड़ का आयोजन भी किया जाता था। घुड़दौड़ में शामिल होने या उसे देखने अमीर-गरीब सब तरह के लोग अपने-अपने खाल के तम्बुओं और नई फसल के अनाज के साथ सैकड़ों कोस से एक खुले मैदान में पहुंच जाते थे। वे लोग चन्दन की लकड़ी जलाकर देवी-देवताओं की पूजा करते थे, स्थानीय शराब पीते थे, नाचते-गाते थे और घुड़दौड़ में भाग लेते थे। इस त्यौहार के मौके पर युवक-युवती अपने-अपने जीवन-साथी भी चुनते थे। मां की इच्छा थी कि इस वर्ष मेढक भी उनके साथ घुड़दौड़ देखने जाए। लेकिन उसने इनकार कर दिया। बोला, "मैं नहीं जाऊंगा, मां। वहां जाने के लिए बहुत से पहाड़ों को पार करना पड़ता है। मेरे लिए वहां तक पहुंचना मुश्किल है।" इसलिए वह घर पर ही रह गया। परिवार के बाकी सब लोग घुड़दौड़ देखने चले गए।

यह त्यौहार सात दिन तक मनाया जाता था। अन्तिम तीन दिनों में घुड़दौड़ होती थी। हर रोज घुड़दौड़ समाप्त होने के बाद विजयी युवकों को नौजवान लड़कियां घेर लेती थीं और उन्हें अपने मां-बाप या भाइयों के तम्बुओं में पहाड़ी जौ की शराब पीने के लिए आमंत्रित करती थीं। यह शराब बड़े-बड़े मर्तबानों के अन्दर लड़कियां खुद बनाती थीं।

घुड़दौड़ के तीसरे दिन अन्तिम दौड़ शुरू होने के ठीक पहले हरे कपड़ों में सजा एक बांका जवान हरे रंग के घोड़े पर सवार होकर घुड़दौड़ के मैदान में आ पहुंचा। वह एक हृष्टपुष्ट और खूबसूरत नौजवान था। उसके कपड़े बढ़िया किमखाब और रेशम के थे। उसके घोड़े की काठी पर सोना-चांदी और मनि-मानिक जड़े हुए थे। उसके कन्धे पर चांदी व मूंगे से जड़ी बन्दूक लटकी हुई थी। जब उसने अन्तिम दौड़ में

शामिल होने की अनुमति मांगी, तो लोग देखते रह गए। दौड़ शुरू होने के बाद भी वह बड़े इतमीनान से अपने घोड़े की काठी कसने में लगा हुआ था। दौड़ में शामिल बाकी घुड़सवारों के घोड़े काफी आगे निकल चुके थे। लेकिन दूसरे ही क्षण वह उछलकर अपने घोड़े पर सवार हो गया और देखते ही देखते उनके करीब जा पहुंचा।

सभी घुड़सवार विशाल चरागाह पर अपने-अपने घोड़े सरपट दौड़ा रहे थे। हरे घोड़े वाले नौजवान ने घोड़ा दौड़ाते-दौड़ाते अपनी बन्दूक भरकर तीन गोलियों से आसमान में तीन चीलों को मार गिराया। इसके बाद वह दर्शकों के पास से गुजरता हुआ अपने घोड़े के बाईं तरफ से नीचे कूद पड़ा और सुनहरे फूल चुनकर उन्हें बाईं तरफ के दर्शकों की ओर फेंकता हुआ फिर घोड़े पर सवार हो गया। कुछ देर बाद वह घोड़े के दाईं तरफ से नीचे कूद पड़ा और रुपहले फूल चुनकर उन्हें दाईं तरफ के दर्शकों की ओर फेंकता हुआ फिर घोड़े पर सवार हो गया। उसका घोड़ा हवाई रफ्तार से दौड़ रहा था। हरेभरे चरागाह में उसके घोड़े के खुरों के आघात से धूल के बादल उड़ रहे थे और दूर से देखने पर ऐसा लग रहा था मानो वह बादलों में उड़ रहा हो। दर्शक मंत्रमुग्ध होकर देख रहे थे। उसने दौड़ में बाकी सब घुड़सवारों को पछाड़ दिया और प्रथम स्थान प्राप्त किया।

सभी बुजुर्ग स्त्री-पुरुष, लामा और युवक-युवती उसे देखकर चकित रह गए। वे फुसफुसाकर एक-दूसरे से कहने लगे : "यह नौजवान कौन है ? इसका नाम क्या है ?"

"इसने पहले घोड़ा दौड़ाते-दौड़ाते बन्दूक चलाई, फिर घोड़े के बाईं तरफ से कूदकर सुनहरे फूल चुने और दाईं तरफ से कूदकर रुपहले फूल चुने। ऐसा दृश्य हमने पहले कभी नहीं देखा।"

"कितना खूबसूरत और हृष्टपुष्ट नौजवान है ! जरा इसके बेहतरीन घोड़े और सुन्दर काठी को तो देखो, रेशम और किमखाब को तो देखो ! ये चीजें इस पर कितनी फब रही हैं !"

मेंढक दरवाजे पर ही खड़ा था। जब उसे घुड़दौड़ के बारे में बताया गया, तो यह देखकर सबको बड़ा अचम्भा हुआ कि उसे सब बातें पहले से ही मालूम थीं, यहां तक कि उस सुन्दर नौजवान घुड़सवार के बारे में भी सब बातें वह पहले से ही जानता था।

अगले वर्ष शरद में, उसी स्थान पर वार्षिक घुड़दौड़ का आयोजन फिर किया गया। मां-बाप और बहू घुड़दौड़ देखने फिर गए।

जब दौड़ शुरू हुई, तो सब लोग हरी पोशाक वाले घुड़सवार और उसके हरे घोड़े के बारे में सोचने लगे। बहुत से लोगों ने कहा, "अगर वह इस बार आया, तो हम लोग उसका नाम-पता जरूर पूछ लेंगे और यह भी पता लगा लेंगे कि वह किस मजिस्ट्रेट के इलाके में रहता है।"

घुड़दौड़ के तीसरे दिन, जब अन्तिम दौड़ शुरू होने वाली थी, ठीक उसी समय हरे घोड़े पर सवार वही नौजवान हरे रंग की पोशाक में सजकर अचानक मैदान में दाखिल हुआ, मानो कोई देवता सीधा स्वर्ग से उतर रहा हो। इस बार भी एक सुन्दर बन्दूक उसके कन्धे पर लटक रही थी। इस बार उसकी पोशाक पहले से ज्यादा चमकीले किमखाब की बनी हुई थी। जब घुड़दौड़ शुरू हो गई और दूसरे घुड़सवार काफी दूर निकल गए, तब भी वह चाय पीता रहा। चाय पीने के बाद वह उछलकर अपने घोड़े पर सवार हो गया। एड़ लगाते ही उसका घोड़ा हवा से बातें करने लगा। पिछले वर्ष की ही तरह इस बार भी उसने अपनी बन्दूक में तीन गोलियां भरीं और उनसे तीन चीलों को मार गिराया। फिर घोड़े के बाईं तरफ से नीचे कूदकर सुनहरे फूल चुनने के बाद उन्हें बाईं तरफ के दर्शकों की तरफ फेंकता हुआ घोड़े पर सवार हो गया। इसके बाद उसने घोड़े के दाईं तरफ से कूदकर रुपहले फूल चुने और उन्हें दाईं तरफ के लोगों की ओर फेंकता हुआ घोड़े पर सवार हो गया। वह अपने घोड़े को बेहद तेज रफ्तार से दौड़ाने लगा। ऐसा लग रहा था मानो कोई हरा बादल चरागाह में उड़ रहा हो। इस बार फिर वही नौजवान प्रथम आया।

हमेशा की ही तरह इस बार भी युवतियों ने विजयी घुड़सवार के सम्मान में नाच-गाने पेश किए। इस वार सभी युवतियों ने उसके सम्मान में विशेष उत्साह से नाच-गाने पेश किए और पहाड़ी जौ की शराब पीने के लिए उसे बड़े उत्साह से अपने-अपने तम्बुओं में आमंत्रित किया। पर सूरज डूबते ही वह नवयुवक फिर एक बार चुपचाप वहां से विदा हो गया।

बुजुर्ग स्त्री-पुरुषों, लामाओं और युवक-युवतियों के समूह घोड़े के खुरों से उड़ने वाली धूल को आश्चर्य से देखते रह गए। किसी को मालूम नहीं था कि यह नौजवान कौन है और कहां से आया है। इस बार भी वे लोग उसका नाम-पता नहीं पूछ पाए।

घुड़दौड़ से घर लौटने पर बूढ़े मां-बाप और वहू को यह जानकर बड़ा अचम्भा हुआ कि वहां की हर बात मेंढक को पता है। उसे यह भी मालूम था कि उस अद्‌भुत युवक ने देर से दौड़ शुरू करने पर भी जीत हासिल कर ली।

बहू ने सोचा, "वहां गए बिना आखिर इसे वहां की सारी बातें कैसे मालूम हो गईं। वह खूबसूरत नौजवान सूरज डूबते ही घर क्यों लौट गया था? वह उसी दिशा में क्यों लौटा था जिधर हमारा घर है? क्या मानवलोक में कोई इतना अच्छा घुड़सवार भी हो सकता है? कितना सुन्दर, कितना बलशाली और कितना आकर्षक था वह नौजवान!" उसने पक्का इरादा कर लिया कि वह इस मामले की तह में जाएगी।

समय बीतते देर न लगी। जल्दी ही वार्षिक घुड़दौड़ का समय फिर आ गया। बहू अपने सास-ससुर के साथ हमेशा की ही तरह इस बार भी पूजा करने, नाचने-गाने और घुड़दौड़ देखने गई। लेकिन घुड़दौड़ के अन्तिम दिन, बहू ने सास से कहा, "मां, मेरा जी वहुत घवरा रहा है। सिर बेहद भारी हो गया है, मानो उस पर किसी ने हजारों मन बोझ रख दिया हो। मैं फौरन घर वापस जाना चाहती हूं। खच्चर पर बैठकर घर लौट जाऊं?"

सास-ससुर बहू का हमेशा बहुत ध्यान रखते थे। उन्होंने उसे परिवार

के उस खच्चर पर घर लौटने की अनुमति दे दी जिस पर वे लोग अपना तम्बू लादकर लाए थे। बहू कुछ ही क्षणों में दूर निकल गई और सास-ससुर की आंखों से ओझल हो गई। उसने खच्चर को सरपट घर की ओर दौड़ा दिया। घर पहुंचते ही वह सबसे पहले अपने पति को ढूंढ़ने लगी। पर उसका कहीं पता नहीं था। अंगीठी के पास उसे केवल मेंढक की खाल पड़ी मिली, जो उसके पति की ही खाल की तरह दिखाई दे रही थी। खाल को उसने हाथ में उठा लिया और उसे गौर से देखने लगी। उसकी आंखों में खुशी के आंसू उमड़ आए। वह चिल्ला पड़ी, "अब पता चला कि वह अद्‌भुत नौजवान घुड़सवार यह मेंढक ही है! हे भगवान, मैं कितनी भाग्यशाली हूं! मेरा पति कितना खूबसूरत है, कितना हृष्टपुष्ट है, कितना बढ़िया घुड़सवार है! मुझे यह हरगिज नहीं सोचना चाहिए कि उसका और मेरा कोई मेल नहीं। मैं सचमुच कितनी भाग्यशाली हूं! साथ ही मैं कितनी बड़ी अभागिन हूं, जो अब तक अपने स्वामी के असली रूप के बारे में अन्धकार में थी!"

बहू की आंखों से लगातार आंसू बहते जा रहे थे। उसने बार-बार मेंढक की खाल को देखा और नाराज होकर बोली: "तुम इतनी घिनौनी खाल क्यों ओढ़े रहते हो? इतने बौने और बदसूरत क्यों बने रहते हो? क्या मैं तुम्हारे लायक नहीं हूं? क्या तुम हमेशा मेंढक ही बने रहोगे और मेरे सच्चे पति कभी नहीं बन पाओगे?"

उसे खाल से घृणा होने लगी। उसने फैसला कर लिया कि उसे जला देगी। उसने सोचा, अगर मैं इस खाल को जलाऊंगी नहीं, तो मेरा पति फिर एक बौना और बदसूरत मेंढक बन जाएगा। इसलिए उसने फौरन मेंढक की खाल को आग में डाल दिया।

जब खाल जल रही थी, तो सूरज डूबने वाला था। अचानक एक खूबसूरत नौजवान तेजी से घोड़ा दौड़ाता हुआ वहां आ पहुंचा, मानो आकाश से हरे रंग का बादल उतर आया हो। जब उसने अपनी खाल को जलते देखा, तो उसका चेहरा घबराहट से पीला पड़ गया। घोड़े से

नीचे कूदकर वह ग्राग में जलती खाल को बचाने के लिए लपका। पर ग्रब वहुत देर हो चुकी थी ; केवल एक पैर की ही खाल बाकी रह गई थी।

नौजवान ने एक गहरी उसांस भरी ग्रौर लाश की तरह घर के सामने एक वड़े पत्थर पर गिर पड़ा।

मेढक की पत्नी वहुत घबरा गई ग्रौर उसे उठाकर घर के भीतर ले जाने के लिए ग्रागे वढ़ी।

"मेरे जीवन-साथी," उसने दुखी होकर कहा, "तुम एक शानदार युवक हो, एक शानदार घुड़सवार हो। फिर तुम मेढक क्यों बने रहना चाहते हो ? बाकी सब स्त्रियों के पति मनुष्य हैं, लेकिन मेरे पति मेढक हैं ! जानते हो, इससे मुझे कितनी वेदना होती है ?"

नौजवान ने उत्तर दिया : "जानता हूं, प्रिये। लेकिन तुमने बड़ी जल्द-बाजी से काम लिया, जो कुछ भी किया बड़ी जल्दबाजी से किया। मेरे पर्याप्त शक्तिशाली वनने तक तुम्हें प्रतीक्षा करनी चाहिए थी। तब हम एक साथ सुख से जीवन विता सकते। ग्रब मैं जीवित नहीं रह सकूंगा ग्रौर जनता भी खुशहाल नहीं हो सकेगी।"

"तो क्या तुम्हारी खाल जलाकर मैंने कोई गलत काम किया ?" पत्नी ने पूछा। "ग्रब इसका निराकरण करने के लिए मुझे क्या करना चाहिए ?"

"इसमें तुम्हारा कोई दोष नहीं है, प्रिये। यह सब मेरी ही लापरवाही की वजह से हुग्रा।" नौजवान ने कहा। "मैं ग्रपनी शक्ति ग्राजमाना चाहता था। इसलिए प्रतियोगिता में शामिल होने चला गया। लेकिन ग्रव न जनता ही सुखी रह सकेगी ग्रौर न हम दोनों ही। मैं कोई साधारण प्राणी नहीं हूं। मैं धरती मां का बेटा हूं। ग्रगर मैं खूब हृष्टपुष्ट ग्रौर शक्तिशाली बन जाता, तो जनता के सब कष्ट दूर कर सकता था। मैं एक ऐसी दुनिया बनाना चाहता था जहां ग्रमीर लोग गरीबों को पैरों तले न कुचलते, ग्रफसर गरीब जनता का उत्पीड़न न करते। मैं कोई ऐसा रास्ता खोज निकालना चाहता था जिससे हम ग्रासानी से सुन्दर

पङ्चिङ शहर जा सकते और अपने हान भाइयों को अनाज के बदले मवेशी बेच सकते। अभी मैं बड़ा नहीं हो पाया था, पूरी तरह शक्तिशाली नहीं बन पाया था। इसलिए मेंढक की खाल ओढ़े बिना ठण्डी रातें नहीं बिता सकता था। अब मैं पौ फटने से पहले ही मर जाऊंगा। अगर मैं अपनी पूरी शक्ति का विकास करने में कामयाब हो जाता, तो यहां का मौसम काफी गरम हो जाता और मैं जनता के कष्ट दूर करने में सफल हो जाता। तब हमारा जीवन बड़े सुख से बीतता और मैं मेंढक की खाल हमेशा के लिए उतार फेंकता। लेकिन तुमने तो समय से पहले ही मेरी खाल जला दी। अब मैं जमीन पर नहीं रह सकता। आज रात धरती मां के गर्भ में लौट जाऊंगा।"

यह सुनकर घुड़सवार मेंढक की पत्नी की आंखों से आंसुओं की झड़ी लग गई। पति के निर्बल शरीर को उसने अपनी बाहों में भर लिया और दुखी होकर कहा, "मेरे जीवन-साथी, तुम्हें मरना नहीं चाहिए! तुम्हें अवश्य जीवित रहना चाहिए। मुझे पक्का विश्वास है कि तुम्हारी मृत्यु नहीं होगी।"

पत्नी बिलख-बिलख कर रोने लगी। यह देखकर नौजवान ने उसका हाथ अपने कमजोर हाथों में थाम लिया और बोला : "प्रिये, इतनी दुखी क्यों होती हो! मुझे मृत्यु से बचाने का अब भी एक उपाय है।" फिर उसने पश्चिम की ओर इशारा किया और अपनी बात जारी रखते हुए कहा, "यह काम सिर्फ भगवान की इच्छा और अनुमति से ही हो सकता है। अभी वक्त है। उठो और फौरन मेरे घोड़े पर सवार हो जाओ। यह घोड़ा बहुत तेज दौड़ सकता है। यह तुम्हें पश्चिम की ओर ले जाएगा। वहां लाल बादलों के बीच एक दैवी भवन खड़ा है। वहां पहुंचकर भगवान से प्रार्थना करो। उनसे जनता की खुशहाली के लिए तीन चीजों की मांग करो और पौ फटने से पहले ही इन तीनों को पाने का आश्वासन ले लो : पहले, हमारे समाज में गरीब और अमीर का भेद न रहे; दूसरे, सरकारी अफसर आम जनता का उत्पीड़न न करें; तीसरे, कोई ऐसा

रास्ता खोज लिया जाए जिससे हम पेइचिङ जा सकें, वहां जाकर अपने मवेशियों का व्यापार कर सकें तथा अपने हान भाइयों से पांच तरह का माल खरीद सकें। अगर भगवान इन तीनों चीजों को देने का वायदा कर लें, तो मैं ठण्डी रातों में भी मेढक की खाल ओढ़े बिना रह सकूंगा और मरूंगा नहीं। तब हम दोनों सुखपूर्वक जीवन बिता सकेंगे। "

पत्नी उछलकर घुड़सवार मेढक के घोड़े पर सवार हो गई। घोड़ा पलभर में हवा से बातें करने लगा। पत्नी को ऐसा लग रहा था मानो वह आकाश में उड़ रही हो। शीघ्र ही वह चमकदार सफेद बादलों को पीछे छोड़ गई और अन्त में दैवी भवन में जा पहुंची। दैवी भवन सुनहरे सूरज की तरह जगमगा रहा था। वह भवन के अन्दर चली गई और भगवान से प्रार्थना करने लगी। भगवान उसके सच्चे प्रेम से एकदम प्रभावित हो गए और उन्होंने उसकी प्रार्थना स्वीकार कर ली।

भगवान ने उससे कहा, "तुम्हारा प्रेम सच्चा है। इसलिए मैं तुम्हारी सभी मांगे पूरी कर दूंगा। लेकिन शर्त यह है कि पौ फटने से पहले ही तुम्हें घर-घर जाकर यह समाचार सब लोगों को बताना होगा। तुम्हारी प्रार्थना सिर्फ तभी पूरी हो सकेगी जब तुम पौ फटने से पहले यह खबर सब लोगों को सुना दो। इस इलाके में अब ज्यादा ठण्ड नहीं पड़ेगी और तुम्हारे पति को रात में मेढक की खाल नहीं ओढ़नी पड़ेगी।"

यह सुनकर पत्नी बहुत खुश हुई। उसने भगवान को धन्यवाद दिया और घोड़े पर सवार होकर तेजी से घाटी की ओर चल पड़ी। पौ फटने से पहले ही उसे घाटी के हर परिवार को यह खबर सुनानी थी।

लेकिन ज्योंही उसने घाटी में प्रवेश किया, उसकी मुलाकात अपने पिता से हो गई। वह अपने किले के फाटक पर खड़ा था। बेटी को घोड़े पर तेजी से आता देखकर वह जोर से चिल्लाया : "क्या बात है, बेटी? इतनी रात में तुम घोड़े पर कहां से आ रही हो?"

"हां बापू, आज एक बहुत बड़ी बात हो गई है!" लड़की ने कहा। "भगवान ने मुझसे एक बहुत बड़ा वायदा किया है। मैं घर-घर जाकर

यह सूचना सब लोगों को देने जा रही हूं।"

"इतनी जल्दी क्या है? पहले मुझे तो बताओ कि भगवान ने तुमसे क्या वायदा किया है?" मजिस्ट्रेट बोला।

"बापू, फिलहाल मेरे पास समय नहीं है। आपको फिर बताऊंगी।"

"यह नहीं हो सकता! मैं यहां का मजिस्ट्रेट हूं। यह बात तुम्हें पहले मुझे बतानी होगी।" लम्बे डग भरते हुए मजिस्ट्रेट ने सीढ़ियों से नीचे उतरकर बेटी के घोड़े की लगाम थाम ली।

बेटी पिता से फौरन पिण्ड छुड़ाना चाहती थी। इसलिए उसने सारी बात बता दी। "भगवान ने तीन चीजें देने का वायदा किया है," वह बोली। "पहली चीज यह है कि अब से अमीर और गरीब के बीच का फर्क खत्म हो जाएगा।"

यह सुनते ही मजिस्ट्रेट ने नाक-भौं सिकोड़ ली। "अगर अमीर और गरीब के बीच फर्क ही नहीं रहेगा, तो लोगों की हैसियत भी एक जैसी हो जाएगी। ऐसी हालत में तुम्हारी बहिनों को मैं दहेज कैसे दे सकूंगा?" उसने घोड़े की लगाम और मजबूती से पकड़ ली।

"दूसरी चीज यह है कि सरकारी अफसर आम लोगों का उत्पीड़न नहीं कर सकेंगे।"

"ठीक है, लेकिन अगर सरकारी अफसर आम लोगों का उत्पीड़न नहीं करेंगे तो हमारी सेवा-टहल कौन करेगा? हमारे मवेशियों की देखभाल कौन करेगा? हमारी जमीन कौन जोतेगा?" यह कहते-कहते मजिस्ट्रेट का गला रुंधने लगा। "तीसरी चीज कौन-सी है?"

"कोई ऐसा रास्ता निकाल लिया जाएगा जिसके जरिए हम लोग [illegible] जाकर अपने हान भाइयों को मवेशी बेच सकेंगे और उसके बदले नाना तरह का माल उनसे खरीद सकेंगे। बापू, अगर भगवान ने अपना वायदा पूरा कर दिया, तो यहां की हालत कितनी अच्छी हो जाएगी, यहां का मौसम कितना सुहावना हो जाएगा! और फिर..."

उसकी बात अभी पूरी भी न हो पाई थी कि मजिस्ट्रेट बरस पड़ा: "यह

सब बकवास है ! हम अपने मवेशियों के साथ काफी खुशहाल हैं। हान जाति के लोगों से माल खरीदने की हमें क्या जरूरत है? मुझे पक्का विश्वास है कि भगवान ने यह सब नहीं कहा। मुझे तुम्हारी बात पर जरा भी यकीन नहीं है। इसे लोगों को बताने की मैं तुम्हें हरगिज इजाजत नहीं दे सकता!"

"बापू, मुझे जाने दो! मैं यहां एक क्षण के लिए भी नहीं रुक सकती!" बेटी जोर से चिल्लाई। वह घोड़े पर चढ़ने की कोशिश करने लगी। लेकिन मजिस्ट्रेट ने घोड़े की लगाम कसकर पकड़ी हुई थी और वह उसे छोड़ने को कतई तैयार नहीं था। वह बैचेन हो उठी और पिता से बहस करती रही।

उसी समय मुर्गे ने बांग दी। बेटी उछलकर घोड़े पर सवार हो गई। वह घोड़े को एड़ मारकर तेजी से भाग जाना चाहती थी। पर मजिस्ट्रेट ने लगाम नहीं छोड़ी। यह हांफने लगा और खीझकर बोला : "क्या तुम बौरा गई हो? क्या तुम यह चाहती हो कि तुम्हारी बहिनों की शादी बिना दहेज के हो? क्या तुम यह चाहती हो कि तुम्हारे पिता की इज्जत-आबरू धूल में मिल जाए? क्या तुम यह चाहती हो कि तुम्हारे मां-बाप अपना काम खुद करें? अगर भगवान ने यह सब कर दिया, तो हमारे मवेशियों की देखभाल आखिर कौन करेगा? हमारी जमीन को आखिर कौन जोतेगा? क्या तुम्हारी अक्ल बिलकुल पथरा गई है?"

बेटी नहीं समझ पाई कि वह क्या करे। मुर्गा दूसरी बार बांग दे चुका था और वह अब भी अपने पिता से संघर्ष कर रही थी।

दुखी होकर उसने घोड़े की पीठ पर जोर से चाबुक मारा। घोड़ा मजिस्ट्रेट को जमीन पर पटककर हवा से बातें करने लगा। अभी वह घाटी के पहले ही घर में पहुंच पाई थी कि मुर्गे ने तीसरी बार बांग दे दी। पौ फटने से पहले वह भगवान का सन्देश सिर्फ कुछ ही परिवारों तक पहुंचा पाई।

घुड़सवार मेढक की पत्नी का दिल बैठने लगा। उजाला हो चुका था।

वह अपने मिशन में सफल नहीं हो पाई थी। जल्दी-जल्दी घर लौटने के सिवाय अब वह कर ही क्या सकती थी!

घर लौटी तो देखा, सास-ससुर उसके नौजवान पति की लाश के पास बैठे विलाप कर रहे हैं। सास लगातार आंसू बहा रही थी और भगवान से उसकी सद्गति के लिए प्रार्थना कर रही थी।

हाय, उसकी सारी मेहनत बेकार गई थी! वह अपने प्रियतम की लाश पर गिर पड़ी और फूट-फूट कर रोने लगी। देरी से घाटी में पहुंचने के लिए वह रह-रहकर अपने को और अपने पिता को दोष देने लगी।

मेढक घुड़सवार की लाश पहाड़ पर एक चट्टान के नीचे दफना दी गई। हर रोज सांझ होने पर उसकी पत्नी समाधि के पास जाती और जोर-जोर से विलाप करती। ऐसा करते-करते एक दिन वह भी चट्टान में वदल गई। उसके बाद घुड़सवार मेढक की पत्नी के रोने की आवाज किसी ने नहीं सुनी।

यह चट्टान उसकी समाधि के पास आज भी खड़ी है। दूर से देखने में ऐसा लगता है मानो बिखरे बालों वाली कोई युवती प्रार्थना कर रही हो। वह अपने पति की समाधि पर हमेशा प्रार्थना करती रहेगी।

काठ का घोड़ा

(उइगुर जाति की लोककथा)

एक समय की बात है। एक बढ़ई और लोहार के बीच बहस छिड़ गई।

"मैं तुमसे अच्छा कारीगर हूं!" बढ़ई बोला।

"तुम यह कैसे कहते हो? दरअसल मैं तुमसे लाख गुना अच्छा कारीगर हूं!" लोहार ने दावा किया।

दोनों आपस में काफी देर बहस करते रहे। लेकिन किसी नतीजे पर नहीं पहुंच पाए। अन्त में यह मामला सुलझाने के लिए दोनों बादशाह के पास जा पहुंचे।

बादशाह ने उनसे पूछा, "तुम लोग यहां किसलिए आए हो?"

"मैं बढ़ई हूं," उनमें से एक बोला, "दुनिया में कोई बढ़ई ऐसा नहीं जो मेरी तरह बढ़िया चीजें बना सके। लेकिन यह लोहार मुझसे अच्छा कारीगर होने का दावा कर रहा है।"

"जो भी मेरी कारीगरी देखता है, प्रशंसा किए बगैर नहीं रह सकता," लोहार बोला। "फिर भी यह बढ़ई कहता है कि इसकी कारीगरी मुझसे बेहतर है!"

फिर दोनों कारीगर एक साथ बोले: "बादशाह सलामत, अब आप

ही फैसला कीजिए कि हम दोनों में कौन बेहतर कारीगर है ?"

उनकी बात सुनकर बादशाह भी दुविधा में पड़ गया। बोला : "इस विवाद का फैसला मैं एकदम कैसे कर सकता हूं ? मैंने तो तुम दोनों का हुनर अभी देखा तक नहीं। जाओ, दस दिन के अन्दर दोनों कोई अच्छी-सी चीज बनाकर मेरे पास ले आओ। तब मैं तुम्हारा फैसला कर सकूंगा।

दोनों वहां से फौरन चले गए और अपने-अपने काम में जुट गए। दस दिन बाद दोनों बादशाह के सामने फिर हाजिर हो गए। लोहार लोहे की एक बड़ी-सी मछली बनाकर लाया था।

"इसकी क्या विशेषता है ?" बादशाह ने पूछा।

"मेरी इस मछली पर अगर अनाज के एक लाख बोरे भी लाद दिए जाएंगे, तो भी यह समुद्र में तैरती रहेगी और डूबेगी नहीं !"

बादशाह को उसकी बात पर यकीन नहीं हुआ। यह मूर्ख अवश्य गलत साबित होगा, उसने सोचा। लोहे की यह मछली इतने भारी बोझ के साथ भला कैसे तैर सकती है ? फिर भी उसने अपने सेवकों को आज्ञा दी कि वे एक लाख अनाज के बोरे मछली पर लादकर उसे समुद्र में छोड़ दें। फिर देखेंगे कि वह तैर सकती है या नहीं। ताज्जुब की बात यह थी कि इतना बड़ा बोझा उठाने के बाद भी मछली डूबी नहीं और बड़ी कुशलता के साथ तेजी से आगे बढ़ने लगी। यह देखकर सब लोग चकित रह गए। बादशाह ने लोहार की भूरि-भूरि प्रशंसा की। "हम तुम्हें अपना अफसर बनाना चाहते हैं," बादशाह बोला। "आज से तुम्हें अपने मुहल्ले का प्रधान नियुक्त किया जाता है।"

बढ़ई काठ का घोड़ा लाया था। उसे देखकर बादशाह को बड़ी निराशा हुई। "यह तो सिर्फ बच्चों का खिलौना मालूम होता है," वह बोला। "लोहार की मछली से भला इसका क्या मुकाबला ?"

"बादशाह सलामत, मैं दावे से कह सकता हूं कि मेरा काठ का घोड़ा लोहे की मछली से लाख गुना बेहतर है !" बढ़ई ने कहा। "क्या आपने इसकी छब्बीस चाबियां देखी हैं ? पहली चाबी घुमाने पर यह उड़ने

लगता है। दूसरी चाबी घुमाने पर यह पहले से ज्यादा तेजी से उड़ने लगता है। और इस तरह जब छब्बीसवीं चाबी घुमाई जाती है, तो यह पक्षी से भी ज्यादा तेजी से उड़ने लगता है। आप इस घोड़े पर सवार होकर आसानी से पूरी दुनिया की यात्रा कर सकते हैं।"

अभी वे लोग बातें ही कर रहे थे कि बादशाह का छोटा लड़का वहां आ पहुंचा। जब उसने यह सुना कि काठ का घोड़ा हवा में उड़ सकता है, तो उसने सोचा, कितना अच्छा हो अगर इस घोड़े पर सवार होकर आकाश में उड़ा जाए और पूरी दुनिया की सैर की जाए! उसने अपने पिता से काठ के घोड़े में उड़ने की इजाजत देने का अनुरोध किया।

"हरगिज नहीं!" बादशाह बोला। "कौन जानता है कि यह घोड़ा सचमुच उड़ सकता है! अगर यह जमीन पर गिर पड़ा, तो क्या होगा?"

"डरने की कोई बात नहीं, बन्दापरवर। यह नीचे हरगिज नहीं गिरेगा!" बढ़ई ने विश्वास दिलाते हुए कहा।

छोटा शहजादा पिता से बार-बार आग्रह करने लगा। सबसे छोटा होने के कारण वह पिता का सबसे लाड़ला बेटा था। बादशाह ने आज तक उसकी कोई मांग कभी अस्वीकार नहीं की थी। अन्त में बादशाह ने मंजूरी दे दी और कहा, "ठीक है, तुम इसकी सवारी कर सकते हो। लेकिन घोड़े को धीरे-धीरे उड़ाना। पहली चाबी के सिवाय किसी और चाबी को न घुमाना।"

छोटे शहजादे ने वायदा किया कि वह ऐसा ही करेगा। घोड़े पर चढ़कर उसने पहली चाबी घुमा दी। घोड़ा सचमुच हवा में उड़ने लगा। शहजादा आसमान में पहुंच गया। पहाड़, नदियां, पेड़-पौधे, शहर और लोग नीचे रह गए। हर चीज उससे दूर होती जा रही थी। वह जितनी ऊंची उड़ान भरता जाता, धरती की चीजें भी उससे उतनी ही दूर होती जातीं। उड़ने में उसे बड़ा आनन्द आ रहा था। जोश में आकर उसने एक के बाद एक सभी चाबियों को घुमा दिया। घोड़े की रफ्तार बढ़ती गई। अनगिनत पेड़-पौधे, गांव और शहर पीछे छूटते गए।

जब शहजादा वहुत दूर निकल गया, तो उसे भूख सताने लगी। भाग्यवश उसे अपने ठीक नीचे एक शहर दिखाई दिया। उसने काठ के घोड़े की सब चाबियों को एक के बाद एक बन्द कर दिया। उसकी रफ्तार धीरे-धीरे कम होती गई और वह सकुशल नीचे उतर गया। छोटे शहजादे ने शहर की एक सराय में भरपेट भोजन किया और कुछ समय के लिए वहीं ठहर गया। अपनी इस यात्रा से वह बहुत खुश था। पलक मारते ही वह एक ऐसे शहर में आ गया था जिसे उसने पहले कभी नहीं देखा था।

दूसरे दिन वह सड़क पर घूमने निकल पड़ा। कुछ मोड़ पार करने के बाद वह एक मैदान में जा पहुंचा। वहां उसने देखा, लोगों की भीड़ आकाश की ओर देख रही है।

वहां जरूर कोई न कोई अजीबोगरीब चीज होगी, उसने सोचा। वह भीड़ के पास जा पहुंचा और बाकी लोगों की ही तरह आसमान की ओर देखने लगा। पर आसमान में उसे कुछ नहीं दिखाई दिया।

"तुम लोग आकाश में क्या देख रहे हो?" शहजादे ने पास खड़े एक आदमी से पूछा।

आदमी ने उसकी तरफ गौर से देखा और बोला: "हमारे बादशाह की एक लड़की है। वह बहुत सुन्दर है। दुनिया में इतनी सुन्दर लड़की शायद ही कहीं हो। बादशाह अपनी लड़की को बेहद प्यार करता है और यह नहीं चाहता था कि उसकी तरफ कोई नजर उठाकर भी देखे। जब वह राजमहल में थी, तो बादशाह को हमेशा उसी की चिन्ता लगी रहती थी। वह एक क्षण के लिए भी चैन से नहीं रह पाता था। अब उसने अपनी लड़की के लिए आकाश में एक महल बनवा दिया है। लड़की वहां अकेली रहती है। बादशाह अपना काम खत्म करने के बाद हर रोज बेटी से मिलने ऊपर जाता है। वह कुछ देर पहले आकाश महल में गया है और जल्दी ही लौटने वाला है। इसलिए लोग आकाश की ओर देख रहे हैं।"

यह सब सुनकर शहजादे को बड़ा अचम्भा हुआ। "आकाश में

महल कैसे बनाया जा सकता है ?" उसने पूछा।

"इसे एक फरिश्ते ने बनाया है। सिर्फ बादशाह ही वहां जा सकता है।"

शहजादे के दिमाग में यह अनोखी कहानी लगातार घूमती रही। उस रात वह अपने काठ के घोड़े पर सवार होकर आकाश में जा पहुंचा। वहां सचमुच एक विशाल महल मौजूद था। दरवाजे पर पहुंचकर वह घोड़े से उतरा और अन्दर चला गया।

शहजादी ने देखा, कोई अन्दर आ रहा है। सोचा, उसके पिता होंगे। जब उसे पता चला कि पिता नहीं हैं, तो मन में सोचने लगी : यह जरूर कोई फरिश्ता होगा, मनुष्य तो यहां पहुंच ही नहीं सकता। शहजादी उसका स्वागत-सत्कार करने के लिए उठ खड़ी हुई।

शहजादी नौजवान शहजादे को दूर से भी ज्यादा खूबसूरत लगी। उसे देखते ही वह उस पर मोहित हो गया। "अगर यह मुझसे शादी कर ले, तो दुनिया में मुझसे ज्यादा खुशकिस्मत कोई नहीं होगा!" उसने मन ही मन सोचा।

उधर शहजादी भी उस खूबसूरत नौजवान शहजादे की तरफ आकर्षित होती जा रही थी। उसके मन में भी शहजादे के प्रति प्यार अंकुरित होने लगा। "मेरे पिता ने मुझे न जाने क्यों ऐसी जगह बन्द कर दिया है जहां मैं किसी से नहीं मिल सकती, किसी से बात नहीं कर सकती!" उसने मन ही मन कहा। "मैं भी चाहती हूं कि कोई मेरा चाहने वाला हो, कोई मुझसे प्यार करे!"

अनजाने में ही वे दोनों प्रेमसूत्र में बंध हो गए।

पौ फटने से पहले शहजादा सराय में लौट आया। सांझ होने पर बादशाह अपनी लड़की से मिलने आकाश महल में जा पहुंचा।

जब भी बादशाह शहजादी से मिलने जाता, उसका वजन जरूर नापता था। वह जानता था कि पुरुष-संसर्ग के बाद स्त्री का वजन बढ़ जाता है। उस दिन जब उसने शहजादी का वजन नापा, तो उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा। शहजादी का वजन एक किलो बढ़ चुका था। वह क्रोध से आगबबूला हो उठा। "जरूर दाल में कुछ काला है!" उसने सोचा। इस बात का पता लगाने के लिए वह फौरन अपने महल में लौट आया।

[illegible] ने जब बादशाह को बहुत परेशान देखा, तो कारण पूछने लगे। बादशाह ने सारी बात बता दी। "शहजादी से मिलने मेरे अलावा और कौन आ सकता है?" वह बोला। "जैसे भी हो, इस रहस्य का पता लगाने

का कोई तरीका खोज निकालना चाहिए।"

"हमारे पास चार वीर योद्धा हैं," मंत्रियों ने कहा। "आप इन चारों को अपने साथ आकाश महल में ले जाइए और चारों कोनों पर तैनात कर दीजिए। अगर किसी आदमी ने अन्दर जाने की कोशिश की, तो योद्धा पकड़ लेंगे।"

बादशाह को यह सलाह जंच गई। रात होने पर वह चारों योद्धाओं के साथ आकाश महल की ओर चल पड़ा। महल की रखवाली करने के लिए उसने चारों को चार कोनों पर तैनात कर दिया। सारा इन्तजाम पक्का करने के वाद राजा धरती पर लौट आया।

लेकिन मजे की बात यह हुई कि उसके चारों योद्धा खड़े-खड़े गहरी नींद में सो गए। नौजवान शहजादे ने पूरी रात आकाश महल में बिताई। दूसरे दिन वादशाह ने शहजादी का वजन लिया, तो वह पहले से चार किलो ज्यादा निकला। राजा क्रोध से तमतमा उठा।

कुछ ही समय में इस घटना की चर्चा घर-घर में होने लगी। बादशाह इतना शरमिन्दा हो गया कि लोगों के सामने जाने में भी कतराने लगा। उसने अपने एक मंत्री को बुलवाया और उससे राय पूछी। मंत्री ने राय दी कि वह आकाश महल में शहजादी के पलंग पर और कुर्सियों पर गीला रोगन लगवा दे और अगले दिन पूरे शहर में उस आदमी की खोज की जाए जिसके कपड़ों पर यह रोगन लगा हो। इस तरह अपराधी वचकर नहीं निकल सकेगा।

बादशाह सहमत हो गया। उसने शहजादी के पलंग और बाकी फरनीचर पर गीला रोगन लगवा दिया। उस रात शहजादा फिर आकाश महल में गया। लौटते समय उसने देखा, उसके कपड़ों में रोगन लग गया है। उसने अपने कपड़े उतारकर नीचे फेंक दिए। कपड़ों पर कुछ रत्न भी जड़े हुए थे। लेकिन शहजादे को उन्हें फेंकने का जरा भी दुख न था। शहजादी के प्यार के सामने भला इन रत्नों का क्या मूल्य था!

उसी शहर में एक गरीब बूढ़ा आदमी भी रहता था। वह हर रोज

पौ फटने से पहले उठ जाता और सुबह की नमाज के लिए घर-घर जाकर लोगों को जगाता। उस दिन जब वह उठा, तो क्या देखता है कि आकाश से कोई चीज नीचे गिर रही है। "ये कीमती कपड़े जरूर अल्लाह ने ही मेरे लिए भेजे हैं, क्योंकि मैंने अपनी सारी जिन्दगी उसी की खिदमत में गुजार दी है," उसने सोचा और कपड़ों को उठाकर अपने घर ले गया।

शाम को शहर के सभी लोग नमाज पढ़ने मस्जिद में जा पहुंचे। भीड़ में बादशाह के आदमी भी थे। बूढ़ा आदमी अल्लाह के भेजे कपड़े पहनकर खुशी-खुशी नमाज पढ़ने आया था। उसे क्या पता था कि आज उसकी जिन्दगी का सबसे बुरा दिन है। नमाज के बाद उसे गिरफ्तार कर लिया गया।

"तुम्हारे कपड़ों में यह रोगन कैसे लगा?" बादशाह ने कड़कती आवाज में पूछा। "मैं नहीं जानता, गरीबपरवर! ये कपड़े तो मुझे सड़क पर इसी हालत में पड़े मिले हैं!"

बादशाह को उसकी बात पर विश्वास नहीं हुआ। इसलिए उसे जेल में डाल दिया गया। अपराध कबूल कराने के लिए उसे तरह-तरह की यातनाएं दी गईं। अन्त में उसे फांसी लगाने के लिए रस्सी से बांधकर एक मैदान में ले जाया गया।

यह उस शहर की छोटी-मोटी घटना नहीं थी। सब लोग यह देखने को उत्सुक थे कि शहजादी का प्रेमी आखिर कैसा है। जब उन्होंने उस बूढ़े आदमी के गले में फांसी का फन्दा देखा, तो उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ। पूरे शहर में खलबली मच गई। हर आदमी का ख्याल था कि इस बूढ़े आदमी के साथ अन्याय हो रहा है।

[illegible] जब यह खबर नौजवान शहजादे के पास पहुंची तो उसे [illegible] हुआ। काठ के घोड़े को बगल में दबाकर वह तेजी से मैदान की ओर दौड़ पड़ा। बूढ़े आदमी को फांसी लगने ही वाली थी। "ठहरो!" शहजादा जोर से चिल्लाया। "इसे फांसी मत दो! यह बेगुनाह है। [illegible] में शहजादी से मिलने यह नहीं मैं गया था। रोगन लगे

कपड़े इसके नहीं मेरे हैं। चाहो, तो मुझे फांसी पर चढ़ा दो! पर इस बेकसूर बूढ़े आदमी को फौरन रिहा कर दो!"

जल्लाद एकदम रुक गए। उन्होंने बादशाह के पास खबर भिजवा दी: "एक नौजवान अपने को अपराधी बता रहा है, अपना जुर्म कबूल कर रहा है। बूढ़े आदमी और नौजवान इन दोनों में से किसे फांसी दी जाए?"

"उस नौजवान को फांसी दे दो जो अपने को अपराधी बता रहा है!" बादशाह ने आज्ञा दे दी।

जल्लादों ने बूढ़े आदमी को रिहा कर दिया। पर ज्योंही वे नौजवान शहजादे को बन्दी बनाने के लिए उसकी तरफ बढ़े, वह कूदकर काठ के घोड़े पर सवार हो गया और उसकी चाबियां घुमाता हुआ आकाश में उड़ गया। सब लोग देखते रह गए। जब बादशाह ने देखा कि वह नौजवान इतने लोगों को चकमा देकर भाग गया है, तो वह गश खाकर गिर पड़ा।

नौजवान शहजादा आकाश महल में जा पहुंचा और शहजादी से बोला, "हमारा प्रेम दिन-ब-दिन बढ़ता जा रहा है। अब हम दोनों के लिए एक-दूसरे से अलग रहना असम्भव हो गया है। तुम्हारे पिता को मेरे बारे में सब कुछ पता चल गया है। इस लिए वे मुझे अपने शहर में नहीं रहने देंगे। अब सिर्फ एक ही उपाय रह गया है: तुम हमारे घर चलो। मेरे माता-पिता तुम्हें देखकर बहुत खुश होंगे!"

यह सुनकर शहजादी ने कहा, "मैंने अपनी जिन्दगी तुम्हें सौंप दी है। जहां तुम जाओगे, वहां मैं भी जाऊंगी!"

दोनों आकाश महल से बाहर निकले और काठ के घोड़े पर सवार होकर तेजी से उड़ चले। जब वे काफी लम्बा रास्ता पार कर चुके, तो शहजादी अचानक चिल्लाई: "मैं अपने दो मूल्यवान रत्न महल में ही भूल आई हूं। उन्हें मां ने मुझे बचपन में दिया था और कहा था कि शादी के बाद मैं उन्हें अपने सास-ससुर को भेंट कर दूं। इन रत्नों के

बिना मैं तुम्हारे साथ कैसे जा सकती हूं ?"

"हम लोग अब आकाश महल से बहुत दूर आ गए हैं," शहजादे ने कहा। "उन रत्नों को भूल जाओ।"

"ऐसा कैसे हो सकता है ! मैं उन रत्नों के बिना आगे नहीं जा सकती। अगर सास-ससुर के पास खाली हाथ गई, तो क्या लोग मेरी खिल्ली नहीं उड़ाएंगे ?"

शहजादे के सामने उसकी इच्छा पूरी करने के सिवाय और कोई चारा नहीं रह गया। उसने चाबियों को बन्द किया और नीचे उतर गया। "मैं यहां तुम्हारा इन्तजार करूंगा," वह बोला। "काठ के घोड़े पर सवार होकर जितनी जल्दी हो सके रत्न लेकर लौट आओ।"

शहजादी घोड़े पर चढ़ गई और महल की ओर उड़ने लगी।

उधर जब बादशाह ने नौजवान को आसमान में उड़ते देखा, तो वह बेहोश हो गया। जब होश में आया, तो सबसे पहले उसे अपनी लड़की का ही ख्याल आया। यह देखने के लिए कि उसकी बेटी नौजवान के साथ गई कि नहीं, वह आकाश महल में जा पहुंचा। वहां लड़की नहीं थी। अभी वह सोच ही रहा था कि क्या करे, अचानक शहजादी लौटती दिखाई दी। वह पलंग के नीचे छिप गया। ज्योंही शहजादी कमरे में आई, बादशाह ने उसे पकड़ लिया। उसे अपने महल में ले जाकर उसने एक खाली कमरे में वन्द कर दिया। वह काठ के घोड़े को भी अपने साथ ले गया। लेकिन यह नहीं समझ पाया कि उसे कैसे इस्तेमाल किया जाता है। इसलिए उसे भी बादशाह ने महल के एक अन्य कमरे में डाल दिया।

पहले किसी और मुल्क के बादशाह ने भी शहजादी की सुन्दरता के बारे में सुना था। वह अपने लड़के की शादी शहजादी से करना चाहता था। शादी की बात पक्की करने के लिए उसने अपना आदमी शहजादी के पिता के पास भेजा था। पर बादशाह ने इनकार कर दिया था। अब तो शहजादी बिलकुल बदनाम हो चुकी थी और अच्छे खानदान का कोई नौजवान उससे शादी करने को तैयार न था। इसलिए बादशाह उसकी

शादी एक दूर-दराज मुल्क के शहज़ादे से करना चाहता था। जब उस मुल्क के बादशाह की ओर से विवाह का प्रस्ताव आया, तो लड़की के पिता ने उत्तर में लिखा :

"मेरी बेटी विवाह योग्य हो चुकी है। मैं उसकी शादी आपके बेटे से करने के लिए तैयार हूं। आज से हम दोनों एक-दूसरे के रिश्तेदार बन गए हैं। हम दोनों के मुल्कों के बीच मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध हमेशा कायम रहेंगे। मैं आशा करता हूं कि आपका बेटा हमारे यहां आएगा और मेरी बेटी को ब्याह ले जाएगा।"

बादशाह ने अपनी लड़की के साथ कैसा व्यवहार किया, इसकी चर्चा किए बिना फिलहाल हम आपको नौजवान शहज़ादे के पास ले चलते हैं। शहज़ादा बहुत देर तक अपनी प्रेमिका का इन्तजार करता रहा। उसने चारों तरफ नजर दौड़ाई तो देखा कि वह एक विशाल रेगिस्तान में खड़ा है। चारों तरफ बालू के टीले दिखाई दे रहे थे। जब आंधी चलती, तो बालू के ढेर एक जगह से दूसरी जगह जा पहुंचते। सूरज की किरणें आग उगल रही थीं। हरियाली का कहीं नामोनिशान भी न था। भूख के मारे उसकी आंतें उलटने लगीं और प्यास के मारे गला सूखने लगा। चारों तरफ तलाश करने पर भी उसे कहीं एक भी बूंद पानी नहीं मिला। उसने सोचा, किसी टीले पर चढ़कर शायद कहीं पानी नजर आ जाए। वह रेत के एक ऊंचे-से टीले पर चढ़ने की कोशिश करने लगा। वह जैसे ही ऊपर चढ़ने की कोशिश करता, पांव बालू में धंस जाते। बड़ी मुश्किल से वह टीले पर चढ़ पाया। ऊपर पहुंचने पर उसने सिर उठाकर चारों तरफ देखा। पर उसके पैर के नीचे की बालू खिसकने लगी, मानो वसन्त में बरफ का ढेर पिघल रहा हो। मजबूती से पांव टिकाने के बाद, उसे पास ही एक हराभरा बगीचा दिखाई दिया। उसमें तरह-तरह के पेड़ पके हुए फलों से लदे थे। लाल और हरे रंग के बेशुमार फल डालियों से चिपके हुए थे। उन्हें देखकर शहज़ादे के मुंह में पानी आ गया। वह बगीचे की ओर दौड़ पड़ा। उसने कुछ आड़ू तोड़कर खा लिए। वे बड़े सुगन्धित,

गोल और रसभरे थे। उसने भरपेट आड़ू खाए और एक पेड़ की छांह में सो गया।

जब जाग खुली और उसने अपने चेहरे पर हाथ फेरा, तो हक्का-बक्का रह गया। उसके चेहरे पर घनी दाढ़ी और मूंछें उग आई थीं। वह नहीं समझ पाया कि यह परिवर्तन कैसे हुआ। इससे पहले उसके चेहरे पर दाढ़ी नहीं थी। वह काफी देर तक इसके बारे में सोचता रहा। तब उसे फिर भूख लग आई। इस बार उसे आड़ू तोड़ने का साहस न हुआ। आड़ुओं पर उसे शक होने लगा। नाशपाती के पेड़ के पास जाकर उसने एक डाली से कुछ नाशपातियां तोड़ लीं। नाशपातियां खूब बड़ी-बड़ी, पतले छिलके वाली और जायकेदार थीं। वे उसे इतनी स्वादिष्ट लगीं कि एक के बाद एक खाता ही चला गया। भरपेट नाशपाती खाने के बाद वह फिर सो गया।

अंधेरा होने से कुछ पहले उसकी नींद टूट गई। पर ज्योंही उसने अंगड़ाई ली, उसका सिर पेड़ के तने से जा टकराया। उसे अपना सिर कुछ भारी-सा मालूम होने लगा।

डरते-डरते उसने अपने सिर पर हाथ फेरा। उस पर दो मोटे-मोटे सींग उग आए थे। दाढ़ी भी बरफ की तरह सफेद हो चुकी थी और एक फुट से ज्यादा लम्बी हो गई थी। उसे अपनी शकल-सूरत की कल्पनामात्र से डर महसूस होने लगा। "जब शहजादी लौटकर आएगी, तो मुझे कैसे पहचान पाएगी? अब वह मुझे हरगिज प्यार नहीं करेगी। ओह, अब मेरा क्या होगा?" वह अपने बारे में जितना ज्यादा सोचता जाता, उसकी घबराहट भी उतनी ही बढ़ती जाती। वह फूट-फूटकर रोने लगा। जब काफी देर हो चुकी, तो थकान के मारे उसकी आंख लग गई।

सपने में एक बूढ़ा बाबा उसके पास आया और उसके सिर पर हाथ फेरता हुआ बोला: "मेरे बच्चे, तुम इतने दुखी क्यों हो?"

नादान शहजादे ने अपनी दुखभरी कहानी उसे सुना दी।

"चिन्ता न करो," बूढ़े बाबा ने कहा। "पेड़ों के नीचे से कुछ सूखे

आड़ुओं और नाशपातियों को चुनकर उन्हें खा लो। इससे तुम्हारी दाढ़ी-मूंछें और सींग गायब हो जाएंगे। मेरे बच्चे, इस जगह ज्यादा देर न ठहरो। यहां राक्षस रहते हैं। अभी वे सो रहे हैं। अगर जाग जाएंगे, तो तुम्हें जिन्दा नहीं छोड़ेंगे।"

नौजवान शहजादा हैरान होकर बूढ़े बाबा की बातें सुन रहा था। अचानक उसकी नींद खुल गई। वह आंखें मलता हुआ उठ बैठा। चन्द्रमा आधे आकाश में पहुंच चुका था। ठण्डी हवा के थपेड़े शरीर में सिरहन पैदा कर रहे थे। बालू बिलकुल ठण्डी पड़ चुकी थी। बूढ़े बाबा के आदेशानुसार उसने एक मुट्ठी में सूखे आड़ू भर लिए और दूसरी मुट्ठी में सूखी नाशपातियां। इन फलों को खाने के बाद उसने अपने सिर और चेहरे पर हाथ फेरा। दाढ़ी-मूंछें और सींग सब नदारद हो चुके थे। कुछ देर सोचने के बाद उसने विलो के पेड़ की कुछ टहनियां तोड़ लीं और उनसे एक टोकरी बना डाली। फिर ताजे और सूखे दोनों तरह के आड़ुओं और नाशपातियों को टोकरी में भरकर फौरन बगीचे से बाहर चला गया।

शहजादा घर लौटना चाहता था। लेकिन यह नहीं जानता था कि उसका घर किस दिशा में है। उसने सोचा, मुझे इसके बारे में ज्यादा परेशान नहीं होना चाहिए और जिस तरफ रास्ता मिले चल देना चाहिए। वह जिधर भी जाता, उसे रेत ही रेत दिखाई देती। भूख लगती, तो सूखे आड़ू और नाशपाती खा लेता। थकान महसूस होती, तो जमीन पर सो जाता और उठते ही फिर चल पड़ता। इस तरह वह सात दिन लगातार चलता रहा। इस दौरान उसे परिन्दा भी नजर नहीं आया, मनुष्य की तो बात ही दूर थी। अन्त में उसे एक सड़क मिल गई। उसने राहत की सांस ली। वह सड़क के किनारे बैठ गया।

सबसे पहले उसकी नजर गधे पर सवार एक आदमी पर पड़ी। उसने राजकुमार को बताया कि अगर वह पूरब की ओर जाएगा तो अपने घर पहुंच सकता है और अगर पश्चिम की ओर जाएगा, तो शहजादी के शहर में पहुंच सकता है। "शहजादी और काठ का घोड़ा दोनों ही खो

चुके हैं। उन्हें ढूंढ़े बिना घर जाकर क्या करूंगा ?" उसने सोचा। इसलिए वह पश्चिम की ओर चल पड़ा।

रास्ते में उसे घुड़सवारों का एक दल मिला। वे लोग हथियारों से लैस थे। उनके घोड़े भी खूब सजेधजे हुए थे। पूरा काफिला बहुत शानदार मालूम हो रहा था।

घुड़सवारों के बीचोंबीच एक शाही बग्घी चल रही थी। उसकी खिड़कियों पर शीशे लगे हुए थे। बग्घी को सुनहरे डिजायनों से सजाया गया था। उसे चार अच्छी नस्ल के घोड़े खींच रहे थे। ये घोड़े रेशम और साटन के रंगीन वस्त्रों से सुसज्जित थे। बग्घी को देखने के लिए शहजादा सड़क के एक तरफ हट गया। अचानक बग्घी रुकी और एक आदमी ने उसके पास आकर पूछा कि वह क्या चीज बेच रहा है।

"मेरे पास बेचने के लिए कुछ नहीं है!" उसने जवाब दिया।

आदमी ने उसकी टोकरी की तरफ इशारा करते हुए कहा: "क्या तुम्हारे पास आड़ू और नाशपातियां नहीं हैं? हमारा शहजादा पूरे दिन यात्रा करके थक गया है। वह भूखा-प्यासा है। टोकरी के कुछ फल हमें क्यों नहीं बेच देते?"

"ये फल बिकाऊ नहीं हैं। ये तो मेरे अपने खाने के लिए हैं। रास्ते में क्या तुम्हें कहीं घास का तिनका भी नजर आया? तुम्हीं बताओ, अगर ये फल तुम्हें बेच दूंगा, तो खुद क्या खाऊंगा?"

बग्घी में बैठे शहजादे ने बौखलाकर अपने सेवक से कहा कि वह फल लेकर जल्दी आए। फिर उसने एक अन्य सेवक को सोने की अशरफी देते हुए कहा: "इन फलों के लिए नौजवान को मुंहमांगा दाम दे दो।"

नौजवान शहजादे ने सेवक से पूछा, "तुम लोग कहां जा रहे हो?"

"हमारा शहजादा उस शहर की शहजादी से शादी करने जा रहा है।" सेवक ने पश्चिम की ओर इशारा करते हुए कहा।

यह सुनकर नौजवान शहजादे को बड़ा धक्का लगा। पर उसने संयम

रखते हुए सेवक से सारी बात विस्तार से पूछी। अब उसे पक्का यकीन हो गया कि बग्घी में बैठा शहज़ादा उसी की प्रेमिका से शादी करने जा रहा है। उसने सोने की अशरफी ले ली और दो लाल-लाल ताजे आड़ू और दो बड़ी-बड़ी ताजा नाशपातियां सेवक को दे दीं। बग्घी में बैठा शहज़ादा बहुत खुश हुआ और सारे फल फौरन खा गया।

घुड़सवारों का काफिला सड़क पर आगे बढ़ता जा रहा था। बग्घी के अन्दर शहज़ादा गहरी नींद में सो रहा था। बग्घी तेजी से आगे बढ़ती जा रही थी। जैसे ही शहज़ादे की जाग खुली, वह घबड़ाकर जोर-जोर से रोने लगा। मंत्री और सेवक फौरन बग्घी के पास जा पहुंचे। पर शहज़ादा कहीं नजर न आया। बग्घी के अन्दर दो सींगों वाला एक अजीब-सा जानवर बैठा था, जिसके चेहरे पर सफेद दाढ़ी-मूंछें उगी हुई थीं। घुड़सवारों का काफिला रुक गया और फल बेचने वाले नौजवान का इन्तजार करने लगा।

कुछ देर बाद नौजवान शहज़ादा भी वहां पहुंच गया। मंत्रियों ने उसे रोककर पूछा, "तुमने हमारे शहज़ादे को कैसे फल बेचे हैं?"

"क्यों, क्या बात है? मेरे फल तो बिलकुल ठीक हैं। मैंने उन्हें खुद तोड़ा है!"

"फिर उन्हें खाने के बाद हमारे शहज़ादे के चेहरे पर दाढ़ी-मूंछें और सिर पर सींग कैसे उग आए हैं?"

बग्घी के अन्दर के शहज़ादे को इस हालत में देखकर नौजवान शहज़ादा मन ही मन बहुत खुश हुआ। "लेकिन मैं भी तो ये फल हर रोज खा रहा हूं। आखिर मेरे साथ ऐसा क्यों नहीं हुआ?" अपनी खुशी छिपाता हुआ वह बोला।

मंत्री उसकी बात का जवाब नहीं दे पाए।

नौजवान शहज़ादे ने ऐसा दिखाया मानो वह कुछ सोच रहा हो। फिर इस तरह बोला जैसे यह बात उसे अभी-अभी सूझी हो: "तुम्हारा शहज़ादा फल खाने के फौरन बाद क्या सो तो नहीं गया था?"

"क्यों नहीं, फल खाने के वाद वह सोया जरूर था!" मंत्रियों ने उत्तर दिया।

"फिर तुम लोग किसी को दोषी नहीं ठहरा सकते। तुम यहां दूसरी जगह से आए हो। इसलिए शायद यहां के नियमों को नहीं जानते। यहां खाने के बाद फौरन सोने की मनाही है। अगर कोई ऐसा करता है, तो उसके चेहरे पर दाढ़ी-मूंछें निकल आती हैं और सिर पर सींग उग आते हैं।"

यह सुनकर सभी मंत्री एक-दूसरे की ओर भय और निराशा के साथ देखने लगे। उन लोगों का ख्याल था कि दोष शहजादे का ही है, क्योंकि वह लालची होने के साथ-साथ आलसी भी है। लेकिन अब क्या किया जाए?

वे लोग इस मसले पर काफी देर तक बहस करते रहे। जाहिर था कि शहजादी अब ऐसे शहजादे से विवाह नहीं करेगी। "अब हमारी भलाई इसी में है कि फौरन घर लौट जाएं," एक मंत्री ने सुझाव दिया। "अगर हम लोग शहजादी के शहर में चले भी गए, तो वे लोग हमें बाहर खदेड़ देंगे।"

लेकिन बग्घी के अन्दर बैठा शहजादा राजी न हुआ। उसने सोचा, शहजादी के बिना घर लौटने से अच्छा तो मर जाना है। "मैं इतने दिनों से शहजादी को मन में बसाए हुए हूं," वह बोला। "वह मेरी बन चुकी है और अब मैं उसे किसी भी हालत में दूसरे के पास नहीं जाने दूंगा!"

उनमें एक मंत्री राजघराने का बड़ा हितैषी था। उसने एक तरकीब सोच निकाली। "क्यों न शहजादे की भूमिका अदा करने के लिए एक खूबसूरत-सा नौजवान ढूंढ़ लिया जाए," उसने राय पेश की। "इस तरह हम शहजादी के घर वालों को धोखा देकर उसे हासिल कर सकते हैं। जहां एक बार वह हमारे मुल्क में आ गई, फिर वह कुछ नहीं कर पाएगी।"

इस राय से सभी मंत्री सहमत हो गए। अब उन्होंने एक खूबसूरत

नौजवान की तलाश शुरू कर दी। वे लोग हर राह चलते नौजवान की खूबसूरती को परखने लगे। अन्त में वे इस नतीजे पर पहुंचे कि फल बेचने वाला नौजवान ही सबसे सुन्दर है। उन्होंने अपनी स्कीम के बारे में उससे बात की। नौजवान शहजादे ने ऐसा दिखाया मानो वह कुछ न जानता हो, इस मामले में कोई दिलचस्पी न रखता हो। "मैं इस पचड़े में नहीं पड़ना चाहता," वह बोला। "तुम लोग इस काम के लिए किसी और को ढूंढ़ लो। मेरे पास अपने ही बहुत से काम हैं।"

मंत्री अनुरोध करते रहे, उस पर दबाव डालते रहे। उन्होंने काम पूरा होने पर पांच सोने की अशरफियां देने का वायदा किया। "पांच तो बहुत कम हैं," नौजवान शहजादा बोला।

"अच्छा, हम तुम्हें सात अशरफियां देंगे। अब तो मान जाओ!" सात अशरफियों पर सौदा तय हो गया। उन्होंने नौजवान शहजादे को तो बग्घी में बिठा दिया और सींग वाले शहजादे को घोड़े पर। सींग वाले शहजादे का चेहरा उन्होंने एक झीने आवरण से ढक दिया और उसके सिर पर कपड़ा बांध दिया। उन्होंने उससे कहा, शहर में प्रवेश करते ही वह किसी कमरे में छिप जाए, और किसी भी हालत में बाहर न निकले।

सारा बन्दोबस्त करने के बाद वे लोग आगे बढ़ गए।

जब वे लोग शहर में पहुंचे, तो बादशाह उनका स्वागत करने आ पहुंचा। यह देखकर उसे बड़ी खुशी हुई कि उसका दामाद एक बेहद खूबसूरत नौजवान है और अपने साथ बहुत से तोहफे भी लाया है। पर अपनी लड़की की कारगुजारियों के बारे में उसे बड़ी चिन्ता थी और डर था कि अगर शहजादे को पता चल गया, तो वह कहीं उससे विवाह करने से इनकार न कर दे। इसलिए वह फौरन शादी की तैयारी में जुट गया। चार दिन तक दावतें चलती रहीं। अधेड़ लोगों के खाने-पीने का इन्तजाम महल के बाहर किया गया और युवक-युवतियों का महल के अन्दर, ताकि वे लोग वर-वधू का मनोरंजन कर सकें। बादशाह का ख्याल था कि अगर दूल्हे और दूसरे मेहमानों को पूरे दिन व्यस्त रखा गया, तो उन्हें शहजादी के चालचलन के बारे में कुछ मालूम नहीं हो सकेगा।

तीन दिन से खूब जश्न मनाया जा रहा था। पर इस दौरान शहजादी लगातार रोती जा रही थी। दूल्हे को देखने के लिए उसने एक क्षण के लिए भी घूंघट नहीं उठाया। वह लगातार अपने प्रेमी नौजवान शहजादे के बारे में ही सोचती जा रही थी। चौथे दिन बादशाह ने एक विश्वसनीय बूढ़ी महिला को यह पता लगाने भेजा कि दूल्हा उसकी बेटी को प्यार करने लगा है या नहीं।

उस रात महल में भोज के समय दूल्हा शहजादी के पास बैठा था। जब सब लोग नाच-गाने में मस्त थे, तो मौके का फायदा उठाकर उसने राजकुमारी के कान में धीरे से कहा कि वह उसका प्रेमी नौजवान शहजादा है। यह सुनते ही शहजादी ने अपना घूंघट उठा लिया और उसकी तरफ देखा। उसे लगा जैसे वह सपना देख रही है। उसे बड़ा ताज्जुब हुआ कि उसके पिता उन दोनों की शादी के लिए आखिर राजी कैसे हो गए?

नौजवान शहजादे को डर था कि शहजादी कहीं कोई ऐसा काम न कर बैठे जिससे दोनों मुश्किल में पड़ जाएं। इसलिए उसने संक्षेप में अपनी

सारी आपबीती उसे सुना दी और उससे कहा कि वह पहले की ही तरह बिलकुल अनजान बनी रहे। इसके बाद शहजादी ने रोना बन्द कर दिया और वह खूब हंसने-बोलने लगी। उसने कई बार शहजादे के साथ नाच भी किया। नाच के दौरान दोनों ने वहां से भाग निकलने की योजना बनाई। शहजादे ने कहा, विवाह के बाद जब वह अपने पिता से विदा होने जाए, तो काठ का घोड़ा जरूर मांग ले और उसके बिना किसी भी सूरत में जाने को तैयार न हो, चाहे बादशाह उसे कितना भी डराए-धमकाए।

बूढ़ी महिला लौटकर बादशाह से बोली : "वे दोनों अब एक-दूसरे को बेहद प्यार करने लगे हैं। सारी रात एक साथ नाचते-गाते रहे हैं।" यह सुनकर बादशाह बहुत खुश हुआ।

दूसरे दिन शहजादी की विदाई का वक्त आ गया। महल के फाटक पर बड़े-बड़े अमीर-उमराव दुलहन को विदा करने आ पहुंचे। नौजवान शहजादा और उसके साथी जाने को तैयार थे। लेकिन महल में शहजादी अपने पिता से काठ के घोड़े की मांग कर रही थी और उसके बिना जाने से इनकार कर रही थी। बादशाह गुस्से से आगबबूला हो उठा। बेटी को डराने-धमकाने के लिए उसने जल्लाद भी बुलाए। लेकिन वह टस से मस न हुई। उसने कहा, काठ के घोड़े के बिना वह यहां से हरगिज नहीं जाएगी और अगर उसकी मांग पूरी न की गई, तो यहीं मर जाएगी। बादशाह क्रोध से पागल हो उठा। उसकी अक्ल काम नहीं कर रही थी। बाहर अमीर-उमराव इन्तजार करते-करते परेशान हो गए। देरी का कारण पता लगाने अन्दर गए, तो बादशाह बोला : "मेरी यह फूहड़ लड़की बच्चों की तरह जिद करके हम सबको परेशान कर रही है। वह काठ का घोड़ा भी अपने साथ ले जाना चाहती है।"

यह सुनकर अमीर-उमराव हंस पड़े। "जब यह खिलौना उसे इतना प्यारा है, तो ले क्यों नहीं जाने देते?"

अब बादशाह इनकार न कर सका। उसने काठ का घोड़ा शहजादी

को दे दिया। इसके बाद दूल्हा अपनी दुलहन और बरात के साथ विदा हो गया।

यात्रा करते-करते कई दिन बीत गए। नौजवान शहजादे और शहजादी की मंत्री और सेवक पूरी निगरानी रखते थे और उन्हें एक पल के लिए भी अकेला नहीं छोड़ते थे। इसलिए उन्हें भागने का मौका नहीं मिल पा रहा था। जैसे-जैसे वे दाढ़ी-मूंछ और सींग वाले शहजादे के घर के नजदीक पहुंचते जा रहे थे, वैसे-वैसे उनकी चिन्ता बढ़ती जा रही थी। अन्त में नौजवान शहजादे ने एक उपाय खोज निकाला और चुपके से शहजादी के कान में बता दिया। उसने कहा, जब वे लोग महल के फाटक के पास पहुंचे, तो नौजवान शहजादी सोने की अशरफियों से भरी सात तश्तरियों की मांग करे और कहे कि इन अशरफियों को वह मुट्ठियों में भर-भरकर लुटाना चाहती है। जो अशरफियां जिसके हाथ लगेंगी, वे उसी की हो जाएंगी। जब तक उसकी यह मांग मंजूर नहीं की जाएगी, वह बग्घी से नीचे नहीं उतरेगी।

शहजादी ने यह बात अच्छी तरह गांठ बांध ली। फाटक पर पहुंचकर उसने ऐसा ही किया। वह मुट्ठियों में भर-भरकर अशरफियां लुटाने लगी। चारों तरफ अशरफियां ही अशरफियां बिखर गईं। सब लोग सोने की अशरफियों पर मधुमक्खियों की तरह टूट पड़े। मौके का फायदा उठाकर नौजवान शहजादे ने काठ का घोड़ा तैयार कर लिया और शहजादी को अपने साथ घोड़े पर बिठाकर उसकी सब चाबियों को घुमा दिया। पलभर में घोड़ा उन दोनों को लेकर आकाश में पहुंच गया। शहजादे ने घोड़े का मुंह अपने मुल्क की तरफ मोड़ लिया और कुछ ही देर में दोनों सुरक्षित नौजवान शहजादे के माता-पिता के पास पहुंच गए।

शहजादे का पिता दिनरात अपने बेटे के बारे में सोचता रहता था। वह इसके लिए बढ़ई को ही दोषी समझता था और उसे फांसी पर चढ़ाना चाहता था। लेकिन बाद में उसने फ़ांसी देने का इरादा छोड़कर उसे एक पुल पर कीलने का हुक्म दे दिया। नौजवान शहजादे के लौटने से

तीन दिन पहले उसे पुल पर कीला जा चुका था।

"पिताजी," शहजादा बोला, "बढ़ई का काठ का घोड़ा बड़े कमाल का निकला ! इसके बिना मैं न तो इतने सारे मुल्कों की यात्रा कर सकता था और न इतनी खूबसूरत शहजादी को ब्याहकर आपके पास लौट सकता था। आप उस माहिर बढ़ई को जरूर कोई अच्छा-सा इनाम दें।"

बादशाह उसकी बात सुनकर दंग रह गया। उसे अपने किए पर बहुत पछतावा हो रहा था। उसने शहजादे को सच्ची बात बता दी। साथ ही उसने बढ़ई को रिहा कराने के लिए एक आदमी फौरन पुल पर भेज दिया। बढ़ई अभी जीवित था। उसे शाही महल में पहुंचा दिया गया। नौजवान शहजादे ने खुद उसकी सेवा-टहल की और जब उसके सब घाव अच्छी तरह भर गए, तो उसे बहुत-सा सोना-चांदी इनाम दिया।

नौजवान शहजादे और खूबसूरत शहजादी की शादी का जश्न फिर एक बार धूमधाम से मनाया गया। कुछ समय बाद शहजादा राजगद्दी का उत्तराधिकारी बन गया।

मा ल्याङ श्रौर उसकी जादू की कूची

(हान जाति की लोककथा)

बहुत पुरानी बात है। मा ल्याङ नाम का एक लड़का बचपन में ही श्रनाथ हो गया था। वह जंगल से लकड़ियां चुनकर श्रौर घास काटकर गुजर-बसर करता था। वह एक बुद्धिमान लड़का था। उसके मन में चित्रकला सीखने की तीव्र इच्छा थी। लेकिन उसके पास कूची खरीदने के लिए पैसे नहीं थे।

एक दिन मा ल्याङ एक स्कूल के पास से गुजर रहा था। उसने देखा, श्रध्यापक चित्र बना रहा है। कूची से खींचे जाने वाले चित्र को वह बड़े गौर से देखने लगा। मा ल्याङ श्रनजाने में ही स्कूल के श्रन्दर चला गया।

"मैं भी चित्रकला सीखना चाहता हूं," उसने कहा। "क्या श्राप मुझे एक कूची दे सकते हैं?"

"क्या कहा?" श्रध्यापक उसे घूरते हुए बोला। "एक भिखारी भला चित्रकला कैसे सीख सकता है? तुम सपना तो नहीं देख रहे?" उसने मा ल्याङ को दुतकार कर बाहर खदेड़ दिया।

लेकिन मा ल्याङ श्रपनी धुन का पक्का था।

"मैं गरीब हूं तो क्या हुश्रा? क्या मैं चित्रकला नहीं सीख सकता?" उसने मन ही मन सोचा।

मा ल्याङ ने चित्रकला सीखने का पक्का इरादा कर लिया और हर रोज चित्र बनाने का अभ्यास करने लगा। जब वह लकड़ी चुनने पहाड़ पर जाता, तो टहनी से बालू पर पक्षियों के चित्र बनाता ; जब नदीतट पर नरकट काटने जाता, तो पानी में अंगुली डुबोकर चट्टान पर मछलियों के चित्र बनाता ; जब घर लौट आता, तो गुफाघर की दीवारों पर मेज-कुर्सियों के चित्र बनाता। उसने अपने गुफाघर की दीवारें चित्रों से भर डालीं।

समय बीतता गया। मा ल्याङ हर रोज चित्र बनाने का अभ्यास करता रहा। उसकी कला का स्तर दिन-ब-दिन ऊंचा होता गया। उसके चित्रों को देखकर लोगों को ऐसा लगता था मानो पक्षी उड़ रहे हों, मछलियां तैर रही हों। उसके सभी चित्र बड़े सजीव होते थे। लेकिन अब भी उसके पास कूची नहीं थी ! वह अक्सर सोचता रहता था, अगर मेरे पास एक कूची होती तो कितना अच्छा होता !

एक दिन सुबह से शाम तक लगातार काम करने और चित्र बनाने के बाद मा ल्याङ बहुत थक गया। बिस्तर पर लेटते ही उसे गहरी नींद आ गई। तभी सफेद दाढ़ी वाला एक बूढ़ा बाबा उसके सामने प्रगट हुआ। उसने मा ल्याङ को एक कूची दी और बोला :

"यह लो बेटा, मैं तुम्हें यह जादू की कूची भेंट कर रहा हूं। इसे सावधानी से इस्तेमाल करना!"

मा ल्याङ ने कूची हाथ में ले ली। कूची चमकदार सोने की बनी हुई थी और कुछ भारी थी।

"वाह, कितनी सुन्दर कूची है यह!" मा ल्याङ खुशी से उछल पड़ा। "बहुत-बहुत धन्यवाद, बाबा! ..."

मा ल्याङ अभी अपनी बात अच्छी तरह पूरी भी नहीं कर पाया था कि सफेद दाढ़ी वाला बूढ़ा बाबा अन्तर्धान हो गया। मा ल्याङ बिस्तर से उठ खड़ा हुआ। तो क्या यह एक सपना था ? पर नहीं, यह भला सपना कैसे हो सकता था ? जादू की कूची अब भी उसके हाथ में थी ! उसे बड़ा अचम्भा हो रहा था।

मा ल्याङ ने जादू की कूची से एक चिड़िया का चित्र बनाया। चित्र पूरा होते ही चिड़िया पंख फड़फड़ाती हुई आकाश में उड़ गई और एक सुरीला गीत गाने लगी। उसने जादू की कूची से एक मछली बनाई। मछली दुम हिलाती हुई पानी में कूद पड़ी और तैरने लगी। यह देखकर मा ल्याङ बहुत खुश हुआ।

अपने गरीब गांववासियों के लिए मा ल्याङ जादू की कूची से हर रोज कुछ न कुछ बनाता रहता था। हर परिवार की आवश्यकता के अनुसार

वह अब तक हल, कुदाली, लैम्प, बाल्टी आदि न जाने कितनी चीजें बना चुका था।

लेकिन यह रहस्य ज्यादा दिनों तक गुप्त नहीं रखा जा सका। मा ल्याङ की जादू की कूची की खबर फैलते-फैलते गांव के जमींदार तक भी पहुंच गई।

जमींदार ने मा ल्याङ को पकड़ने के लिए दो आदमी भेजे। दोनों उसे पकड़कर जमींदार के पास ले गए। जमींदार चाहता था कि मा ल्याङ उसके लिए भी चित्र बनाए।

हालांकि मा ल्याङ अभी बच्चा ही था, लेकिन वह बड़ा होशियार और बहादुर था। अमीरों के हथकण्डों को वह अच्छी तरह समझता था। जमींदार के डराने-धमकाने और फुसलाने का उस पर कोई असर नहीं पड़ा और उसने जमींदार के लिए एक भी चित्र बनाने से इनकार कर

दिया। दुष्ट जमींदार बौखला उठा। उसने मा ल्याङ को अस्तबल में बन्द करवा दिया और भूखा रखा।

तीन दिन बाद भारी बरफबारी होने लगी। शाम तक जमीन पर बरफ की मोटी-मोटी तहें जम गईं। जमींदार ने सोचा, मा ल्याङ भूख से नहीं तो ठण्ड से अवश्य मर गया होगा। इसलिए वह उसे देखने अस्तबल की ओर चल पड़ा। दरवाजे के पास पहुंचकर उसे अन्दर से स्वादिष्ट भोजन की खुशबू आने लगी। दरारों से झांककर अन्दर देखा, तो दंग रह गया। मा ल्याङ अंगीठी के पास बैठा आग ताप रहा था और गरम-गरम केक खा रहा था! जमींदार को अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हुआ। उसने सोचा, इसके पास अंगीठी और केक आखिर कहां से आए? इसने जरूर इन सब चीजों के चित्र बनाए होंगे। गुस्से से आगबबूला होकर उसने अपने आदमियों को हुक्म दिया कि वे मा ल्याङ की जादू की कूची छीन लें और उसे जान से मार डालें। लेकिन जब जमींदार अपने दस-बारह खूंखार कारिन्दों के साथ अस्तबल में पहुंचा, उससे पहले ही मा ल्याङ नौ दो ग्यारह हो चुका था। दीवार पर केवल एक सीढ़ी दिखाई दी, जिससे मा ल्याङ भागा था।

मा ल्याङ का पीछा करने के लिए जमींदार फौरन सीढ़ी पर चढ़ने लगा। पर तीसरे डण्डे पर पांव रखते ही वह धड़ाम से नीचे गिर पड़ा। जब फिर चढ़ने के लिए उठा, तो सीढ़ी गायब हो चुकी थी।

जमींदार के घर से भागने के बाद मा ल्याङ ने फैसला किया कि वह अब अपने गांव में नहीं रहेगा। अगर उसका कोई मित्र उसे अपने यहां छिपाने की कोशिश करता, तो वह जमींदार का कोपभाजन बन सकता था। इसलिए मा ल्याङ ने फैसला किया कि वह अपने गांव से बहुत दूर चला जाएगा। उसने गांव वालों से मन ही मन विदाई लेते हुए कहा :

"मेरे प्यारे गांववासियो, अलविदा!"

इसके बाद उसने एक शानदार घोड़े का चित्र बनाया और उस पर सवार हो गया। घोड़ा सरपट दौड़ने लगा।

अभी वह कुछ ही दूर गया होगा कि उसे अपने पीछे शोरगुल सुनाई पड़ा। पीछे मुड़ा, तो देखा जमींदार और उसके पन्द्रह-बीस गुर्गे घोड़ों पर सवार होकर उसका पीछा कर रहे हैं। उनके हाथ में तेज मशालें थीं। जमींदार के हाथ में तलवार चमक रही थी।

जल्दी ही वे लोग मा ल्याङ के करीब पहुंच गए। मा ल्याङ ने बड़े धीरज के साथ जादू की कूची निकाली और उससे एक तीर-कमान बना लिया। फिर उसने कमान पर तीर चढ़ा दिया और "सर्र" की आवाज के साथ उसे जमींदार की तरफ छोड़ा। तीर जमींदार के गले में लगा और वह घोड़े से नीचे गिर गया। मा ल्याङ ने अपने घोड़े को कसकर चाबुक मारा। घोड़ा हवा से बातें करने लगा।

इस तरह कई दिनों तक लगातार घोड़ा दौड़ाने के वाद मा ल्याङ एक शहर में जा पहुंचा। मा ल्याङ ने उसी शहर में रहने का फैसला कर लिया, क्योंकि अब वह अपने गांव से बहुत दूर आ चुका था। शहर में

उसे काम नहीं मिल पाया, इसलिए वह अपनी जादू की कूची से चित्र बनाकर उन्हें बाजार में बेचने लगा। यह सोचकर कि उसके बारे में कहीं किसी को पता न चल जाए, वह चित्र बनाने में बड़ी सावधानी बरतता था। पशु-पक्षियों के चित्रों में वह उनका कोई न कोई अंग अधूरा छोड़ देता था, ताकि उनमें जान न आ जाए।

एक दिन उसने एक ऐसे सारस का चित्र बनाया जिसकी आंखें नहीं थीं। पर अनजाने में ही उसकी कूची सारस के सिर को छू गई। आंखों की जगह स्याही लगते ही सारस ने आंखें खोल दीं और पंख फड़फड़ाता हुआ आकाश में उड़ गया। यह देखकर पूरा शहर चकित रह गया। कुछ शरारती लोगों ने सम्राट से शिकायत कर दी। सम्राट ने मा ल्याङ को राजदरबार में पेश करने का आदेश दे दिया। मा ल्याङ सम्राट के पास नहीं जाना चाहता था। लेकिन उसके सिपाही तरह-तरह के प्रलोभन देकर और डरा-धमका-कार उसे सम्राट के पास ले गए।

मा ल्याङ ने गरीबों पर सम्राट के अत्याचारों की बहुत सी कहानियां सुन रखी थीं। इसलिए वह सम्राट से घृणा करता था। ऐसे आदमी के लिए वह किसी भी

हालत में चित्र नहीं बनाना चाहता था। इसलिए जब सम्राट ने उसे नागराज का चित्र बनाने का आदेश दिया तो उसने नागराज की जगह एक मेढक का चित्र बना दिया ; जब सम्राट ने अमरपक्षी बनाने का आदेश दिया, तो उसने एक मुर्गे का चित्र बना दिया। बदसूरत मेढक और मैला-कुचैला मुर्गा सम्राट के आसपास कूदने-फांदने लगे और चारों तरफ गन्दगी फैलाने लगे। उन्होंने इतनी गन्दगी फैला दी कि पूरे राजमहल में बदबू आने लगी। यह देखकर सम्राट गुस्से से आगबबूला हो उठा और उसने अपने सिपाहियों को हुक्म दिया कि वे मा ल्याङ की जादू की कूची छीन लें और उसे जेल में बन्द कर दें।

जादू की कूची अब सम्राट के कब्जे में आ गई थी। उसने इस कूची से चित्र बनाने की कोशिश की। सबसे पहले उसने एक सोने का पहाड़ बनाया। फिर सोचा, सिर्फ एक सोने का पहाड़ काफी नहीं है। इसलिए वह एक के बाद एक सोने के पहाड़ बनाता गया। सारा चित्र सोने के पहाड़ों से भर गया। लेकिन क्या आप अनुमान लगा सकते हैं कि चित्र पूरा होने के बाद उन सोने के पहाड़ों का क्या हुआ ? वे सब पत्थर की चट्टानों में बदल गए। क्योंकि चट्टानें बहुत भारी थीं, इसलिए वे नीचे गिरने लगी। सम्राट कुचलते-कुचलते बचा।

फिर भी सम्राट ने लालच नहीं छोड़ा। सोने के पहाड़ बनाने में असफल होने के बाद उसने सोने की ईंटें बनाने की सोची। पहले उसने एक ईंट बनाई। पर वह उसे कुछ छोटी लगी। अब सम्राट ने उससे कुछ बड़ी ईंट बनाई ; लेकिन वह उससे भी सन्तुष्ट न हुआ। अन्त में उसने सोने की एक लम्बी-सी सिल्ली बना डाली। लेकिन क्या आप अनुमान लगा सकते हैं कि चित्र पूरा होने के बाद क्या हुआ ? सोने की सिल्ली ने एक विशाल अजगर का रूप ले लिया। अजगर अपना बड़ा-सा मुंह खोलकर सम्राट की तरफ लपका। यह देखकर सम्राट डर के मारे बेहोश हो गया। भाग्यवश राजदरबार के अधिकारी उसे बचाने आ गए। वरना अजगर उसे निगल जाता।

जब सम्राट को पक्का विश्वास हो गया कि जादू की कूची उसके लिए बेकार है, तो उसने मा ल्याङ को रिहा कर दिया और उसके साथ बहुत अच्छा बरताव किया। उसने मा ल्याङ को ढेर सारा सोना-चांदी भेंट किया और अपनी एक राजकुमारी से शादी करने का अनुरोध किया।

मा ल्याङ अपनी योजना पहले ही बना चुका था। उसने ऐसा दिखाया मानो उसे सम्राट का प्रस्ताव स्वीकार हो। सम्राट यह देखकर बहुत खुश हुआ और उसने मा ल्याङ को जादू की कूची लौटा दी।

"अगर इससे पहाड़ का चित्र बनवाया गया, तो उसमें से जंगली जानवर निकल सकते हैं," सम्राट ने सोचा। "अच्छा यह होगा कि इससे समुद्र का चित्र बनवाया जाए।"

इसलिए मा ल्याङ को उसने पहले समुद्र का चित्र बनाने का आदेश दिया।

मा ल्याङ ने अपनी जादू की कूची उठाई और समुद्र का चित्र बना डाला। पलभर में सम्राट के सामने एक विशाल समुद्र प्रकट हो गया। उसका पानी बिलकुल शान्त था और वह जेड के आईने की तरह चमक रहा था।

"इस समुद्र में मछलियां क्यों नहीं हैं?" समुद्र की ओर देखते हुए सम्राट ने पूछा।

मा ल्याङ ने अपनी जादू की कूची से चित्र में कुछ रंग और भर दिए। क्षणभर में इन्द्रधनुष के सातों रंगों वाली मछलियां प्रकट हो गईं। वे थोड़ी देर दुम हिलाकर पानी में तैरती रहीं; फिर धीरे-धीरे समुद्र की गहराई में विलीन हो गईं।

सम्राट मंत्रमुग्ध होकर यह सब देख रहा था। जब मछलियां बहुत दूर निकल गईं, तो वह मा ल्याङ से बोला :

"जल्दी से एक नाव बना दो। मैं नाव पर बैठकर इन मछलियों को देखने समुद्र में जाना चाहता हूं।"

मा ल्याङ ने एक बड़ी-सी नाव बना दी। नाव पर सम्राट, सम्राज्ञी, राजकुमार, राजकुमारी और बहुत से मंत्री सवार हो गए। फिर कुछ रेखाएं खींचकर उसने हवा बना डाली। समुद्र में हलकी-हलकी लहरें उठने लगीं और नाव आगे बढ़ने लगी।

सम्राट को नाव की रफ्तार कुछ धीमी लगी। नाव के आगे के हिस्से में खड़ा होकर वह जोर से चिल्लाया :

"हवा की रफ्तार और तेज करो! और तेज!"

मा ल्याङ ने अपनी जादू की कूची से कुछ सशक्त रेखाएं खींचीं और हवा की रफ्तार तेज हो गई। समुद्र की लहरें धीरे-धीरे उग्र रूप धारण करने लगीं। नाव के सफेद पाल अपने आप खुल गए और नाव हवा के रुख के साथ तेजी से गहरे समुद्र की ओर बढ़ने लगी।

मा ल्याङ ने अपनी कूची से कुछ रेखाएं और खींच डालीं। समुद्र गरज उठा, उसमें प्रचण्ड लहरें उठने लगीं, नाव डांवाडोल होने लगी।

"बस करो! अब ज्यादा हवा नहीं चाहिए!" सम्राट गला फाड़कर चिल्लाने लगा। "मैं कहता हूं, अब बस करो!"

लेकिन मा ल्याङ ने उसकी बात पर ध्यान नहीं दिया। वह अपनी जादू की कूची चलाता रहा। सहसा समुद्र ने भयानक रूप धारण कर लिया और उसकी ऊंची-ऊंची तरेंगें नाव के भीतर तक पहुंचने लगीं।

सम्राट के सारे कपड़े गीले हो गए। वह मस्तूल को पकड़कर खड़ा हो गया और मा ल्याङ की ओर इशारा करता हुआ जोर-जोर से चिल्लाता रहा।

मा ल्याङ ने ऐसा दिखाया जैसे उसे कुछ न सुनाई पड़ रहा हो। वह तेज हवा लाने के लिए नई-नई रेखाएं खींचता रहा। सहसा आकाश

में अंधेरा छा गया। तूफानी हवा के साथ काले बादल उमड़ने लगे। भयंकर लहरें आसमान को छूने लगीं। उनके भीषण थपेड़ों में नाव डगमगाने लगी। अन्त में लहरों के प्रहार से क्षत-विक्षित नाव डूब गई और सम्राट, उसके परिवार के लोग और मंत्रिगण रसातल में पहुंच गए।

सम्राट के मरने के बाद, मा ल्याङ और उसकी जादू की कूची की चर्चा दूर-दूर तक होने लगी। लेकिन मा ल्याङ का क्या हुआ, यह पक्के तौर पर कोई नहीं जानता।

कुछ लोग कहते हैं, उसने अपने गांव लौटकर बाकी जिन्दगी गांव के किसानों के साथ बिताई। कुछ लोग कहते हैं, वह दुनिया में जगह-जगह घूमता रहा और गरीबों के लिए चित्र बनाता रहा।

वीर शिगार की कहानी

(ई जाति की लोककथा)

कहते हैं किसी समय आकाश में सात सूरज थे और छै चन्द्रमा। पृथ्वी रोशनी से जगमगाती रहती थी। उन दिनों मौसम बड़ा सुहावना रहता था। सभी पशु-पक्षी खुशहाली का जीवन विताते थे। ऐसे ही समय पूर्वी समुद्र के एक द्वीप में वीर शिगार का जन्म हुआ था। धीरे-धीरे वह बड़ा हुआ और उसका विवाह हो गया। वसन्त के आरम्भ में एक दिन वह हाथ में तलवार उठाए अपनी दोनों पत्नियों से विदा होकर अपने हवाई घोड़े पर सवार हो गया और विश्व-यात्रा पर निकल पड़ा। वह दुनिया के अलग-अलग स्थानों में जाकर यह देखना चाहता था कि वहां सभी मनुष्य और पशु-पक्षी भगवान की इच्छा के मुताविक सुख-शान्ति और समानता का जीवन बिता रहे हैं या नहीं।

लम्बे समय तक यात्रा करने के बाद वह ल्याङशान पर्वत के पास एक पठार में जा पहुंचा। वहां पक्षियों का एक समूह दुखी होकर विलाप कर रहा था। "मैं आधी दुनिया की यात्रा कर चुका हूं," उसने सोचा। "सभी स्थानों में मनुष्य और पशु-पक्षी सुख-शान्ति और समानता का

जीवन बिता रहे हैं। फिर ये पक्षी यहां रो क्यों रहे हैं?" पता लगाने के लिए वह पक्षियों के पास जा पहुंचा।

"दुनिया में सभी पशु-पक्षी सुख-शान्ति से रह रहे हैं। पर तुम लोग यहां इतने दुखी क्यों हो?" उसने पूछा।

शिगार की ऊंची ग्रावाज सुनकर सब पक्षी उसकी तरफ देखने लगे।

"कौन कहता है दुनिया में सभी पशु-पक्षी सुख-शान्ति से रह रहे हैं?" एक बातूनी लवा पक्षी ने कहा। "श्रीमान जी, यह बात किसी जमाने में जरूर सच थी। पर जब से पहाड़ पर एक दुष्ट ग्रजगर प्रकट हुग्रा है, तब से हमारा सुख-चैन खत्म हो गया है।"

"क्या कहा?"

"हां, पहाड़ पर एक ग्रजगर प्रकट हो गया है! वह पूर्वी पहाड़ का ग्रजगर कहलाता है!" लवा पक्षी ने रुग्रांसी ग्रावाज में कहा। उस दुष्ट ने ग्रपने हट्टेकट्टे शरीर को छै चन्द्रमाग्रों की रोशनी से बेहद पुख्ता ग्रौर सात सूरजों की गरमी से बेहद मजबूत बना लिया है। ग्रब वह ग्रपने लिए भोजन खोजने खुद नहीं जाता, बल्कि हमें ग्रादेश देता है कि हम रोजाना उसके पास एक पक्षी भेज दें। ग्रगर हम रोज उसके पास एक पक्षी नहीं भेजेंगे, तो वह हम सब पक्षियों को मारकर खा जाएगा। ग्राज तीतर की बारी है। हम उसे विदा करने के लिए इकट्ठे हुए हैं।"

शिगार को तीतर ग्रौर ग्रन्य पक्षियों पर बड़ी दया ग्राई। "तुम इस तरह ग्रपनी जान गंवाने के बजाय उस दुष्ट से लड़ते क्यों नहीं?" उसने पूछा।

उसकी बात सुनते ही सब पक्षी एक साथ बोल पड़े। लवा पक्षी की ग्रावाज उनमें सबसे ऊंची थी: "उस दुष्ट से लड़ाई? उसका ग्रौर हमारा भला क्या मुकाबला! जब तक चन्द्रमा ग्रौर सूरज उसकी हिमायत करते रहेंगे, तबतक वह दुष्ट ग्रजगर ग्रपने ग्रसली ग्राकार में नहीं लौटेगा ग्रौर ठण्ड से नहीं मरेगा।"

"ठीक है! मैं ग्रभी इसका खात्मा करता हूं!" शिगार ने ग्राश्वासनभरे

शब्दों में कहा और फौरन घोड़े पर सवार होकर दौड़ पड़ा।

जल्दी ही वह पहाड़ की चोटी पर जा पहुंचा और कमान खींचकर सूरजों की तरफ तीर छोड़ने लगा। तीर लगते ही पहला सूरज धुएं की काली गेंद में बदल गया और नीचे गिर पड़ा। इसी तरह उसने एक-एक करके छै सूरजों को धराशायी कर दिया। जब छठा सूरज नीचे गिर गया, तो सातवां सूरज बोल पड़ा : "वीर शिगार, जरा ठहरो! अगर तुमने मुझे भी नीचे गिरा दिया, तो पृथ्वी से गरमी बिलकुल खत्म हो जाएगी, सभी जीव-जन्तु ठण्ड से मर जाएंगे, यहां तक कि तुम भी जिन्दा नहीं रह पाओगे!"

"तुम ठीक कहते हो," कुछ सोचने के बाद शिगार बोला। "लेकिन एक बात याद रखो। अब से तुम अपना ताप दुष्ट पशु-पक्षियों को नहीं दोगे।"

पक्षियों ने जब छै के छै सूरजों को एक के बाद एक नीचे गिरते देखा, तो वे खुशी से नाचने लगे।

वे झुण्ड बनाकर अजगर की गुफा में जा पहुंचे। वह अभी जीवित था, लेकिन सिकुड़कर बैठा था और ठण्ड से ठिठुर रहा था। पक्षियों ने आपस में सोच-विचार करने के बाद एक बाज को शिगार के पास भेजा और उससे अनुरोध किया कि अगर वह सूरजों की ही तरह चन्द्रमाओं को भी धराशायी कर दे, तो अजगर फिर उन्हें कोई हानि नहीं पहुंचा सकेगा।

शिगार ने फौरन छै के छै चन्द्रमाओं पर तीर चलाना शुरू कर दिया। जब पांचवां चन्द्रमा भी नीचे गिर गया, तो छठा चन्द्रमा बोल पड़ा :

"वीर शिगार, जरा ठहरो! अगर तुम मुझे भी नीचे गिरा दोगे, तो पृथ्वी में बिलकुल रोशनी नहीं रह जाएगी। अंधेरे में किसी को कुछ नहीं दिखाई देगा, तुम्हें भी कुछ नहीं दिखाई देगा!"

"ठीक है!" कुछ सोचने के बाद शिगार ने कहा। "लेकिन एक बात का वायदा करो। अब से तुम दुष्ट पशु-पक्षियों को अपनी रोशनी नहीं दोगे!"

शिगार बाज के साथ पहाड़ से नीचे उतर आया और पठार की ओर चल पड़ा। वहां सभी पक्षी वीर शिगार की महान विजय की खुशी मना रहे थे। उनमें सभी तरह के पक्षी थे। वे खुशी से पंख फड़फड़ाते हुए नाच रहे थे। ज्योंही लवा पक्षी और तीतर ने शिगार को आते देखा, उन्होंने सब पक्षियों की तरफ से उसे धन्यवाद दिया। उन्होंने कहा :

"वीर शिगार, हम आपके बहुत आभारी हैं। हमारी शान्ति भंग करने वाला अजगर ठण्ड से ठिठुर-ठिठुर कर मर गया है। हमारा खुश-हाल जीवन फिर लौट आया है। पृथ्वी के पक्षी आपका एहसान कभी नहीं भूलेंगे।"

"मुझे धन्यवाद देने की कोई जरूरत नहीं। मैं कामना करता हूं कि तुम सब हमेशा सुखी रहो!" शिगार ने मुस्कराते हुए उत्तर दिया।

पक्षियों से विदा होने के बाद वह अपनी विश्व-यात्रा में आगे बढ़ गया। जल्दी ही वह एक ऐसे गांव में जा पहुंचा जिसके चारों तरफ दीवार बनी हुई थी। फाटक से गुजरकर ज्योंही वह गांव के अन्दर पहुंचा तो उसने देखा, सड़क पर लोग तेजी से इधर-उधर आ-जा रहे हैं। सब लोग बड़े हैरान-परेशान नजर आ रहे थे। उसने अपने घोड़े को सड़क के किनारे खड़ा कर लिया और आने-जाने वालों की भीड़ को देखने लगा। वह खुद भी बहुत दुखी हो रहा था। हो न हो इस गांव पर कोई भारी विपत्ति आई है, उसने सोचा। घोड़े से उतरकर उसने बड़े अदब के साथ एक बूढ़ी स्त्री से पूछा :

"मांजी, सारी दुनिया में सुख-शान्ति और खुशहाली छाई हुई है। फिर इस गांव के लोग इतने दुखी क्यों जान पड़ते हैं?"

"कौन कहता है, दुनिया में सुख-शान्ति है? हां, पहले कभी हम भी सुख शान्ति के साथ रहते थे। पर अब वह जमाना लद चुका है। अब हमारे गांव में जरा भी सुख-शान्ति नहीं है। क्या तुम्हें हमारे गांव में एक भी गाय या भेड़ दिखाई दे रही है? गांव के बाहर घुटने-घुटने ऊंची घास खड़ी है और सोतों का पानी बेकार बह रहा है! सभी पशु मर चुके

हैं, अब मनुष्यों की बारी है। हे भगवान, बुढ़ापे में मुझे ये कैसे दिन देखने पड़ रहे हैं ?" अपने सफेद बालों की तरफ इशारा करती हुई वह बोली।

"क्या कहा ? क्या यहां भी कोई दुष्ट गांव के लोगों की सुख-शान्ति भंग कर रहा है ? भगवान चाहता है कि दुनिया में सब लोग सुख-शान्ति से रहें। भगवान की इच्छा के विपरीत काम करने का हक किसी को नहीं है !"

शिगार एक लम्बा-तगड़ा सुन्दर युवक था। साथ ही उसकी आवाज भी बड़ी वजनदार थी। शिगार की आवाज सुनकर लोग उसके चारों तरफ जमा हो गए और अपनी दुखमय दास्तान सुनाने लगे।"

"कुछ समय पहले पश्चिमी समुद्र से एक दैत्य प्रकट हुआ है," एक बूढ़े आदमी ने कहा। "उसने यहां भारी उत्पात मचाया हुआ है। अब तक वह हमारे अनगिनत मवेशियों को खा चुका है। अब वह बड़ा आरामतलब हो गया है। उसने हमें आदेश दिया है कि हम लोग उसका भोजन हर रोज समुद्र के किनारे पहुंचा दें। अगर हम उसका खाना नहीं पहुंचाएंगे, तो वह हमारे पूरे गांव को नष्ट कर देगा और उसे समुद्र में डुबो देगा। . . ." बूढ़ा आदमी दुखी होकर आहें भरने लगा। एक नौजवान ने उसकी बात जारी रखी :

"वह हमारे सब मवेशियों को खा चुका है और अब मनुष्यों की बारी है।"

यह दैत्य कैसा है ?" शिगार ने पूछा।

"जादूगर का कहना है कि यह एक अनिष्टकारी ड्रैगन है !" किसी ने उत्तर दिया।

शिगार फौरन जादूगर की खोज में निकल पड़ा।

"इस अनिष्टकारी ड्रैगन के बारे में तुम क्या जानते हो ?" जादूगर को देखते ही शिगार ने ऊंची आवाज में पूछा।

"हर बात जानता हूं !" जादूगर ने शिगार की तरफ देखे बिना सिर नीचा करके उत्तर दिया।

"तुम्हारे जादू-टोने का आखिर क्या फायदा? यह दैत्य तुम्हारे गांव के लोगों को खा रहा है और तुम कुछ नहीं कर रहे!"

"श्रीमान जी, मंत्र पढ़ते-पढ़ते मेरा गला सूख गया है! इस दुष्ट ड्रैगन पर मंत्रों से काबू पाना सम्भव नहीं है। जब यह पानी के अन्दर होता है तो इसे खोजना असम्भव हो जाता है। जब यह भूमि पर होता है, तो नौ बार तेज किए गए छुरे से वार करने पर भी इसकी खाल पर खरोंच तक नहीं आती। इसे केवल आग में जलाकर मारा जा सकता है। पर यह हमारे बूते के बाहर है।"

"कोई न कोई उपाय तो निकालना ही होगा!"

शिगार सिर झुकाकर कुछ देर सोचता रहा। फिर घोड़े पर सवार होकर पश्चिम की ओर चल पड़ा। शीघ्र ही वह काले लोहे के एक बड़े-से पहाड़ पर पहुंच गया। वहां घास का एक भी तिनका नजर नहीं आ रहा था। पहाड़ की तीन बार परिक्रमा करने के बाद शिगार ने लोहे की तीन मोटी-मोटी सलाखें उठाईं और लौट पड़ा। हालांकि आने-जाने में उसे हजारों कोस का फासला तय करना पड़ा, फिर भी पूरी यात्रा में उसे सिर्फ उतना ही समय लगा जितना एक बार खाना खाने में लगता है।

शिगार ने लोगों के साथ मिलकर समुद्रतट पर लकड़ियां जलाईं, लोहे की सलाखों को गरम करके लाल-सुर्ख बना दिया और गांव की अन्तिम भेड़ कटवा दी। उसने लोहे की सलाखों को जोड़कर दरवाजे की चौखट का रूप दे दिया और उसके नीचे कटी हुई भेड़ रख दी। लाल-सुर्ख सलाखों के ताप में भेड़ का मांस भुनने लगा और उसकी सुगन्ध चारों तरफ़ फैलने लगी। . . .

शीघ्र ही हवा का एक तेज झोंका आया और समुद्र के पानी में दस फुट ऊंची लहरें उठने लगीं। काले रंग का अनिष्टकारी ड्रैगन समुद्र से बाहर निकला और भुनी हुई भेड़ की तरफ लपका। उसने भेड़ को निगलने के लिए अपना मुंह खोला ही था कि तीनों लाल सलाखें उसके ऊपर गिर पड़ीं। वह दर्द से चीख उठा और तड़पने लगा। नथुनों से गरम-गरम भाप

निकलने लगी। कुछ ही देर में उसके प्राण निकल गए।

अधिकतर गांववासी दूर से ही यह सारा दृश्य देख रहे थे। पर कुछ साहसी लोग नजदीक आकर स्थिति का जायजा ले रहे थे। वे दौड़कर बाकी साथियों के पास जा पहुंचे और आंखोंदेखा हाल उन्हें बताने लगे। सभी नौजवान वीर शिगार के साहस और बुद्धि की सराहना करने लगे। माताओं ने अपने बच्चों को बताया कि वे वीर शिगार को हमेशा याद रखें।

शिगार के पराक्रम की प्रशंसा के गीत गाते हुए गांव के सब लोग एक जगह इकट्ठे हो गए और उसे धन्यवाद देने लगे। "भगवान चाहता है कि दुनिया में सब लोग सुख-शान्ति से रहें," अपने घोड़े पर चढ़ते हुए शिगार ने कहा। "उसकी इच्छा का अनादर नहीं करना चाहिए। यह दुष्ट ड्रैगन मर चुका है। अब दूसरों को डराने-धमकाने वाला कोई जन्तु नहीं रह गया है। इसलिए तुम लोग सुख-शान्ति से जीवन बिता सकते हो और अपना पशुधन फिर बढ़ा सकते हो।"

लोग शिगार के प्रति आभार प्रकट करने के लिए नाचते-गाते हुए काफी दूर तक उसके पीछे-पीछे चलते रहे और जब तक वह उनकी आंखों से ओझल नहीं हो गया तब तक उसी दिशा में देखते रहे।

इस वीरतापूर्ण कारनामे के बाद शिगार पूर्वी समुद्र के द्वीप में अपनी पहली पत्नी से मिलने जा पहुंचा। पत्नी को अपने प्रीतम से मिले एक लम्बा अरसा हो चुका था। उसे देखते ही उसकी आंखों में आंसू छलछला आए। लेकिन जब उसे अपने पति के वीरतापूर्ण कारनामों का पता चला, तो वह बहुत खुश हुई।

लेकिन स्वार्थवश उसने एक मूर्खता कर डाली। यह सोचकर कि पति दूर देशों की यात्रा पर फिर न निकल जाए, उसने रात के अंधेरे में चुप-चाप उसके हवाई घोड़े का एक पंख काट दिया।

दूसरे दिन शिगार तड़के ही अपने हवाई घोड़े पर सवार होकर दूसरी पत्नी से मिलने चल पड़ा। लेकिन वहां पहुंचने में उसे बड़ी कठिनाई हुई

श्रौर उसके घोड़े को बहुत ताकत लगानी पड़ी।

दूसरी पत्नी भी उसे देखते ही रोने लगी। लेकिन जब उसने अजगर श्रौर ड्रैगन को मारने की कहानी सुनी, तो वह भी खुश हो गई।

यह सोचकर कि वह लम्बी यात्रा पर फिर न निकल जाए, उसने भी रात के अंधेरे में चुपचाप हवाई घोड़े का दूसरा पंख काट दिया।

शिगार फिर एक बार विश्व-यात्रा करना चाहता था। जून के महीने में एक दिन वह हर रोज से कुछ पहले उठ गया। उसने अपने हवाई घोड़े को चुपचाप बाहर निकाला श्रौर उस पर सवार हो गया। ज्योंही उसने एड़ लगाई, घोड़ा जोर से उछला। लेकिन पंख न होने की वजह से उड़ नहीं पाया श्रौर हिनहिनाता हुआ चारों तरफ चक्कर काटने लगा।...

हिनहिनाने की आवाज सुनकर उसकी पत्नी फौरन बाहर निकल आई। लेकिन तब बहुत देर हो चुकी थी। पत्नी के कुछ कहने से पहले ही शिगार श्रौर उसका घोड़ा समुद्र में गिर चुके थे।

"वीर शिगार समुद्र में गिर गया है! वीर शिगार अपने घोड़े समेत समुद्र में गिर गया है!" यह खबर कानोंकान सभी लोगों श्रौर पशु-पक्षियों में फैल गई। वे कितने दुखी हुए, इसका वर्णन शब्दों में करना कठिन है। लोगों श्रौर पशु-पक्षियों के झुण्ड के झुण्ड शोक प्रगट करने समुद्रतट पर आ पहुंचे। पक्षी समुद्र से वीर शिगार को लौटाने की प्रार्थना करने लगे। पर लहरों के गर्जन-तर्जन के सिवाय उन्हें कुछ न सुनाई पड़ा। जब वे हताश हो गए, तो वहां से चले गए। फिर भी उन्होंने आशा नहीं छोड़ी। हर वर्ष जून में पठार के सब पक्षी समुद्रतट पर जमा हो जाते हैं श्रौर समुद्र से वीर शिगार को लौटाने की प्रार्थना करते हैं।

विशाल समुद्र में ऊंची-ऊंची लहरें लगातार उठती रहती हैं, पर पक्षियों को कोई उत्तर नहीं मिलता।

तीसरा बेटा और दुष्ट मजिस्ट्रेट

(च्वाङ जाति की लोककथा)

किसी समय एक गरीब बूढ़ा आदमी बांस की चीजें बनाकर अपना और अपने परिवार का पेट पालता था।

उस बूढ़े आदमी के तीन बेटे थे। मरने से पहले वह अपने तीनों बेटों से बोला : "तुममें से हर आदमी को कोई न कोई हुनर सीख लेना चाहिए। मैंने अपना पूरा जीवन तुम्हारे पालन-पोषण में लगा दिया। अब तुम्हें अपनी रोजी का बन्दोबस्त खुद करना होगा।"

यह कहने के बाद उसके प्राणपखेरू उड़ गए। मरते समय वह कुछ पैसे छोड़ गया था। उनसे बेटों ने एक ताबूत खरीदा और अच्छी तरह उसका अन्तिम संस्कार कर दिया।

पिता की कमाई में से उनके पास केवल तीन सिक्के बच गए थे। तीनों बेटों ने एक-एक सिक्का बांट लिया।

बड़ा बेटा बहुत आलसी था। वह पूरे दिन इधर-उधर वक्त बरबाद करता रहता था। इसलिए उसका सिक्का पिता की मृत्यु के बाद जल्दी ही खत्म हो गया। आलसीपन के कारण उसने कोई काम नहीं किया। अन्त में भुखमरी के कारण उसकी मृत्यु हो गई।

दूसरा बेटा बड़ा मेहनती था। उसने सब्जी उगाने का हुनर सीख

लिया। अपने सिक्के से वह कुछ बीज खरीद लाया और एक अच्छा माली बन गया। पर कमरतोड़ मेहनत करने पर भी वह दो जून का खाना मुश्किल से जुटा पाता था।

तीसरा बेटा अभी बहुत छोटा था। फिर भी वह पूरे दिन अपनी जीविका के बारे में सोचता रहता था।

एक दिन उसने नदी किनारे कुछ मछुवों को काम करते देखा। उनके काम करने के तरीके को वह बड़े ध्यान से देखता रहा। इस तरह उसने मछली पकड़ना सीख लिया। वह अपने सिक्के से मछली पकड़ने की दो बंसियां खरीद लाया और हर रोज मछली पकड़ने नदी किनारे जाने लगा। वह नदी में मछलियां पकड़ता और उन्हें बेच देता। धीरे-धीरे वह बहुत सी मछलियां पकड़ने और बेचने लगा। अब उसका गुजारा अच्छी तरह चलने लगा। कुछ पैसे उसके पास बच भी जाते थे, जिनसे वह रोजमर्रा की जरूरत की चीजें खरीद सकता था। कुछ ही दिनों में वह एक माहिर मछुवा बन गया।

एक दिन वह नदी किनारे देर तक मछलियों की प्रतीक्षा करता रहा। पर उसके हाथ एक भी मछली नहीं लगी। वह अपने भाग्य को बुरी तरह कोसने लगा। तभी उसे पानी में एक बड़ी-सी मछली दिखाई दी, जो आंखें मटकाती हुई और पूंछ हिलाती हुई तैर रही थी तथा बंसी के कांटे में फंसने वाली सभी छोटी मछलियों को निगलती जा रही थी। यह देखकर तीसरे बेटे को इतना गुस्सा आया कि उसने अपनी बरछी उठाई और मछली पर दे मारी। बरछी से बिंधी मछली ने पानी में एक पलटा खाया और नदी के पेंदे में जा पहुंची। पानी में बुलबुले उठने लगे। बरछी से बंधी रस्सी की मदद से तीसरे बेटे ने मछली को ऊपर खींच लिया।

उस दिन उसके हाथ केवल एक ही मछली लगी थी। इसलिए उसने उसे खुद ही पकाने का फैसला किया। जब उसने मछली का पेट काटा, तो उसके अन्दर बहुत-सी छोटी-छोटी मछलियां मौजूद थीं। उनमें एक

बहुत ही सुन्दर कार्प मछली भी थी। वह अभी जीवित थी और गलफड़ों से सांस ले रही थी। तीसरे बेटे को उस सुन्दर कार्प मछली पर दया आ गई। उसने एक तांबे के तसले में साफ पानी भरा और कार्प मछली को उसमें छोड़ दिया। वह अपनी दुम हिलाती हुई पानी में तैरने लगी। तीसरा बेटा खुश होकर उसे देखता रहा। देखते-देखते उस कार्प मछली से उसे लगाव हो गया। तीसरे बेटे ने उसे अपने ही पास रख लिया। वह उसे रोज़ केंचुआ, काई और सेवार खिलाता था।

सुनहरी कार्प मछली दिन-ब-दिन सुन्दर होती गई। तीसरा बेटा उसे बहुत चाहने लगा। मछलियां पकड़ते, बाजार जाते और खेल देखते समय भी वह कार्प मछली को अपने साथ रखता।

एक दिन तीसरा बेटा मछली बेचने बाजार गया तो कार्प मछली को अपने साथ नहीं ले गया। घर लौटा, तो कार्प मछली वहां नहीं थी। वह हैरान रह गया। खड़ा-खड़ा तांबे के खाली तसले को देखता रहा। आंखों से आंसू टपटप तसले पर गिरने लगे। उस दिन से वह बहुत दुखी रहने लगा और अकेलापन महसूस करने लगा।

एक दिन वह नदी किनारे बरगद के पेड़ के नीचे बैठा मछलियां पकड़ रहा था। नदीतट की ठण्डी-ठण्डी बयार और लहरों के कलकल संगीत की थपकियों में उसे नींद आ गई। लेकिन अचानक उसकी जाग खुल गई।.... वह अपनी आंखें मलने लगा। उसने देखा, उसी की उम्र का एक युवक उसका कन्धा थपथपा रहा है। युवक बड़े प्यार से उससे बोला: "भैया, क्या तुम मुझे नहीं पहचानते?" तीसरे बेटे ने सोचा, मुझे तो आज तक किसी ने "भैया" कहकर नहीं पुकारा। यह कौन हो सकता है? "अच्छा, तो तुमने मुझे अब भी नहीं पहचाना?" अजनबी ने फिर कहा। "अरे भाई, मैं तुम्हारा पक्का दोस्त हूं और तुमने ही मेरे प्राण बचाए हैं!" यह सुनकर तीसरा बेटा और अधिक उलझन में पड़ गया। वह नहीं समझ पाया कि क्या जवाब दे। अन्त में अजनबी युवक ने गुत्थी सुलझा दी: "मैं वह सुनहरी कार्प मछली हूं, जिसे तुमने बचाया

था और जिसकी तुमने इतनी अच्छी तरह देखभाल की थी।"

यह सुनते ही तीसरा बेटा सारी बात समझ गया। कार्प मछली ने बताया कि वह जल-जन्तुओं के शासक नागराज का बेटा है। उस दिन वह एक सुनहरी कार्प का वेष धारण करके घूमने-फिरने बाहर निकला था। पर अचानक एक वड़ी मछली ने उसे निगल लिया। अगर तीसरे बेटे ने वड़ी मछली को न मारा होता, तो उसके प्राण नहीं वच सकते थे।

"तुमने मेरी जान बचाई, मुझे अपने पास रखा और अच्छा-अच्छा खाना खिलाया। तुम्हारी इस दयालुता को मैं और मेरे माता-पिता कभी नहीं भूल सकते। मैं तुम्हें अपने घर चलने का निमंत्रण देने आया हूं।" नागराज का बेटा बोला।

"मुझे तुम्हारे साथ जाने में बड़ी खुशी होगी," तीसरे बेटे ने जवाब दिया। "लेकिन मैं पानी के भीतर कैसे जा सकता हूं?"

"अपनी आंखें बन्द कर लो और मेरे कपड़े का छोर पकड़कर मेरे पीछे-पीछे चलते रहो!" नागराज के बेटे ने कहा।

तीसरे बेटे ने वैसा ही किया। उसे लगा जैसे किसी लम्बी सड़क पर चल रहा हो। जल्दी ही वे दोनों नागराज के महल में पहुंच गए। महल लाल बिल्लौर के खम्भों और हरे बिल्लौर की दीवारों से बना हुआ था। रंगबिरंगे पारदर्शी बिल्लौर से महल की सुन्दरता में चार चांद लग गए थे।

नागराज ने तीसरे बेटे का बहुत आदर-सत्कार किया। उसके ठहरने का इन्तजाम सबसे अच्छे कमरे में किया और उसे बढ़िया-बढ़िया व्यंजन खिलाए। नागराज का लड़का उसे अपना बगीचा भी दिखाने ले गया। वहां उसने तरह-तरह के विचित्र फल-फूल देखे। बगीचे में उसने शहद से भी ज्यादा मीठी बिना गुठली वाली लीची देखी, चाय की प्याली से भी ज्यादा बड़े "नागचक्षु" फल देखे और रसभरे आड़ू देखे। बगीचे में सदाबहार केले और अन्य पेड़-पौधे भी थे, जिन्हें उसने पहले कभी नहीं देखा था।

तीसरा बेटा कोई एक महीने तक नागराज के महल में रहा। एक दिन उसने नागराज के बेटे से कहा : "भैया, तुमने मेरी बहुत सेवा की है। इसके लिए मैं तुम्हारा बहुत ग्राभारी हूं। पर मेरे घर की देखभाल करने वाला ग्रौर कोई नहीं है, इसलिए मुझे ग्रब यहां से लौट जाना चाहिए।"

"ग्रगर तुम सचमुच ही लौट जाना चाहते हो, तो ठीक है," नागराज के बेटे ने कहा। "लेकिन कभी-कभार हमारे यहां ग्राते रहना। एक बात मैं तुमसे ग्रौर कहना चाहता हूं : ग्रगर मेरे पिताजी तुम्हें कोई उपहार देना चाहें, तो तुम उनसे सिर्फ सफेद मुर्गी मांगना।"

दूसरे दिन सुबह तीसरा बेटा नागराज से विदा लेने जा पहुंचा। सोने-चांदी से भरे कई कमरे दिखाते हुए नागराज ने उससे बड़े स्नेह से कहा : "इन बहुमूल्य चीजों में से तुम जो भी चीज ले जाना चाहो ले जा सकते हो!" तीसरे बेटे ने चमकदार सोने की सिल्लियों, चांदी की ईंटों, मोती की लड़ियों ग्रौर रत्नों की ग्रोर एक नजर देखा। तभी उसे नागराज के बेटे की बात याद ग्रा गई ग्रौर वह बोल पड़ा : "महाराज, मेरे पास खाने-पीने की चीजों की कमी नहीं है। पर मैं घर में ग्रकेला हूं ग्रौर यह ग्रकेलापन कभी-कभी मुझे काटने लगता है। ग्रगर ग्रापको कोई परेशानी न हो, तो मुझे ग्रपनी सफेद मुर्गी दे दीजिए। उससे मेरा मन लगा रहेगा।" नागराज कुछ देर के लिए सोच में पड़ गया ग्रौर ग्रपनी सफेद दाढ़ी पर हाथ फेरने लगा। ग्रन्त में उसने तीसरे बेटे की बात मान ली ग्रौर उसे सफेद मुर्गी दे दी।

तीसरे बेटे ने सफेद मुर्गी को पिंजरे में बन्द कर लिया ग्रौर घर की ग्रोर चल पड़ा। घर लौटकर वह हर रोज पहले की ही तरह मछली पकड़ने ग्रौर उसे बाजार में बेचने जाने लगा। लेकिन जब वह घर लौटता, तो गरम-गरम चावल ग्रौर स्वादिष्ट व्यंजन मेज पर रखे मिलते।

पहले दिन उसने सोचा, शायद पड़ोसियों ने खाना बनाकर उसके लिए रख दिया है। पर जब वह उन्हें धन्यवाद देने गया, तो यह जानकर उसे बड़ा ग्राश्चर्य हुग्रा कि खाना पड़ोसियों ने नहीं रखा था!

एक दिन इस रहस्य का पता लगाने तीसरा बेटा पूरे दिन घर पर ही रहा। पर उस दिन खाना बनाने कोई नहीं आया। दूसरे दिन वह रोज की ही तरह फिर मछली पकड़ने चला गया। जब लौटा, तो मेज पर खाना तैयार रखा था। वह हैरान रह गया। उसने मन ही मन कहा, "यह खाना आखिर कौन बनाता है? अगर उसका पता चल जाता, तो मैं कम से कम उसे धन्यवाद तो दे देता।"

दूसरे दिन वह घर से मछली पकड़ने तो निकला, लेकिन आधे रास्ते से ही लौट आया और दरवाजे की दरार से अन्दर झांकने लगा। उसने देखा, एक सुन्दर लड़की सफेद चोली और रंगीन लहंगा पहने अंगीठी के पास खड़ी खाना बना रही है। वह अपने को न रोक सका और जोर से चिल्लाया: "सुन्दर लड़की, मैं तुम्हें किन शब्दों में धन्यवाद दूं!" आवाज सुनते ही लड़की ने ताली बजाई और वह सफेद मुर्गी बनकर पिंजरे में पहुंच गई।

तीसरा बेटा कुछ न कर पाया। सिर्फ अगले दिन का इन्तजार करता रहा। अगले दिन भी वह हमेशा की ही तरह मछली पकड़ने घर से निकल पड़ा। लेकिन आधे रास्ते से ही लौट आया और दरवाजे की दरार से अन्दर झांकने लगा। उसने देखा, सफेद मुर्गी फिर पिंजरे से बाहर निकलकर एक सुन्दर लड़की बन गई है। उसने फौरन दरवाजा खोल दिया। लड़की पिंजरे के अन्दर नहीं लौट पाई और लज्जा से सिर झुकाए उसके सामने खड़ी रही।

"सुन्दरी, तुम सचमुच बड़ी दयालु हो! तुम हर रोज मेरे लिए खाना बना जाती हो! मैं तुम्हारा बड़ा आभारी हूं। पर तुम हो कौन और कहां से आई हो?"

"आभारी होने की क्या जरूरत है," लड़की ने कहा। "मैं दरअसल तुम्हारी कोई खास सेवा नहीं कर पा रही हूं। मैं नागराज की कन्या हूं। तुमने मेरे भाई के प्राण बचाए हैं। मैं तुम्हारे एहसान का बदला चुकाने आई हूं।"

दोनों के मन में एक-दूसरे के लिए प्रेम अंकुरित होने लगा। अन्त में दोनों ने विवाह कर लिया। नव-दम्पति को बधाई देने लोग दूर-दूर से आए। एक गरीब आदमी के तीसरे बेटे के साथ नागराज की कन्या के विवाह ही कहानी सुनकर सबको बड़ा आश्चर्य हुआ।

एक दिन दुष्ट काउन्टी मजिस्ट्रेट का एक गुर्गा भी वहां आया। उसने मजिस्ट्रेट को बताया कि उसने एक बेहद सुन्दर लड़की देखी है, जो नागराज के महल से यहां आई है। इसके बाद नौजवान दम्पति को भारी मुसीबतों का सामना करना पड़ा। मजिस्ट्रेट ने हुक्म दिया कि तीसरे बेटे को उसके सामने पेश किया जाए।

"इस काउन्टी के सभी कस्बे और छोटे-बड़े गांव मेरे अधीन हैं। यहां का हर काम मेरे हुक्म के मुताबिक होता है," मजिस्ट्रेट ने तीसरे बेटे से कहा। "मैं तुम्हें हुक्म देता हूं कि तीन दिन के अन्दर अपनी पत्नी को मेरे पास भिजवा दो। वरना तुम्हारा सिर काट दिया जाएगा!"

"अपनी पत्नी के सिवाय मैं आपके लिए हर चीज ला सकता हूं, आपकी हर मांग पूरी कर सकता हूं।" तीसरे बेटे ने दृढ़ता से उत्तर दिया। दुष्ट मजिस्ट्रेट बड़े शातिराना ढंग से मुस्कराया और बोला : "तुम कहते हो, मेरी हर मांग पूरी कर सकते हो। अच्छी बात है। तुम मछुए हो, इसलिए मैं तुम्हें हुक्म देता हूं कि तीन दिन के अन्दर मेरे लिए एक ही आकार की एक सौ बीस लाल कार्प मछलियां पकड़कर लाओ। हर मछली का वजन ठीक बारह औंस होना चाहिए, न रत्तीभर कम न रत्तीभर ज्यादा।"

तीसरा बेटा चिन्ता में पड़ गया। घर लौटकर उसने सारी घटना अपनी पत्नी को बता दी। पत्नी ने ढाढ़स बंधाते हुए कहा : "चिन्ता न करो। मैं तुम्हारी मदद करूंगी!" फिर उसने लाल कागज काटकर एक ही आकार की एक सौ बीस कार्प मछलियां बना डालीं और उन्हें कांच के बरतन में छोड़कर ऊपर से ठण्डा पानी डाल दिया। पानी पड़ते ही सब मछलियां जीवित हो उठीं। सभी कार्प मछलियों का आकार एक जैसा था और सब लाल रंग की थीं। बरतन के अन्दर पानी में तैरती वे कार्प मछलियां बेहद सुन्दर लग रही थीं। तीसरा बेटा उन्हें आश्चर्य से देखता रह गया। पर उन्हें ज्यादा देर अपने पास न रखकर शीघ्र ही मजिस्ट्रेट के पास ले गया।

तीसरे बेटे को परास्त करने में पहली बार असफल रहने के बाद उस दुष्ट मजिस्ट्रेट ने दूसरी मांग पेश कर दी : "मुझे पता चला है कि तुम्हारी पत्नी बहुत अच्छा कपड़ा बुन सकती है। उससे कहो कि मेरे लिए सड़क के बराबर लम्बा नीला कपड़ा बुने। लेकिन यह काम तीन दिन के अन्दर पूरा हो जाना चाहिए।"

"आप आखिर एक के बाद एक चीज की मांग क्यों करते जा रहे हैं?" तीसरे बेटे ने कहा।

"क्या तुमने खुद ही नहीं कहा था कि तुम मेरी हर मांग पूरी कर सकते हो?" मजिस्ट्रेट बोला।

तीसरे बेटे ने सोचा, इस दुष्ट मजिस्ट्रेट से बहस करना व्यर्थ है।

इसलिए गुस्से में भरकर घर लौट गया। इस बार भी उसकी पत्नी ने सान्त्वना देते हुए कहा :

"चिन्ता न करो। मैं इसका उपाय जानती हूं।" इसके बाद वह एक सफेद मछली में बदल गई और तैरती हुई अपने पिता के शीशमहल में जा पहुंची। शीशमहल से लौटते समय वह अपने साथ एक जादू की तुम्बी लेती आई, जो इसकी हर इच्छा पूरी कर सकती थी।

तीसरा बेटा जादू की तुम्बी पाकर बहुत खुश हुआ। तीसरे दिन उन्होंने नीला कपड़ा मजिस्ट्रेट के पास भेज दिया।

"यह कपड़ा कितना लम्बा है?" मजिस्ट्रेट ने पूछा। "सड़क के बराबर," तीसरे बेटे ने उत्तर दिया। "तुम कैसे जानते हो कि यह सड़क के बराबर लम्बा है?" मजिस्ट्रेट ने बौखलाकर पूछा। "अगर आप चाहें, तो नापकर देख सकते हैं," तीसरा बेटा बोला। मजिस्ट्रेट ने तुरन्त कपड़े को नापने का आदेश दे दिया। उसके कर्मचारी पूरे दिन और पूरी रात कपड़ा नापते रहे। फिर भी वह खत्म नहीं हुआ। यह देखकर मजिस्ट्रेट बदनीयती के साथ बोल पड़ा : "ठीक है, हम मान लेते हैं कि तुम पूरा कपड़ा लाए हो। लेकिन कल तुम्हें मेरे लिए कुछ लाल भेड़ें लानी होंगी!

लाल भेड़ें मिलने पर उसने भैंसों की मांग की। तीसरे बेटे को उसकी यह मांग भी पूरी करनी पड़ी। यह सिलसिला काफी समय तक चलता रहा। मजिस्ट्रेट मांग पेश करता रहा और तीसरा बेटा उसे पूरा करता रहा। यह देखकर मजिस्ट्रेट को तीसरे बेटे पर बहुत गुस्सा आया। वह बोला : "तुम इतने गरीब हो। फिर भी मेरी हर मांग कैसे पूरी कर रहे हो? तुम्हारे पास जरूर कोई जादू की चीज है। उसे फौरन मेरे सुपुर्द कर दो!"

तीसरे बेटे ने सोचा, यह मजिस्ट्रेट बड़ा लालची है। एक के बाद एक मांग करता जा रहा है! अगर जादू की तुम्बी इसे दे दूंगा, तो मेरा क्या होगा? अगर इसने किसी और चीज की मांग की, तो उसे मैं कैसे पूरा करूंगा? इसलिए वह जोर से बोला : "मैं आपकी हर मांग पूरी कर चुका

हूं। अब जादू की चीज कहां से पैदा कर सकता हूं?"

मजिस्ट्रेट गुस्से से आगबबूला हो उठा। उसने मेज पर जोर से मुक्का मारा और चिल्लाकर बोला : "मेरा हुक्म मानते हो कि नहीं? अगर जरा भी आनाकानी की, तो जेल में बन्द कर दूंगा!"

तीसरे बेटे के लिए अपना गुस्सा रोकना असम्भव हो गया। मजिस्ट्रेट के सरकारी निवास से बाहर निकलते ही वह जोर-जोर से चिल्लाने लगा : "यह मजिस्ट्रेट राक्षस है! यह मजिस्ट्रेट राक्षस है!"

मजिस्ट्रेट के गुर्गे ने सुना, तो वह दौड़ा-दौड़ा शिकायत करने जा पहुंचा। मजिस्ट्रेट ने आदमी भेजकर तीसरे बेटे को गिरफ्तार कर लिया और कालकोठरी में डाल दिया। दूसरे दिन उसे मजिस्ट्रेट के सामने पेश किया गया। मजिस्ट्रेट तीसरे बेटे पर बरस पड़ा : "तुम मुझे राक्षस कहते हो! जानते हो, राक्षस कैसा होता है? तीन दिन के अन्दर एक सौ बीस राक्षस मेरे सामने पेश करो। नहीं तो मैं तुम्हारा सिर कटवा दूंगा!"

मजिस्ट्रेट का हुक्म मानने के सिवाय तीसरे बेटे के सामने और कोई चारा नहीं था! वह घर लौट गया और पत्नी से सलाह-मशविरा करने लगा। "वह राक्षसों की मांग क्यों कर रहा है?" पत्नी ने आश्चर्य से कहा। "ठीक है, हम उसे राक्षस दे देंगे, लेकिन जादू की तुम्बी हरगिज नहीं देंगे।"

पत्नी ने जादू की तुम्बी से एक सौ बीस बड़े-बड़े कठघरों और बारह सौ चिन कोयले की मांग की। फिर उसने दस चिन कोयला हर पिंजरे में रखकर उन पर रंगीन कागज चिपका दिया। इसके बाद उसने उन पिंजरों में तेल डाला। तेल डालते ही कोयले के ढेरों में जान आ गई और वे तरह-तरह के राक्षसों में बदल गए। पिंजरों में बन्द ये राक्षस "राक्षस! राक्षस!" चिल्लाने लगे।

तीसरा बेटा राक्षसों को लेकर मजिस्ट्रेट के निवास की ओर चल पड़ा। रास्ते में राक्षसों को देखने वाले लोगों की भीड़ जमा होती गई। मजिस्ट्रेट के सरकारी निवास तक पहुंचते-पहुंचते भीड़ बढ़ती गई। मजिस्ट्रेट ने

भीड़ को हटाने और पिंजरों को नजदीक लाने का आदेश दिया। "क्या इन कठघरों में सचमुच राक्षस बन्द हैं?" उसने पूछा।

"लेकिन ये खाते क्या हैं?"

"केवल तेल पीते हैं। इन्हें केवल एक बार तेल पिलाना होता है, बार-बार पिलाने की जरूरत नहीं होती। तेल पिलाने के वाद ये कभी नहीं मरते। पर आपको इन्हें ताले में बन्द रखना होगा।"

मजिस्ट्रेट ने तीसरे बेटे से फिर कुछ नहीं कहा और उसे घर लौटने दिया।

राक्षसों को देखकर मजिस्ट्रेट बहुत खुश हुआ। उसने सोचा, क्यों न इन्हें सम्राट को भेंट कर दिया जाए। उस रात उसने राक्षसों को बहुत सा तेल पिलाया और उनकी अच्छी तरह देखभाल की।

ये राक्षस दरअसल बड़े पेटू थे। एक ही बार के भोजन में बारह सौ चिन तेल पी गए। उनके पेट इतने फूल गए कि वे रातभर चीखते-चिल्लाते रहे। यह सोचकर कि उन्हें जरूर कोई रोग हो गया है, मजिस्ट्रेट ने चिराग जलाया और उन्हें देखने जा पहुंचा। ज्योंही वह कठघरों के पास पहुंचा, चिराग की लौ से राक्षसों ने आग पकड़ ली। पलभर में आग की लपटें चारों तरफ़ फैल गईं। आग से मजिस्ट्रेट का पूरा सरकारी निवास खाक में मिल गया तथा मजिस्ट्रेट, उसके अफसर और गुर्गे सभी जलकर भस्म हो गए।

लम्बी दीवार पर पति की तलाश

(हान जाति की लोककथा)

ईसा के लगभग दो सौ साल पहले की बात है। छिन राजवंश का पहला सम्राट श ह्वाङ अभी गद्दी पर बैठा ही था। सम्राट अपनी प्रजा पर बहुत अत्याचार करता था। अपने राज्य की सुरक्षा के लिए उसने एक लम्बी दीवार बनाने का फैसला किया। दीवार के निर्माण के लिए उसने अनगिनत लोगों को देश के कोने-कोने से पकड़ लिया और उनसे बेगार कराई। निर्माण-कार्य रात-दिन चलता रहा। मजदूरों को ढेर सारी मिट्टी और ईंटें ढोनी पड़ती थीं। साथ ही उन्हें पेशकार के कोड़ों की मार और गाली-गलौज भी सहनी पड़ती थी। उन्हें भरपेट खाना नहीं मिल पाता था; उनके बदन के कपड़े तार-तार हो गए थे। हर रोज बहुत से मजदूरों की अकाल मृत्यु हो जाती थी।

नौजवान वान शील्याङ को भी सम्राट श ह्वाङ की लम्बी दीवार के निर्माण-स्थल पर बेगार करने जबरन भरती किया गया था। उसकी पत्नी एक सुन्दर और नेक स्त्री थी। उसका नाम मङ च्याङन्वी था। जब पति को लम्बी दीवार के निर्माण-स्थल पर बेगार करते काफी अरसा हो गया और उसकी कोई खबर न मिली, तो वह बहुत दुखी हुई। सोचने लगी, पति को सम्राट का न जाने कितना अन्याय-अत्याचार सहना पड़

रहा होगा। पति के विछोह में पत्नी के मन में उस दुष्ट शासक के प्रति घृणा की भावना दिन-प्रति-दिन बढ़ती गई।

तभी वसन्त का सुहावना मौसम ग्रा गया। फूल खिलने लगे। पेड़-पौधे ग्रंकुरित होने लगे। घास हरीभरी हो गई। ग्रबाबीलों के जोड़े ग्राकाश में उड़ने लगे। खेत में काम करते-करते मङ च्याङन्वी पति की याद में खो गई ग्रौर गुनगुनाने लगी :

ग्राया चैत, खिली फुलवारी,
ग्रबाबील है नीड़ सजाती,
उड़ते जोड़ों में सब पंछी,
मैं एकाकी, दुख की मारी !

वसन्त बीत गया, गरमियां गुजर गईं, शरद का मौसम ग्रा गया। लेकिन पत्नी को वान शील्याङ की कोई खबर नहीं मिली। पता चला कि लम्बी दीवार का निर्माण उत्तर की तरफ हो रहा है ग्रौर वहां इतनी ठण्ड पड़ती है कि हड्डियां कांपने लगती हैं। जब मङ च्याङन्वी को यह बात पता चली, तो उसने ग्रपने पति के लिए जल्दी-जल्दी एक रूईदार कोट सिला ग्रौर एक जोड़ी जूते बनाए। लेकिन इन चीजों को उसके पति के पास कौन ले जाता ? लम्बी दीवार वहां से इतनी दूर जो थी। वह बार-बार सोचती रही कि यह सवाल कैसे हल किया जाए। जब ग्रन्य कोई उपाय नहीं सूझा, तो उसने फैसला किया कि कपड़े ग्रौर जूते देने वह खुद ही पति के पास जाएगी।

जब मङ च्याङन्वी ने ग्रपनी यात्रा शुरू की, तो ठण्ड पड़ने लगी थी। पेड़ों से पत्ते झड़ने लगे थे। शरद की फसल भी कट चुकी थी। खेत खाली पड़े थे। उनमें कोई ग्रादमी नजर नहीं ग्रा रहा था। मङ च्याङन्वी को ग्रकेले यात्रा करने में बड़ा ग्रजीब लग रहा था। वह पहले कभी ग्रपने गांव से बाहर नहीं निकली थी। उसे रास्ता भी मालूम नहीं था। इसलिए लोगों से बार-बार रास्ता पूछना पड़ रहा था।

एक बार रात होने के पहले वह किसी गांव या कस्बे में नहीं पहुंच पाई। उसे सड़क के किनारे पेड़ों के झुरमुट के बीच एक मन्दिर में रात गुजारनी पड़ी। पूरे दिन चलने की वजह से वह बहुत थक गई थी। इसलिए पत्थर की बेंच पर लेटते ही उसे गहरी नींद आ गई। सपने में उसने देखा, उसका पति उसकी ओर आ रहा है। वह खुशी से फूली न समाई। लेकिन तभी पति ने उसे बताया कि उसकी मृत्यु हो चुकी है। यह सुनते ही वह पागलों की तरह रोने लगी . . . सुबह उठी, तो सपना याद आते ही उसका दिल आशंकाओं से भर गया। वह मन ही मन सम्राट को कोसने लगी, जिसने असंख्य लोगों को अपने परिवार से जुदा कर दिया था।

मङ च्याङन्वी ने अपनी यात्रा जारी रखी। एक दिन वह एक पहाड़ी सड़क के किनारे एक छोटी-सी सराय में पहुंची। सराय की मालकिन एक बूढ़ी स्त्री थी। मङ च्याङन्वी के थके-हारे चेहरे और धूल में सने कपड़ों को देखकर उसने पूछा कि वह कहां जा रही है। मङ च्याङन्वी ने उसे अपनी दास्तान सुना दी। बूढ़ी स्त्री का दिल पसीज गया। "हे भगवान!" उसने गहरी उसांस भरते हुए कहा, "लम्बी दीवार तो यहां से अभी बहुत दूर है। तुम्हें बहुत से पहाड़ों और नदियों को पार करना पड़ेगा। तुम जैसी कमजोर स्त्री वहां कैसे पहुंच सकती है?" लेकिन मङ च्याङन्वी ने बूढ़ी स्त्री को बताया कि वह अपने पति को जूते-कपड़े अवश्य पहुंचाएगी, चाहे रास्ते में उसे कितनी ही कठिनाइयों का सामना क्यों न करना पड़े। बूढ़ी स्त्री उसके संकल्प से बहुत प्रभावित हुई। लेकिन साथ ही चिन्तित भी हो उठी और सोचने लगी: क्या यह सकुशल लम्बी दीवार तक पहुंच भी पाएगी? दूसरे दिन वह मङ च्याङन्वी के प्रति सहानुभूति दिखाती हुई उसे कुछ दूर तक पहुंचाने भी गई।

मङ च्याङन्वी लगातार आगे बढ़ती जा रही थी। एक दिन वह पहाड़ों के बीच एक गहरी घाटी में पहुंच गई। सहसा आकाश में काले बादल घिर आए और उत्तर की तरफ से तेज हवा चलने लगी। मौसम बहुत ठण्डा हो गया। वह घाटी में लगातार चलती रही। पर उसे कहीं एक

भी घर नहीं दिखाई दिया। खरपतवार, कंटीली झाड़ियों और चट्टानों के सिवाय वहां कुछ नहीं था। सांझ होने पर अंधेरा इतना बढ़ गया कि रास्ता खोजना भी मुश्किल हो गया। पहाड़ की तलहटी में एक नदी वह रही थी। उसका पानी बिलकुल गदला था। मङ च्याङन्वी नहीं सोच पाई कि रात बिताने कहां जाए ? अन्त में उसने झाड़ियों में ही रात बिताने का फैसला किया। वह पूरे दिन की भूखी थी, इसलिए उसे जाड़ा और ज्यादा सता रहा था। यह सोचकर कि इस बरफीले मौसम में उसका पति कितनी तकलीफ उठा रहा होगा, उसका दिल भर आया। उसे लगा, मानो किसी ने उसके कलेजे पर छुरी भोंक दी हो।

दूसरे दिन मङ च्याङन्वी की आंख खुली तो उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा। पूरी घाटी बरफ से ढकी हुई थी। उसके शरीर पर भी बरफ की तहें जम गई थीं। अब वह आगे की यात्रा कैसे जारी रख सकेगी ? अभी वह यह सब सोच ही रही थी कि अचानक एक कौवा कहीं से उड़ता हुआ आया और उसके सामने बैठ गया। कौवे ने दो बार 'कांव-कांव' की और कुछ दूर उड़ने के बाद फिर उसके सामने आ बैठा। कुछ देर में कौवे ने फिर दो बार 'कांव-कांव' की। मङ च्याङन्वी ने सोचा, यह पक्षी उसे अपने पीछे चलने का संकेत दे रहा है। इसलिए उसने अपनी यात्रा फिर शुरू कर दी। कौवे का साथ होने के कारण वह कुछ खुश नजर आ रही थी। चलते-चलते वह गुनगुनाने लगी।

बरस रहा हिम आसमान से
धवल हुई धरती,
पहुंचाऊंगी पति को कपड़े
बाधा लांघ सभी,
कौवा साथी मेरा, मुझको
राह दिखाने आया,
मंजिल अब भी दूर, दूर मेरे
प्रीतम का साया।

इस तरह वह अनेक पहाड़ों और छोटी-बड़ी नदियों को पार करती हुई आगे बढ़ती गई।

कई दिनों की यात्रा के बाद आखिरकार लम्बी दीवार आ ही गई। उसे देखते ही वह खुशी से झूम उठी। दीवार पहाड़ों के ऊपर एक अजगर की तरह दूर तक फैली हुई थी। वहां हवा बहुत ठण्डी थी और पहाड़ केवल सूखी घास से ढके हुए थे। पेड़ों का कहीं नामोनिशान भी न था। लम्बी दीवार के आसपास आदमी ही आदमी नजर आ रहे थे। ये वही लोग थे जिन्हें इसका निर्माण करने के लिए जबरन यहां लाया गया था।

मङ च्याङन्वी लम्बी दीवार के साथ-साथ चलती हुई वहां काम कर रहे मजदूरों के बीच अपने पति को खोजती जा रही थी। अपने पति के बारे में उसने कई मजदूरों से पूछा। पर उसका आता-पता कोई नहीं बता पाया। रास्ते में जो भी मिलता, उससे पति के बारे में पूछती।...

उसने देखा, सभी मजदूरों के चेहरे पीले पड़ गए हैं, आंखें धंस गई हैं, गाल पिचक गए हैं। कई मजदूर मर चुके थे। उनकी लाशें इधर-उधर पड़ी थीं। उनकी तरफ कोई देख भी नहीं रहा था। मङ च्याङन्वी को अपने पति की और ज्यादा चिन्ता होने लगी। वह आंसू बहाती रही और पति की खोज करती रही।

अन्त में उसे अपने पति के दुखद अन्त का पता चल गया। कमरतोड़ श्रम करता-करता वह काफी पहले ही मर चुका था। उसकी लाश लम्बी दीवार के नीचे गाड़ दी गई थी। यह दुखमय समाचार सुनकर मङ च्याङन्वी मूर्छित हो गई। कुछ मजदूरों ने उसे होश में लाने की कोशिश की। पर उसकी बेहोशी दूर होने में बहुत समय लगा। होश में आते ही उसने फिर रोना शुरू कर दिया। कई दिनों तक उसकी आंखों

से लगातार आंसू बहते रहे। उसे रोता देख बहुत से मजदूरों की आंखें गीली हो गईं। वह इतनी जोर से विलाप करने लगी कि अचानक लम्बी दीवार का लगभग दो सौ मील लम्बा हिस्सा चरमराकर गिर पड़ा। तभी तेज आंधी आई और दीवार का मलबा आकाश में उड़ने लगा।

"मङ च्याङन्वी के आंसुओं के प्रवाह से ही लम्बी दीवार गिर पड़ी है!" लोग आश्चर्य से एक-दूसरे से कहने लगे। वे दुष्ट सम्राट से नफरत करने लगे, क्योंकि उसने मजदूरों को सिवाय दुख के और कुछ नहीं दिया था।

जब सम्राट को पता चला कि मङ च्याङन्वी ने लम्बी दीवार को चकनाचूर कर दिया है, तो वह उससे मिलने खुद जा पहुंचा। सम्राट देखना चाहता था कि वह कैसी स्त्री है। जब सम्राट ने देखा कि मङ च्याङन्वी परी जैसी खूबसूरत है, तो उसने उसे अपनी रानी बनाना चाहा।

पर मङ च्याङन्वी दुष्ट सम्राट से बेहद नफरत करती थी। इसलिए उसका प्रस्ताव मानने का सवाल ही नहीं उठता था। पर उसने अपना उद्देश्य पूरा करने के लिए बड़ी सूझबूझ से काम लिया। वह सम्राट से बड़े आदर के साथ बोली : "अगर आप मेरी तीन मांगें पूरी कर दें, तो मैं अवश्य आपकी रानी बन जाऊंगी।" जब सम्राट ने पूछा कि वे तीन मांगें कौन सी हैं, तो मङ च्याङन्वी ने कहा : पहले, मेरे पति को चांदी के ढक्कन वाले सोने के ताबूत में दफनाया जाए ; दूसरे, आपके सभी मंत्री व सेनापति मेरे पति के लिए मातम मनाएं और उनके जनाजे के जलूस में शामिल हों ; तीसरे, आप खुद भी उनके जनाजे के जलूस में शामिल हों और उनके बेटे की तरह मातम मनाएं।

सम्राट मङ च्याङन्वी की सुन्दरता पर मोहित था। इसलिए उसने उसकी सभी मांगें स्वीकार कर लीं।

मङ च्याङन्वी की मांग के अनुसार सब चीजों की व्यवस्था कर दी गई। जनाजे के जलूस में ताबूत के ठीक पीछे सम्राट श ह्वाङ चल रहा था और उसके पीछे-पीछे दरबारी व सेनापति चल रहे थे। सम्राट अपनी होने वाली रानी की सुन्दरता देखकर मन ही मन बहुत खुश हो रहा था।

जब मङ च्याङन्वी के पति को अच्छी तरह दफना दिया गया, तो वह कब्र के सामने घुटने टेककर पति की याद में देर तक जोर-जोर से रोती रही। फिर वह उठी और पास ही बहने वाली एक नदी में कूद पड़ी। अपनी इच्छा पूरी न होती देखकर सम्राट आगबबूला हो गया। उसने अपने सेवकों को हुक्म दिया कि उसे फौरन पानी से बाहर निकाल लाएं। लेकिन सेवकों के नदी में कूदने से पहले ही मङ च्याङन्वी एक सुन्दर रुपहली मछली बन गई और बड़ी शान से तैरती हुई नदी के नीले पानी की गहराइयों में विलीन हो गई।

जैतून झील

(हान जाति की लोककथा)

हजारों साल पुरानी बात है। एक मां और उसका इकलौता बेटा जैतून पर्वत की तलहटी में जैतून झील के पास एक गांव में रहते थे। दोनों बहुत गरीब थे। मां काफी बूढ़ी थी और कामकाज करने में असमर्थ थी। नौजवान बेटे ने जमींदार से जमीन का एक टुकड़ा काश्त के लिए ले लिया और उस पर दिनरात कमरतोड़ मेहनत करने लगा। फिर भी उसकी गरीबी ज्यों की त्यों बनी रही। मां-बेटे को भरपेट खाना-कपड़ा भी नसीब नहीं हो पाता था।

नौजवान मन ही मन सोचने लगा: "जैतून झील में हमेशा लहरें उठती रहती हैं, फिर भी उसका पानी गदला क्यों रहता है? मैं दिनरात कठोर परिश्रम करता रहता हूं, फिर भी इतना गरीब क्यों हूं?"

किसी ने उसे बताया कि कठिनाई के समय पश्चिमी स्वर्ग के देवता से राय लेना अच्छा होता है। नौजवान ने अपने प्रश्न के समाधान के लिए पश्चिमी स्वर्ग के देवता के पास जाने का फैसला कर लिया।

वह इरादे का पक्का था। जो भी काम सोचता, उसे पूरा करके ही छोड़ता। घर पर उसने इतना ईंधन, चावल, नमक और तेल रख दिया जिससे उसकी मां काफी दिनों तक काम चला सकती थी। फिर पश्चिमी

स्वर्ग के देवता से मिलने चल पड़ा।

वह उनचास दिन लगातार पश्चिम की ओर चलता रहा। चलते-चलते उसे बहुत थकान महसूस हुई और प्यास लग आई। उसने रास्ते के किनारे बनी एक झोंपड़ी पर दस्तक दी और पीने के लिए पानी मांगा।

झोंपड़ी के अन्दर से एक दयालु बुढ़िया बाहर निकली। उसने नौजवान को अन्दर बुला लिया और उसका खूब आदर-सत्कार किया। इसके बाद उसने पूछा : "बेटा, तुम हांफते हुए इतनी तेजी से कहां जा रहे हो?"

"मैं पश्चिमी स्वर्ग की ओर जा रहा हूं, मांजी," उसने उत्तर दिया, "मैं पश्चिमी स्वर्ग के देवता से पूछना चाहता हूं कि हमेशा लहरें उठती रहने पर भी जैतून झील का पानी गदला क्यों रहता है और दिनरात कठोर परिश्रम करते रहने पर भी मैं इतना गरीब क्यों हूं?"

यह सुनकर बुढ़िया बड़ी खुश हुई और मुस्कराती हुई बोली : "बेटा, क्या तुम मेरे भी एक सवाल का जवाब देवता से पूछ लाओगे? मेरी लड़की अठारह वर्ष की हो गई है। वह बहुत सुन्दर है, बुद्धिमान है, हर काम में निपुण है। लेकिन अभी तक उसके मुंह से एक भी बोल नहीं निकल पाया। इसलिए मैं बड़ी चिन्तित हूं। क्या तुम देवता से पूछ सकते हो कि वह बोलती क्यों नहीं?"

"ठीक है, मैं आपके प्रश्न का उत्तर देवता से जरूर पूछ लाऊंगा," नौजवान ने वायदा किया।

एक रात बुढ़िया के घर विश्राम करने के बाद उसने अपनी यात्रा जारी रखी। वह फिर उनचास दिन लगातार चलता रहा। चलते-चलते उसे बड़ी थकान महसूस होने लगी। अंधेरा होने जा रहा था। उसने रास्ते के किनारे बनी एक झोंपड़ी का दरवाजा खटखटाया।

एक बूढ़े आदमी ने दरवाजा खोला और उसे अन्दर बुला लिया। उसने नौजवान को अच्छी तरह खिलाने-पिलाने के बाद उससे पूछा : "पसीने से लथपथ होकर तुम इतनी तेजी से कहां जा रहे हो?"

"मैं पश्चिमी स्वर्ग की तरफ जा रहा हूं। मैं पश्चिमी स्वर्ग के देवता

से पूछना चाहता हूं कि जैतून झील का पानी हमेशा लहरें उठने पर भी गदला क्यों रहता है और मैं दिनरात कठोर परिश्रम करने पर भी इतना गरीब क्यों हूं ?" नौजवान ने जवाब दिया।

बूढ़े आदमी ने हंसते हुए कहा : "मेरी किस्मत अच्छी है जो तुम आ गए। मुझे भी एक सवाल पूछना है : मेरे बगीचे में सन्तरे का एक हराभरा पेड़ है। क्या कारण है कि उसमें फल नहीं लगते ?"

"मैं इसका कारण जरूर मालूम कर लूंगा," नौजवान ने वायदा किया। दूसरे दिन उसने अपनी यात्रा फिर शुरू कर दी।

चलते-चलते वह प्रचण्ड लहरों वाली एक बड़ी नदी के किनारे जा पहुंचा। पार जाने के लिए वहां कोई नाव नहीं थी। वह नहीं समझ पाया कि नदी कैसे पार की जाए ? नदी के किनारे एक बड़ी-सी चट्टान पर बैठकर वह उस पार जाने का तरीका सोचने लगा। अचानक हवा का एक तेज झोंका आया। आसमान में काले बादल छा गए और नदी से किसी के गरजने की आवाज सुनाई दी। कुछ देर में आंधी थम गई और आसमान

में एक सुन्दर-सा रंगीन वादल दिखाई देने लगा। नदी की तज लहरों से एक ड्रैगन प्रकट हुआ और नौजवान से बोला :

"नौजवान भाई, इतनी तेजी से कहां भागे जा रहे हो?"

"मैं पश्चिमी स्वर्ग की तरफ जा रहा हूं। पश्चिमी स्वर्ग के देवता से पूछना चाहता हूं कि हमेशा लहरें उठने पर भी जैतून झील का पानी गदला क्यों रहता है और दिनरात कठोर परिश्रम करने पर भी मैं इतना गरीब क्यों हूं?" नौजवान ने जवाब दिया।

"भाई, क्या देवता से मेरा भी एक प्रश्न पूछ सकोगे? मैं न मनुष्य को हानि पहुंचाता हूं और न पशु-पक्षियों को, फिर भी एक हजार साल से यहां सजा पा रहा हूं। मुझे अभी तक स्वर्गलोक में जगह क्यों नहीं मिली?"

"मैं तुम्हारे प्रश्न का उत्तर अवश्य मालूम करूंगा," नौजवान ने वायदा किया। ड्रैगन ने उसे अपनी पीठ पर बिठाकर नदी पार करा दी। पश्चिम की ओर एक दिन से अधिक यात्रा करने के बाद वह एक विशाल प्राचीन नगर के एक आलीशान महल के पास जा पहुंचा। उसने द्वारपाल से पूछा कि पश्चिमी स्वर्ग के देवता कहां रहते हैं। द्वारपाल उसे एक शानदार भवन में ले गया। भवन के बीचोंबीच एक हंसमुख बूढ़ा व्यक्ति बैठा था। उसकी दाढ़ी और सिर के वाल सन की तरह सफेद हो चुके थे। शायद पश्चिमी स्वर्ग के देवता यही हैं, नौजवान ने मन ही मन सोचा। उसके कुछ कहने से पहले ही बूढ़े व्यक्ति ने मुस्कराकर पूछा :

"नौजवान, तुम इतनी दूर किसलिए आए हो?"

"मैं आपसे चार प्रश्न पूछने आया हूं।"

पश्चिमी स्वर्ग के देवता ने उसकी वात स्वीकार कर ली। पर एक शर्त लगा दी :

"हमारे यहां एक खास नियम है : तुम एक प्रश्न पूछ सकते हो, दो नहीं ; तीन प्रश्न पूछ सकते हो, चार नहीं ; विषम संख्या में चाहे जितने प्रश्न पूछ सकते हो, पर सम संख्या में नहीं। तुम मुझसे चार प्रश्न नहीं बल्कि सिर्फ तीन प्रश्न पूछ सकते हो।"

नौजवान को यह तय करने में बड़ी कठिनाई हुई कि अपने चार प्रश्नों में से कौन सा प्रश्न न पूछे। वह काफी देर तक सोचता रहा : "मेरा अपना प्रश्न तो महत्वपूर्ण है ही, पर बाकी तीन प्रश्न भी कम महत्वपूर्ण नहीं हैं। लेकिन पश्चिमी स्वर्ग के देवता ने केवल तीन प्रश्न पूछने की इजाजत दी है। इसलिए अच्छा यह होगा कि मैं अपना प्रश्न न पूछूं और दूसरों के पूछ लूं।" उसने अपना प्रश्न न पूछने और बाकी तीन प्रश्न पूछने का फैसला कर लिया।

तीनों प्रश्नों का सन्तोषजनक उत्तर पाने के बाद वह पश्चिमी स्वर्ग के देवता के महल से खुशी-खुशी लौट गया।

नदी के किनारे ड्रैगन उसका इन्तजार कर रहा था। "मेरे प्रश्न का क्या हुआ ?" वह बोला।

"पश्चिमी स्वर्ग के देवता ने कहा है, अगर तुम स्वर्गलोक में जाना चाहते हो, तो तुम्हें दो जरूरी काम करने होंगे।"

"कौन से दो काम ? जल्दी बताओ !" ड्रैगन ने अनुरोध किया।

"पहला काम यह है कि तुम मुझे नदी पार करवाओगे। दूसरा काम यह है कि उस मोती को उतार फेंकोगे जो रात के समय तुम्हारे सिर पर चमकता रहता है।"

ड्रैगन ने उसे नदी पार करवा दी। फिर उसकी मदद से अपने सिर का मोती उतार फेंका। ऐसा करते ही ड्रैगन के सिर पर दो सींग उग आए और वह एकदम स्वर्गलोक की ओर उड़ गया। बादलों को चीरते हुए आकाश में पहुंचकर उसने नौजवान से कहा :

"मेरे सिर का मोती तुम उठा लेना। यह मेरी तरफ से तुम्हारे लिए एक तोहफा है !"

नौजवान उस चमकीले मोती को उठाकर घर की ओर चल पड़ा। जब वह बूढ़े आदमी की झोपड़ी में पहुंचा, तो उसने पूछा : "क्या तुम मेरे प्रश्न का उत्तर लाए हो ?"

"हां, ले आया हूं। पश्चिमी स्वर्ग के देवता ने कहा है कि तुम्हारे बगीचे

के तालाव के नीचे सोने से भरे नौ कलश तथा चांदी से भरे नौ कलश दबे हुए हैं। अगर तुम उन कलशों को वाहर निकाल लो और तालाव के पानी से सन्तरे के पेड़ को सींचो, तो उस पर फल आने लगेंगे।"

बूढ़े आदमी ने अपने बेटे को बुलाया और दोनों ने मिलकर तालाब का पानी वाहर निकाल दिया। इसके बाद उन्होंने तालाव को खोदना शुरू कर दिया। इस काम में नौजवान ने भी उनकी मदद की। वे लोग कुछ देर तक खोदते रहे। पर उन्हें न सोने से भरे कलश दिखाई दिए और न चांदी से भरे कलश। फिर भी वे निराश नहीं हुए और लगातार खोदते चले गए। अन्त में उन्हें सोने से भरे नौ कलश और चांदी से भरे नौ कलश मिल गए। जैसे ही उन्होंने उन कलशों को बाहर निकाला, तालाब के नीचे से साफ पानी क़ा एक चश्मा फूट पड़ा। पलभर में सारा तालाब पानी से भर गया।

बूढ़े आदमी ने साफ पानी से सन्तरे के पेड़ को सींचा। पानी डालते ही पेड़ की हर शाख पर फल आ गए। जल्दी ही पूरा पेड़ सुनहरे रंग के सन्तरों से लद गया। यह देखकर बूढ़ा आदमी बहुत खुश हुआ। वह नहीं समझ पाया कि किन शब्दों में उसे धन्यवाद दे।

उसने नौजवान से कुछ दिन वहीं रुकने का आग्रह किया और तोहफे के रूप में उसे बहुत-सा सोना-चांदी भेंट किया। लेकिन नौजवान को जल्दी घर लौटना था। इसलिए उससे विदा होकर आगे चल पड़ा। रात को चमकने वाला मोती और बहुत-सा सोना-चांदी लेकर वह दयालु बुढ़िया के पास जा पहुंचा।

बुढ़िया उससे मिलने दौड़कर झोंपड़ी से वाहर निकल आई और बोली :

"तुमने मेरा काम किया कि नहीं ?"

"हां," उसने उत्तर दिया। "पश्चिमी स्वर्ग के देवता ने कहा है कि तुम्हारी लड़की तभी बोलेगी, जब वह अपनी पसन्द के किसी नौजवान की तरफ प्यार से देखेगी।"

बुढ़िया अभी नौजवान से बात कर ही रही थी कि उसकी लड़की वहां आ पहुंची। नौजवान को देखते ही उसका चेहरा लज्जा से गुलाब की तरह लाल हो गया और वह मुस्कराने लगी। फिर उसने धीरे से पूछा : "ये कौन हैं, मां ?"

यह सुनते ही बुढ़िया खुशी से फूली न समाई। उसने लड़की को गले से लगा लिया। खुशी के मारे उसकी आंखों में आंसू छलछला आए। नौजवान बड़ा सुन्दर, हृष्टपुष्ट और ईमानदार था। इसलिए दयालु बुढ़िया ने अपनी लड़की से कहा :

"बेटी, आज का दिन बड़ा शुभ है। आज तुम अपनी जिन्दगी में पहली बार कुछ बोली हो। अगर आज ही इस सुन्दर नौजवान के साथ तुम्हारी शादी कर दी जाए, तो कैसा रहेगा ?"

दोनों की शादी हो गई। एक-दो रोज वहां रहने के बाद नौजवान ने अपनी सास से विदा ली और अपनी पत्नी के साथ खुशी-खुशी घर की ओर चल पड़ा। उसके पास रात को चमकने वाला मोती और बहुत-सा सोना-चांदी भी था।

जब घर पहुंचा तो उसने देखा, बेटे की प्रतीक्षा में उसकी बूढ़ी मां की आंखें रोते-रोते अन्धी हो गई हैं।

नौजवान सोचता था कि उसकी मां अपनी सुन्दर और चतुर बहू को देखकर बड़ी खुश होगी। पर वह बहू के मुलायम चेहरे पर हाथ फेरकर उसके तीखे नाक-नक्श का अनुमान लगाने के सिवाय और कुछ नहीं कर पाई। वह सोचता था कि उसकी मां सोना-चांदी देखकर बहुत खुश होगी। पर वह केवल सोने-चांदी की आवाज सुनकर तसल्ली करने के सिवाय और कुछ नहीं कर पाई। नौजवान ने चमकदार मोती निकालकर मां की आंखों के चारों तरफ घुमाया। पर मोती की चमक-दमक मां को बिलकुल नहीं दिखाई दी। उसे अन्धकार के सिवाय और कुछ नजर नहीं आ रहा था।

यह देखकर नौजवान को बहुत दुख हुआ। उसने मन ही मन सोचा :

"काश, मेरी मां की ग्रांखों में फिर एक बार रोशनी ग्रा सकती!" जैसे ही उसके मन में यह विचार ग्राया, उसकी मां की ग्रांखों की रोशनी लौट ग्राई।

ग्रपनी मनोकामना एकदम पूरी होती देख नौजवान ग्राश्चर्य में पड़ गया। मोती को हिलाते हुए उसने फिर सोचा :

"ग्रगर गांव में जमींदार न होते, तो गरीबों का शोषण न होता!" उसके यह सोचते ही गांव के सब जमींदार मर गए।

ग्रब नौजवान को पता चला कि यह कोई साधारण मोती नहीं है। यह न केवल रात में चमकता है बल्कि लोगों की मनोकामना भी पूरी कर सकता है।

उस दिन से जैतून झील का पानी गदला नहीं रह गया ग्रौर उस गांव के गरीब लोग सुखमय जीवन बिताने लगे।

अलगौझा

(थुङ जाति की लोककथा)

बहुत पुरानी बात है। एक गांव में दो भाई रहते थे। बड़े भाई का नाम था ता लाङ और छोटे भाई का नाम था श्याओ लाङ। अभी वे बच्चे ही थे कि उनके माता-पिता स्वर्ग सिधार गए। दोनों भाइयों के पास माता-पिता की एकमात्र सम्पत्ति थी – घटिया किस्म की थोड़ी-सी जमीन, एक बैल और एक बादामी कुत्ता। इनके अलावा उनके पास कुछ नहीं था।

बड़ा भाई ता लाङ बड़ा आलसी था। वह खेत में काम करने के बजाय दिनभर घर में ही पड़ा रहता था। बैल की देखभाल करने और जमीन जोतने का सारा काम छोटा भाई ही करता था।

एक दिन बड़े भाई के मन में एक विचार आया। उसने छोटे भाई से कहा : "जब पेड़ बड़ा हो जाता है, तो उसमें शाखें फूट जाती हैं। जब बच्चे बड़े हो जाते हैं, तो वे अपनी जमीन-जायदाद का बंटवारा कर लेते हैं। अब हम दोनों बड़े हो गए हैं, इसलिए हमें भी अपनी जमीन-जायदाद भाग में बांट लेनी चाहिए और अलग-अलग रहना चाहिए।"

"लेकिन हम दोनों में तो खूब मेल-मिलाप है," छोटे भाई ने जवाब दिया। "आखिर हमें अलग होने की क्या जरूरत है?"

पर बड़ा भाई नहीं माना। वह नाराज होकर बोला, "मैं तुम्हें साफ-साफ बता देना चाहता हूं कि अब हम दोनों एक दिन भी साथ नहीं रह सकते। मैं तुम्हारे लिए रोज खाना तैयार करता हूं और तुम हाथ पर हाथ धरे बैठे रहते हो! अब मैं यह काम एक दिन भी नहीं करूंगा।"

श्याश्रो लाङ अपने बड़े भाई को समझाने में सफल न हो सका। दोनों भाई अलग हो गए। बंटवारे में बड़े भाई ने चालाकी से अच्छे-अच्छे खेतों और बैल पर खुद कब्जा कर लिया। छोटे भाई के हिस्से एक बादामी कुत्ता और कुछ अनुपजाऊ खेत आए।

इस तरह उस छोटी-सी सम्पत्ति का दोनों भाइयों में विभाजन हो गया। पर बड़े भाई के आलसीपन में कोई कमी न आई। उसका बैल भूख के मारे दिन-ब-दिन दुबला होता गया और लड़खड़ाकर चलने लगा। दूसरी ओर छोटा भाई अपने कुत्ते को खूब अच्छी तरह खिलाता-पिलाता था। इसलिए उसका कुत्ता खूब मोटा-ताजा होता गया। वह रोज पहाड़ पर लकड़ी काटने जाता और कुत्ते को भी साथ ले जाता। इस तरह वह सुख-चैन से जिन्दगी बिताने लगा।

वसन्त की जुताई का समय आया, तो श्याश्रो लाङ चिन्ता में पड़ गया। उसके पास बैल नहीं था। बैल के बिना वह जुताई कैसे करेगा? यह सोचकर उसकी भूख-प्यास गायब होने लगी।

एक दिन जब श्याश्रो लाङ चिन्तातुर होकर आग के पास बैठा ऊंघ रहा था, तो कुत्ता उसके करीब आकर भौंकने लगा। श्याश्रो लाङ हड़-बड़ाकर उठ बैठा। उसने जल्दी-जल्दी अपनी गेंती-कुदाली उठाई और कुत्ते के साथ खेतों की तरफ चल पड़ा। कुछ देर काम करने के बाद वह थक गया और हांफता हुआ जमीन पर बैठ गया। कुत्ता फिर उसकी तरफ मुंह करके भौंकने लगा। "मेरे प्यारे कुत्ते, तुम क्यों भौंक रहे हो?" श्याश्रो लाङ ने पूछा। "क्या तुम मेरे खेत जोत सकते हो?"

कुत्ता खेतों में ऐसे घूमने लगा, मानो हल चला रहा हो। यह देखकर

श्याओ लाङ ने फैसला किया कि वह जमीन जोतने के लिए बैल के बदले अपने कुत्ते को इस्तेमाल करेगा। उसने एक छोटा-सा हल बनाया, जिसे उसका कुत्ता खींच सकता था। इस तरह वह रोजाना अपने खेत जोतने लगा।

ता लाङ ने जब यह देखा कि छोटे भाई की जमीन पर बड़ी अच्छी जुताई हुई है, तो उसे बड़ा ताज्जुब हुआ।

"श्याओ लाङ, तुम्हारे खेत किसने जोते हैं?" बड़े भाई ने पूछा।

"मैंने खुद ही जोते हैं।"

"बैल कहां से लाए?"

"मेरे पास मेरा दोस्त कुत्ता जो मौजूद है!"

ता लाङ ने जब यह सुना कि उसके खेत कुत्ते ने जोते हैं, तो उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा। अपने खेत जोतने के लिए उसने कुछ दिनों के लिए छोटे भाई से उसका कुत्ता मांग लिया।

पर ता लाङ के खेतों में कुत्ता टस से मस न हुआ। यह देखकर ता लाङ को बेहद गुस्सा आया और उसने उस निरीह प्राणी को जान से मार डाला।

अंधेरा होता जा रहा था। कुत्ता अभी वापस नहीं लौटा था। श्याओ लाङ कुत्ते के बारे में पूछताछ करने बड़े भाई के घर गया।

"भैया, मेरा कुत्ता कहां है?"

"कौन जाने तुम्हारा कुत्ता कहां चला गया?"

बड़े भाई का खूंखार चेहरा देखकर छोटा भाई कुछ न बोला। कुत्ते की तलाश में वह जगह-जगह मारा-मारा फिरा। पर कहीं उसकी छाया तक न दिखाई दी। निराश होकर घर लौट रहा था, तो अचानक एक झाड़ी के पास कुत्ते की लाश मिल गई। श्याओ लाङ का दिल टुकड़े-टुकड़े हो गया। उसने अपने प्यारे कुत्ते को उठाया और आंसू बहाता हुआ घर की तरफ चल पड़ा। शोक में डूबा वह रास्तेभर गाता रहा :

"जायदाद के बंटवारे में मिला मुझे एक कुत्ता,
खेत जोतता, हाथ बंटाता मेरा प्यारा कुत्ता।
हाय, प्राण हर लिए न जाने किस जालिम ने उसके,
मेरे प्यारे साथी नन्हे बेजबान कुत्ते के!"

श्याश्रो लाङ ने अपने कुत्ते को मिट्टी के एक टीले के नीचे दफना दिया और सुबह-शाम बेनागा उसकी कब्र पर जाने लगा।

एक दिन सुबह के समय उसने देखा, कुत्ते की कब्र पर बांस का एक चमकदार सुनहरा पौधा उग रहा है। जब शाम को वहां गया, तो ताज्जुब में पड़ गया। पौधा बांस का एक खूबसूरत लम्बा पेड़ बन चुका था। श्याश्रो लाङ खुशी से फूला न समाया और बांस के तने को जोर-जोर से हिलाता हुआ गुनगुनाने लगा :

"सुनो कल्पतरु, सुनो जरा विनती मेरी,
भर दो सोने-चांदी से झोली मेरी!
सुबह मुझे दो सोना तोले एक हजार,
सांझ समय तुम चांदी की कर दो भरमार।"

ज्योंही उसने गाना समाप्त किया, बांस के पेड़ से सोने-चांदी और हीरे-जवाहरात की वर्षा होने लगी। उसने ये मूल्यवान चीजें फौरन अपनी झोली में भर लीं और घर लौट गया। बाद में जब भी वह कुत्ते की कब्र पर जाता, हर बार बांस के पेड़ को हिलाकर वही पंक्तियां गाता। गाना खत्म होते ही ढेर सारा सोना-चांदी जमीन पर बरसने लगता।

जब बड़े भाई को मालूम हुआ कि छोटे भाई के पास बहुत-सा सोना-चांदी है, तो उसने छोटे भाई से पूछा :

"श्याश्रो लाङ, तुमने इतना सोना-चांदी कहां से चुराया है?"

"मैंने इसे कहीं से नहीं चुराया। मुझे तो यह सब अपने कुत्ते की कब्र पर उगे बांस के पेड़ को हिलाने से मिला है।"

"क्या तुम सच कह रहे हो? क्या अब भी वहां कुछ सोना-चांदी बाकी है?" ता लाङ ने सवाल किया।

"हां, वहां अब भी बहुत सा सोना-चांदी बाकी है। तुम बांस के पेड़ को हिलाना और सोना-चांदी जमीन पर गिरने लगेगा।"

"तुम बांस के पेड़ को कैसे हिलाते हो?"

श्याओ लाङ ने अपने बड़े भाई को सच-सच बता दिया कि वह बांस के पेड़ से सोना-चांदी कैसे प्राप्त करता है।

ता लाङ ने जल्दी-जल्दी दो टोकरियां उठाईं और टीले पर बनी कुत्ते की कब्र की ओर दौड़ पड़ा। कब्र पर उगे बांस को हिलाकर वह अपना गाना शुरू करने ही वाला था कि वहां सोने-चांदी के बदले इल्लियों की वर्षा होने लगी। शीघ्र ही उसका सिर, चेहरा और पूरा शरीर इल्लियों से भर गया। इतना ही नहीं, इल्लियां उसके कपड़ों के अन्दर घुस गईं और उसके शरीर में रेंगने लगीं। उसके सारे शरीर में खुजली मचने लगी और वह परेशान होकर जमीन पर लुढ़क गया।

ता लाङ क्रोध से आगबबूला हो उठा। वह दौड़कर घर गया और एक गड़ासा उठा लाया। गड़ासे से उसने बांस के पेड़ को काट डाला।

दूसरे दिन श्याओ लाङ हमेशा की तरह कुत्ते की कब्र पर गया, तो बांस का पेड़ कटा देखकर उसे बेहद दुख हुआ। उसने पेड़ को उठा लिया और दुखी होकर गुनगुनाने लगा :

"जायदाद के बंटवारे में मिला मुझे एक कुत्ता,
खेत जोतता, हाथ बंटाता मेरा प्यारा कुत्ता!
हाय, प्राण हर लिए न जाने किस जालिम ने उसके,
मेरे प्यारे साथी नन्हे बेजबान कुत्ते के!
मेरे कुत्ते की समाधि पर उग आया एक बांस,
रोज सुबह सोना बरसाता, चांदी हरदिन सांझ!
हाय न जाने किस जालिम ने काट दिया यह बांस!
टूट गया दिल, जीवन में अब रही न कोई आस!"

श्याग्रो लाङ ने बांस को चीरकर उससे मुर्गियों का दरबा बना लिया ग्रौर उसे ग्रपने घर के वाहर रख दिया। वह सोच रहा था कि उसे मेले में बेच देगा। लेकिन इस बीच पड़ोस की बहुत सी मुर्गियों ग्रौर तीतरों ने श्याग्रो लाङ के दरबे में ग्रण्डे दे दिए। इस तरह श्याग्रो लाङ के पास बहुत से ग्रण्डे हो गए।

उसका चेहरा खुशी से खिल उठा। वह ग्रण्डों को बाजार में बेच ग्राया। बड़े भाई ने ग्रण्डों के बारे में सुना, तो वह श्याग्रो लाङ के पास जा पहुंचा ग्रौर बोला :

"तुमने ये ग्रण्डे कहां से चुराए, श्याग्रो लाङ ?"

"मैंने उन्हें चुराया नहीं। मुर्गियों ग्रौर तीतरों ने मेरे दरबे में ग्राकर ग्रपने ग्राप ग्रण्डे दे दिए।"

"श्याग्रो लाङ, क्या तुम ग्रपना दरबा एक महीने के लिए मुझे दे सकते हो ?"

श्याग्रो लाङ एक नेक ग्रौर सीधा-सच्चा ग्रादमी था। उसने ग्रपना दरवा एक महीने के लिए बड़े भाई को दे दिया।

ता लाङ ने उसे ग्रपने घर की ग्रोलती के नीचे रख दिया। थोड़ी देर में मुर्गियों ग्रौर मादा तीतरों का झुण्ड उसके दरबे में ग्रा पहुंचा। मुर्गियां "कुकड़ू-कूं" की ग्रावाज करने लगीं।

ता लाङ फौरन देखने जा पहुंचा। लेकिन जब उसने ग्रपना हाथ दरबे में डाला, तो उसके हाथ ग्रण्डों के बदले गन्दगी लगी। उसे इतना गुस्सा ग्राया कि उसने दरबे को तोड़ डाला ग्रौर जला दिया।

श्याग्रो लाङ को जब यह पता चला कि उसके वड़े भाई ने दरबे को जला दिया है, तो उसे बड़ा दुख हुग्रा। वह उसकी सारी राख उठाकर ग्रपने घर ले गया। रास्तेभर उसका मन दुखी रहा ग्रौर वह गुनगुनाता रहा :

"जायदाद के बंटवारे में मिला मुझे एक कुत्ता,
खेत जोतता, हाथ बंटाता मेरा प्यारा कुत्ता !
हाय, प्राण हर लिए न जाने किस जालिम ने उसके !
मेरे प्यारे साथी नन्हे बेजबान कुत्ते के !
मेरे कुत्ते की समाधि पर उग आया एक बांस,
रोज सुबह सोना बरसाता, चांदी हरदिन सांझ !
हाय, न जाने किस जालिम ने काट दिया वह बांस !
टूट गया दिल, जीवन में अब रही न कोई आस !
कटे बांस से रचा एक छोटा-सा दरबा मैंने,
मुर्गी-तीतर खुश हो आते उसमें अण्डे देने।
हाय, न जाने किस जालिम ने भस्म उसे कर डाला !
मेरी सारी आशाओं पर आज पड़ गया पाला !

श्याओ लाङ के पास अब कुछ नहीं बचा था। उसका प्यारा कुत्ता, सोना-चांदी बरसाने वाला बांस का पेड़, मुर्गी-तीतर के अण्डे देने वाला बांस का दरबा, सभी कुछ चला गया था। उसने अपनी गैंती उठाई और बंजर जमीन के एक टुकड़े को खेत में बदलने अकेला ही पहाड़ पर चला गया। जब खेत तैयार हो गया, तो उसने उसमें दरबे की राख खाद के रूप में डाल दी और कद्दू के बीज बो दिए।

बीज जल्दी ही अंकुरों में बदल गए। पहले दिन कोंपलें फूट गईं; दूसरे दिन पत्तियां चमकने लगीं; तीसरे दिन कद्दू की बेलें चारों तरफ फैलने लगीं, चौथे दिन पूरी पहाड़ी ढलान कद्दू की बेलों से ढक गई, पांचवें दिन समूचे पहाड़ पर कद्दू के सुनहरे फूल खिल उठे; छठे दिन हर बेल पर कद्दूओं के ढेर लग गए। सबसे बड़े कद्दू की गोलाई आठ-नौ फुट थी। उसे दो आदमी बाजू फैलाकर भी नहीं उठा सकते थे। वह कद्दू इतना बड़ा था कि श्याओ लाङ ने उसका नाम "कद्दुओं का राजा" रख दिया।

एक बन्दर उधर से गुजर रहा था। उसने बेलों पर कद्दू लगे देखे। बन्दर ने एक कद्दू उठाया और चलता बना। उसने फौरन गुफा में जाकर यह खुशखबरी बाकी बन्दरों को भी सुनाई : "दोस्तो, पहाड़ पर बहुत से कद्दू लगे हुए हैं। जल्दी जाओ और कुछ कद्दू तोड़ लाओ !"

रात को बन्दरों के झुण्ड के झुण्ड श्याओ लाङ के खेत में आ पहुंचे और लगभग आधे कद्दू उठा ले गए। अगले दिन जब श्याओ लाङ को पता चला कि उसके बहुत से कद्दू चोरी चले गए हैं, तो उसे बड़ा गुस्सा आया।

उस दिन वह अपने कद्दुओं की निगरानी करने खेत पर ही रहा। उसने "कद्दुओं के राजा" के पेट में एक बड़ा-सा छेद कर लिया और चोर पकड़ने के लिए उसके अन्दर छिपकर बैठ गया।

आधी रात के वक्त बन्दर वहां फिर आ पहुंचे और बचे-खुचे कद्दू भी उठा ले गए। केवल "कद्दुओं का राजा" बच गया, क्योंकि वह बहुत भारी था।

बन्दर "कद्दुओं के राजा" को नहीं उठा सके थे। उन्होंने "संरक्षक देवी" की सहायता लेने का निश्चय किया। वे दौड़कर गुफा में गए और वहां से सोने-चांदी के प्याले उठा लाए। इन प्यालों को उन्होंने "कद्दुओं के राजा" के सामने रख दिया। फिर लाल मोमबत्ती और धूपबत्ती

जलाकर "संरक्षक देवी" की पूजा करने लगे।

श्याश्रो लाङ कद्दू के अन्दर से यह सब देख रहा था। वह अचानक चिल्ला पड़ा : "हेइ !" बन्दरों ने सोचा, यह शायद "कद्दुओं के राजा" की आवाज है। यह सुनकर वे बुरी तरह घबरा गए और अपने सोने-चांदी के प्याले वहीं छोड़कर भाग खड़े हुए।

जब बन्दरों का कोलाहल समाप्त हो गया, तो श्याश्रो लाङ कद्दू के पेट से बाहर निकल आया और सोने-चांदी के प्यालों को उठाकर घर ले गया।

हमेशा की ही तरह इस बार भी बड़ा भाई ता लाङ फिर पूछताछ करने आ पहुंचा।

"श्याश्रो लाङ, सोने-चांदी के इन प्यालों को तुमने कहां से चुराया है ?"

"इन्हें मैंने चुराया नहीं है। इन्हें मैं कल रात अपने कद्दू के खेत से उठाकर लाया हूं।"

उसने ता लाङ को सारी घटना विस्तार से सुना दी।

जब अंधेरा हो गया, तो ता लाङ अपने भाई के खेत में जा पहुंचा और श्याश्रो लाङ की ही तरह "कद्दुओं के राजा" के पेट में छिपकर बैठ गया। बन्दर फिर आए और पहले से बड़ी तादाद में आए। लेकिन इस बार उनके पास सोने-चांदी के प्याले नहीं थे। सब बन्दरों ने एक साथ मिलकर उस विशाल कद्दू को उठा लिया। वे लोग अभी कुछ ही दूर गए होंगे कि कद्दू के हिलने-डुलने से ता लाङ की आंख लग गई।

"कद्दुओं के राजा" को उठाए हुए बन्दर घाटियों और पहाड़ों को पार करते गए। जब ता लाङ की जाग खुली, तो वे एक सीधी चट्टान के कगार पर पहुंच चुके थे। शोरगुल सुनकर उसने सोचा, लगता है अब ये "संरक्षक देवी" को बुलाने के लिए पूजा कर रहे हैं। इसलिए वह जोर से चिल्लाया : "हेइ !" यह आवाज सुनते ही बन्दर "कद्दुओं के राजा" को चट्टान से नीचे फेंककर भाग खड़े हुए। "कद्दुओं का राजा" पहाड़ी ढलान पर तेजी से लुढ़कता हुआ नीचे घाटी में जा गिरा और उसके टुकड़े-टुकड़े हो गए। साथ ही ता लाङ की भी हड्डी-पसली चूरचूर हो गई !

नसरुद्दीन ग्राफन्ती के किस्से

(उइगुर जाति के लोक-साहित्य से)

मैं ही गलत हूं।

रात का वक्त था। ग्राफन्ती एक कब्रिस्तान से गुजर रहा था। कुछ घुड़सवार उसी दिशा में जा रहे थे। उसे लगा, दाल में जरूर कुछ काला है। वह अभी-अभी खोदी गई एक कब्र में जा छिपा। घुड़सवारों ने उसे कब्र में घुसते देख लिया। उन्हें बड़ा ताज्जुब हुग्रा। समझ में नहीं ग्राया कि वह कब्र के ग्रन्दर क्यों जा रहा है। कब्र के नजदीक पहुंचकर एक घुड़सवार जोर से चिल्लाया : "तुम कौन हो?"

ग्राफन्ती ने कब्र से सिर बाहर निकाला ग्रौर जवाब दिया :

"मैं इस कब्रिस्तान में दफनाई गई एक लाश हूं।"

"इतनी रात में लाश को ऊपर ग्राने की जरूरत क्यों महसूस हुई?"

"ताजा हवा लेने के लिए।"

"क्या लाश को भी ताजा हवा की जरूरत होती है?"

"ग्ररे हां, . . . तुम बिलकुल ठीक कह रहे हो। मैं ही गलत हूं!" यह कहता हुग्रा ग्राफन्ती फिर से कब्र में घुस गया।

घर बदलने में मदद

एक रात कई चोर सेंध लगाकर अाफन्ती के घर में जा घुसे अौर उसका सारा सामान जल्दी-जल्दी बांधकर बाहर निकल गए।

अभी वे अाधा ही अहाता पार कर पाए थे कि अाफन्ती कुछ अौर छोटा-मोटा सामान हाथ में उठाए उनके करीब जा पहुंचा।

"अाफन्ती, इतनी रात में कहां जा रहे हो?" एक चोर ने पूछा।

"मैं काफी दिनों से घर बदलने की सोच रहा था। पर मेरे पास घोड़ा-गाड़ी बुलाने के लिए पैसे नहीं थे। अापकी इस मदद के लिए बहुत-बहुत शुक्रिया!"

अनोखा सौदा

एक दिन अाफन्ती अपने लिए एक पायजामा खरीदने बाजार गया। काफी मोलभाव करने के बाद उसने एक पायजामे के दाम तय कर लिए। वह कीमत चुकाने ही जा रहा था कि अचानक उसकी राय बदल गई। "मेरा पायजामा अभी ज्यादा पुराना नहीं है," उसने मन ही मन सोचा। फिर दुकानदार की तरफ देखकर बोला: "मेहरबानी करके मुझे इसकी जगह एक कमीज दे दो।"

दुकानदार ने उसकी मांग स्वीकार कर ली अौर उसे एक कमीज थमा दी! अाफन्ती पैसे दिए बिना ही अागे बढ़ गया। दुकानदार चिल्लाया: "बरखुरदार, तुमने कमीज के दाम अभी नहीं चुकाए।"

"क्या मैंने अभी-अभी एक पायजामा नहीं लौटाया, जिसकी कीमत कमीज के बराबर है?" अाफन्ती तपाक से बोला।

गाय की बिक्री

आफन्ती की बेगम अपनी गाय को बेचना चाहती थी। उसकी गाय बड़ी गुस्सैल और बांझ थी। आफन्ती उसे बेचने बाजार ले गया।

खरीदार आते और गाय को देखने के बाद आगे बढ़ जाते, क्योंकि आफन्ती लगातार कहता जा रहा था : "यह गाय दूध बिलकुल नहीं देती, सिर्फ सींग मारती है!" यह सुनने के बाद उसकी गाय आखिर कौन खरीद सकता था!

मवेशियों का एक व्यापारी कुछ देर तक उसे देखता रहा। आफन्ती के भोलेपन पर उसे बड़ा आश्चर्य हो रहा था। वह बोला : "भाईजान, अपनी गाय जरा मुझे तो दो। मैं इसे चुटकियों में बिकवा दूंगा!"

"आप मुझ पर सचमुच बड़े मेहरबान हैं," आफन्ती बोला। "खुदा आपका भला करे! लीजिए, इस गाय को आप ही बेचिए!" यह कहते हुए आफन्ती ने रस्सी उसके हाथ में थमा दी।

मवेशियों के व्यापारी ने रस्सी हाथ में लेते हुए खरीदारों की ओर देखकर चिल्लाना शुरू कर दिया :

"भाइयो, जरा इस गाय को तो देखो! कितनी सीधी है! हर रोज पन्द्रह कटोरे दूध देती है! यह सौदा आपको किसी भी हालत में मंहगा नहीं पड़ेगा!"

यह सुनते ही आफन्ती ने व्यापारी के हाथ से रस्सी ले ली और बोला : "अगर यह गाय मेमने से भी सीधी है और रोज पन्द्रह कटोरे दूध देती है, तो इसे भला मैं क्यों बेचने लगा!"

गाय से क्यों नहीं पूछते

आफन्ती ने बाजार से एक गाय खरीदी। गाय को लेकर वह घर लौट रहा था। "आफन्ती, तुम्हारी गाय बड़ी अच्छी है!" एक राहगीर

ने कहा। "कितने में खरीदी ?"

यही सवाल कई राहगीरों ने पूछा। आफन्ती बार-बार एक ही जवाब देकर थक गया। अन्त में जब दो आदमियों ने फिर वही सवाल दोहराया, तो उसने गाय की तरफ इशारा करते हुए कहा : "आप लोग बार-बार एक ही सवाल पूछकर मुझे परेशान क्यों कर रहे हैं ? अगर इसका जवाब जानना ही चाहते हैं तो गाय से क्यों नहीं पूछ लेते ?"

अक्लमन्द हो तो पानी में कूद जाओ !

जाड़े का एक दिन था। आफन्ती अपने गधे पर लकड़ियां लादकर घर लौट रहा था। उसे बेहद ठण्ड महसूस होने लगी। उसे गधे की चिन्ता हुई। सोचा, "इस मौसम में गधे को भी जरूर ठण्ड लग रही होगी। अगर मैं गधे की पीठ पर लदी लकड़ियों को सुलगा दूं, तो उनकी आंच से गधा ठण्ड से बच जाएगा।" उसने ऐसा ही किया। सूखी लकड़ियों ने एकदम आग पकड़ ली। गधा डर गया और तेजी से दौड़ने लगा। आफन्ती भी गधे के पीछे दौड़ पड़ा और उससे बोला : "अगर तुम अक्लमन्द हो, तो फौरन पानी में कूद जाओ !"

थैले में सुरक्षित पूंछ

आफन्ती अपने गधे को बेचने बाजार जा रहा था। रास्ते में गधे की पूंछ बहुत गन्दी हो गई। आफन्ती ने मन ही मन सोचा : "इसकी गन्दी पूंछ को देखकर कहीं खरीदारों को बुरा न लगे। यह अच्छा नहीं होगा !" इसलिए उसने गधे की पूंछ काट डाली और उसे काठी पर लटके हुए एक थैले में रख दिया।

एक खरीदार ने गधे पर नजर डाली। "कितना अच्छा गधा है!" वह बोला। "लेकिन दुख इस बात का है कि इसकी पूंछ नहीं है!"

"अगर तुम्हें यह गधा पसन्द है, तो बताओ कितनी कीमत दोगे? आफन्ती झट बोल पड़ा। "इसकी पूंछ मेरे थैले में सुरक्षित है!"

नया-पुराना चांद

किसी ने आफन्ती से पूछा: "जब नया चांद निकलता है, तो पुराना चांद कहां चला जाता है?"

आफन्ती ने फौरन जवाब दिया: "जब नया चांद निकलता है, तो अल्लाह पुराने चांद के टुकड़े-टुकड़े कर देता है और वे सब टुकड़े सितारों में बदल जाते हैं।"

सूरज बड़ा कि चांद?

किसी दोस्त ने आफन्ती से पूछा: "सूरज ज्यादा उपयोगी है या चांद?"

"बेशक, चांद सूरज से ज्यादा उपयोगी है," आफन्ती ने फौरन उत्तर दिया।

"वजह?" दोस्त ने पूछा।

"सूरज दिन में निकलता है। पर उसका कोई फायदा नहीं होता, क्योंकि तब उजाला हो चुका होता है। चांद रात में निकलता है। अगर वह न निकले, तो चारों तरफ गहरा अंधेरा छा जाएगा।" आफन्ती ने उत्तर दिया।

मछलियां पेड़ पर चढ़ जाएंगी !

आफन्ती से किसी ने पूछा : "अगर पानी में आग लग जाए, तो मछलियों का क्या होगा ?"

"वे पेड़ पर चढ़ जाएंगी !" उसने तपाक से उत्तर दिया ।

पृथ्वी उलट जाएगी !

एक दिन आफन्ती से दोस्तों ने पूछा : "पौ फटते ही लोग अलग-अलग दिशाओं में क्यों जाने लगते हैं ?" आफन्ती फौरन बोल पड़ा : "यह भी कोई पूछने की बात है ? लगता है, तुम निरे बेवकूफ हो ! यह एक सीधी-सी बात है । अगर सब लोग एक ही दिशा में जाएंगे, तो क्या पृथ्वी उनके बोझ से एक तरफ झुककर उलट नहीं जाएगी ?"

चिट्ठी लिखने का अनुरोध

आफन्ती के एक दोस्त ने कहा : "मेरा एक भाई राजधानी में रहता है । क्या तुम मेरी तरफ से उसके नाम एक चिट्ठी लिख दोगे ?"

"लेकिन मेरे पास राजधानी जाने की फुरसत कहां है !" आफन्ती बोला ।

"मैं तुमसे राजधानी जाने को नहीं कह रहा," दोस्त बोला । "मैं तो तुमसे सिर्फ एक चिट्ठी लिखने का अनुरोध कर रहा हूं ।"

"मैं तुम्हारी बात समझ गया हूं," आफन्ती ने उत्तर दिया । "लेकिन मेरी लिखावट ही कुछ ऐसी है जिसे मेरे सिवाय कोई और नहीं पढ़ सकता ।

अगर मैं चिट्ठी पढ़ने खुद राजधानी न जा सका, तो लिखने का फायदा क्या होगा! अफसोस यह है कि मेरे पास राजधानी जाने का समय नहीं है।"

प्रायश्चित्त

एक दिन आफन्ती को रास्ते में एक भटकी हुई भेड़ मिल गई। वह उसे घर ले गया और मारकर खा गया। उसके एक दोस्त को पता चला, तो उसने पूछा :

"कयामत के दिन जब खुदा तुमसे पूछेगा, तो तुम अपने कसूर के बारे में क्या सफाई दोगे?"

"कह दूंगा कि मैंने भेड़ नहीं खाई।"

"लेकिन इससे काम नहीं चलेगा। अगर भेड़ खुद ही गवाह के रूप में पेश हो गई, तो क्या करोगे?"

"अगर भेड़ ही सामने आ गई तो सोने में सुहागा हो जाएगा! मैं भेड़ को उसके मालिक के पास पहुंचा दूंगा और इस तरह अपने पाप का प्रायश्चित्त कर लूंगा।"

नाई की दुकान में

एक दिन आफन्ती अपना सिर घुटवाने नाई की दुकान में जा पहुंचा।

नाई तजरबेकार नहीं था। इसलिए उस्तरे से जगह-जगह कट गया। कटी जगहों पर उसने रूई के फाहे लगा दिए। हजामत कराने के बाद जब आफन्ती ने शीशे में अपना मुंह देखा, तो आश्चर्य से बोला :

"कितने बड़े फनकार हो तुम, नाई मियां! तुमने मेरे आधे सिर पर

कपास उगा दी है। सोचता हूं, बाकी आधे सिर पर अलसी बो दूं!" यह कहता हुआ वह घर लौट गया।

बेगम और नान

आफन्ती जमीन पर बैठा अपनी बेगम से बातें कर रहा था। अचानक उसे भूख लग आई। वह बेगम से बोला: "बेगम, मुझे भूख लग रही है। क्या तुम्हारे पास कोई नान है?"

"भूख लग रही है? क्या अपनी खूबसूरत बेगम के पास बैठकर और उसे देखकर भी तुम्हें तृप्ति नहीं हो रही?"

"क्यों नहीं? आफन्ती ने उत्तर दिया। "पर तुम्हारे खूबसूरत मुखड़े को निहारने के साथ-साथ अगर नान भी खाता रहूं, तो सोने में सुहागा हो जाएगा!"

पेड़ों की चोटी पर रास्ता

एक बार कुछ शैतान बच्चों ने आफन्ती के साथ ठिठोली करनी चाही। वे आफन्ती से बोले: "आफन्ती चाचा, उस पेड़ पर चिड़िया के अण्डे हैं। क्या आप उन्हें उतारकर हमें दे सकते हैं? हम पेड़ पर नहीं चढ़ सकते।"

आफन्ती बच्चों को निराश नहीं करना चाहता था। इसलिए पेड़ पर चढ़ने के लिए राजी हो गया। पर वह जानता था कि अगर उसने जूते उतारकर नीचे रख दिए तो ये शैतान बच्चे उन्हें उठाकर जरूर चम्पत हो जाएंगे। इसलिए पेड़ पर चढ़ने से पहले उसने अपने जूतों को कमर में बांध लिया।

"आफन्ती चाचा, जूते ऊपर क्यों ले जा रहे हैं? उनकी देखभाल हम

कर लेंगे।" बच्चों ने कहा।

"इसकी जरूरत नहीं है, मेरे नन्हे दोस्तो," आफन्ती ने जवाब दिया। "मैं बेहद मसरूफ हूं। अण्डे तुम्हारे हवाले करने के बाद मैं पेड़ों की चोटी पर पांव रखता हुआ घर लौट जाऊंगा!"

सोने की अंगूठी

एक बार आफन्ती का एक व्यापारी दोस्त लम्बी यात्रा पर जाने से पहले उससे विदाई लेने आया। उसने आफन्ती की उंगली में सोने की अंगूठी देखी। अंगूठी देखते ही उसका मन ललचाने लगा।

"आफन्ती," दोस्त ने कहा, "जब मैं लम्बे समय तक तुमसे नहीं मिल पाता तो बड़ा परेशान हो जाता हूं। बाहर जाने के बाद मुझे तुम्हारी याद हमेशा सताती रहती है। अपनी यादगार के तौर पर तुम यह अंगूठी मुझे क्यों नहीं दे देते? जब मैं इसे देखूंगा, तो मुझे ऐसा लगेगा जैसे मैं तुमसे

मिल रहा हूं। इससे मुझे बड़ी तसल्ली मिलेगी।"

आफन्ती के पास कीमती चीज के नाम पर बस यही अंगूठी थी। वह उसे किसी भी हालत में नहीं देना चाहता था।

इसलिए उसने जवाब दिया : "मेरे प्यारे दोस्त, मैं तुम्हारी दोस्ती की बड़ी कद्र करता हूं। लेकिन मुझे भी लम्बे समय तक तुमसे अलग रहकर चैन नहीं मिलेगा। मुझ पर रहम खाओ और यह अंगूठी मेरे पास ही रहने दो! जब भी मैं इस अंगूठी को देखूंगा, तो मुझे याद आएगा कि इसे मेरे दोस्त ने मांगा था और मैंने उसे नहीं दिया था। इस तरह तुम मेरी यादों में हमेशा बसे रहोगे!"

शहद और तबीयत

एक दिन आफन्ती अपने दोस्त के घर भोजन करने गया। मेजबान ने उसके सामने पनीर, नान और शहद रख दिया। आफन्ती ने पहले पनीर के साथ भरपेट नान खाई और फिर शहद खाना शुरू कर दिया। पर शहद के साथ खाने के लिए एक भी नान बाकी नहीं रह गई थी। मेजवान ने याद दिलाया : "आफन्ती, नान के बिना तुम्हें शहद नहीं खाना चाहिए! इससे तुम्हारी तबीयत खराब हो जाएगी!"

आफन्ती शहद की एक-एक बूंद चाट गया और बोला : "यह बात खुदा ही जानता है कि अन्त में किसकी तबीयत खराव होगी! अल्लाह तुम्हारा भला करे! ..." यह कहता हुआ वह घर लौट गया।

मुर्गी के दाम

एक बार एक कुली ने सराय में एक मुर्गी खाई। जब उसने बिल मांगा, तो सराय-मालिक ने कहा : "तुम्हारे पास अगर पैसे अभी न हों, तो बाद

में दे देना। मैं तुम्हारे खाते में लिख दूंगा।" जिन्दगी में पहली बार उसकी मुलाकात ऐसे दयालु आदमी से हुई थी। उसने सराय-मालिक को धन्य-वाद दिया और वहां से चला गया।

कुछ समय बाद कुली अपना उधार चुकाने आया। सराय-मालिक तांबे के सिक्कों को एक के ऊपर एक रखकर हिसाब लगाने लगा। देखने में ऐसा लगता था जैसे कोई कठिन सवाल हल कर रहा हो। कुली ने परेशान होकर पूछा : "तुम्हारी मुर्गी कितने की थी? उसके दाम तो तुम्हें पता ही होंगे? यह लम्बा-चौड़ा हिसाब क्या कर रहे हो?" सराय-मालिक ने अपना हाथ इस तरह हिलाया जैसे वह हिसाब लगाने में डूबा हो और इस वक्त बात सुनने को तैयार न हो। कुली बैठकर इन्तजार करता रहा।

काफी देर बाद सराय-मालिक ने कुली को मुर्गी के दाम बता दिए। सुनकर उसे बड़ा धक्का लगा। उसकी मुर्गी के दाम बाजार-भाव से कई सौ गुना ज्यादा थे। कुली ने पूछा : "एक मुर्गी के इतने ज्यादा दाम कैसे हो सकते हैं?"

"क्यों नहीं?" सराय-मालिक बोला। "खुद हिसाब करके क्यों नहीं देख लेते? अगर उस दिन तुमने यह मुर्गी न खाई होती, तो जानते हो अब तक वह कितने अण्डे दे चुकी होती? अण्डों में से चूजे भी निकलते! ये चूजे बड़े होकर फिर अण्डे देते...।" सराय-मालिक ने तांबे के ढेर सारे सिक्के मेज पर रख दिए और कुली से कहा :

"तुम कुल इतनी रकम के देनदार हो — एक भी पैसा कम नहीं लूंगा!"

कुली के लिए अब और अधिक बरदाश्त करना असम्भव हो गया। वह जोर से चिल्लाया : "तुम व्यापार नहीं करते, बल्कि लोगों को लूटते हो! मैं तुम्हें एक भी पैसा नहीं दूंगा!"

जब सराय-मालिक ने देखा कि कुली पैसे देने से साफ इनकार कर रहा है, तो वह बोला : "इस झगड़े का फैसला कराने के लिए हम दोनों को मसजिद में जाना होगा!" अपने पक्ष को सही समझकर कुली ने उत्तर दिया : "अगर तुम सच्चे हो, तो दुनिया में हर जगह जा सकते हो, और

अगर झूठे हो तो एक इंच भी आगे नहीं बढ़ सकते। मसजिद क्या अगर तुम अल्लाह के पास भी जाओ, तो भी तुम्हें सच्ची बात कहनी पड़ेगी!" एक-दूसरे को खींचते हुए वे दोनों मसजिद में जा पहुंचे।

मसजिद का इमाम धार्मिक मामलों के अलावा कानूनी मामलों को भी देखता था। उसके फैसले को सभी मुसलमान मानते थे। सराय-मालिक और कुली जब अन्दर पहुंचे, तो इमाम कालीन पर बैठा तम्बाकू खा रहा था। उसकी झबरीली मूंछें गाल से चिपकी हुई थीं। लोग मजाक में कहते थे कि उसकी मूंछें इसलिए घनी हैं क्योंकि वह दिनभर तम्बाकू की खाद डालता रहता है। उसने कनखियों से दोनों को देखा और रूखी आवाज में धीरे से कहा : क्यों आए हो?

पहले सराय-मालिक ने अपनी बात बताई। इमाम को उसकी बात जंच गई और कुली का पक्ष सुने विना ही उसने एकतरफा फैसला सुना दिया : "सराय-मालिक की मांग के मुताबिक कुली को सारी रकम चुकानी होगी।" कुली ने सोचा, बहस करने से कोई फायदा नहीं होगा। उसने इमाम से कुछ दिनों की मोहलत मांगी। इमाम राजी हो गया।

इस बेइन्साफी से दुखी होकर कुली अपने घर लौट रहा था। तभी उसे गाने की अवाज सुनाई दी। गधे पर सवार एक आदमी उसकी ओर आ रहा था, नजदीक आने पर उस आदमी ने अपना दाहिना हाथ सीने पर रखा और बड़े अदब से झुककर बोला : "कुली भैया, सलाम। तुम्हारा क्या हाल है?" इस अलमस्त राहगीर को देखकर कुली और ज्यादा दुखी हो गया और "उंह" कहकर आगे बढ़ गया। गधे पर सवार आदमी उसका व्यवहार देखकर ताज्जुब में पड़ गया। अपने गधे को तेज दौड़ाकर वह कुली के पास जा पहुंचा। "कुली भैया, तुम इतनी जल्दी कहां जा रहे हो?" उसने पूछा। "तुम्हें इतना गुस्सा क्यों आ रहा है? क्या मैं तुम्हारी कोई खिदमत कर सकता हूं?"

कुली थोड़ी देर के लिए रुका और आश्चर्य से बोला : "लेकिन तुम कौन हो?" "मैं नसरुद्दीन आफन्ती हूं," गधे पर सवार आदमी ने कहा।

यह सुनकर कुली बहुत खुश हुआ। "अच्छा, तो तुम ही मशहूर नसरुद्दीन आफन्ती हो!" बाकी लोगों की ही तरह कुली ने भी नसरुद्दीन आफन्ती के बारे में यह सुन रखा था कि वह जगह-जगह जाकर गरीबों की मदद करता है। जैसा उसने सुन रखा था, आफन्ती को उसने ठीक वैसा ही पाया।

कुली ने आफन्ती को सारी घटना विस्तार से सुना दी। सारी बात सुनने के बाद आफन्ती ने कहा : "तुम फौरन मसजिद में लौट जाओ और इमाम से कहो कि तुम्हारे साथ न्याय नहीं हुआ है तथा तुम इस मामले को खुली अदालत में ले जाना चाहते हो। खुली अदालत में तुम्हारे पक्ष की पैरवी मैं करूंगा!"

कुली फौरन मसजिद में लौट गया। इमाम को उसकी मांग मंजूर करनी पड़ी। रिवाज के मुताबिक हर अभियुक्त को अपना मामला खुली अदालत में ले जाने का हक हासिल था। पर अगर खुली अदालत का फैसला अभियुक्त के खिलाफ होता, तो उसे दुगुनी सजा मिलती थी।

खुली अदालत के दिन मसजिद लोगों से खचाखच भर गई। जब जूरी के सदस्यों ने अपना स्थान ग्रहण कर लिया, तो इमाम ने मुकदमा शुरू करने का ऐलान किया। सराय-मालिक ने अपनी कहानी फिर दोहराई। पर जब कुली के बोलने की बारी आई, तो वह चुपचाप बैठा रहा। "तुम बोलते क्यों नहीं?" इमाम ने पूछा। "इमाम साहब, मेरा वकील अभी नहीं आया," कुली ने उत्तर दिया। इमाम को बड़ा आश्चर्य हुआ। "तुम्हारा वकील कौन है?" उसने कुली से पूछा। "नसरुद्दीन आफन्ती," जवाब मिला। यह सुनकर जूरी और इमाम कुछ घबरा गए। पर दर्शक बहुत खुश हुए। वे आपस में कानाफूसी करने लगे और आफन्ती की दिलचस्प दलीलें सुनने की प्रतीक्षा करने लगे।

जब काफी समय बीत गया, तो नसरुद्दीन आफन्ती हांफता हुआ अदालत में हाजिर हो गया। उसने उपस्थित लोगों को सलाम किया तथा इमाम

ग्रौर जूरी के सदस्यों से माफी मांगता हुग्रा बोला : "देर में पहुंचने के लिए ग्राप लोगों से माफी चाहता हूं। मुझे एक बहुत जरूरी काम निपटना पड़ गया था।" ग्राफन्ती को नीचा दिखाने के लिए जूरी का एक सदस्य बोल पड़ा : "क्या वह काम इस मुकदमे से भी ज्यादा जरूरी था?"

"हां, इस मुकदमे से कहीं ज्यादा जरूरी था!" ग्राफन्ती ने उत्तर दिया। "बात यह है कि कल मुझे गेहूं बोने हैं। पर ग्राज सुबह तक गेहूं का एक भी दाना नहीं भून पाया था। क्या इससे ज्यादा जरूरी कोई ग्रौर काम भी हो सकता है? मुझे देर इसलिए हो गई क्योंकि यहां ग्राने से पहले लगभग तीन बुशल गेहूं भूनने पड़े!"

इमाम ग्रौर जूरी के सदस्य उसका बेवकूफीभरा जवाब सुनकर ठहाका मारकर हंस पड़े। फिर वे एक स्वर से बोले : "कैसी बेहूदा बातें कर रहे हो! क्या भुने हुए गेहूं भी कभी बीज के काम ग्रा सकते हैं?" वे जोर से चिल्लाकर ग्राफन्ती का मुंह बन्द करना चाहते थे, ताकि फिर मनमाना फैसला सुना सकें। लोगों में खलबली मच गई। वे सोचने लगे, ग्रगर ग्राफन्ती उनके सवाल का उचित उत्तर न दे पाया, तो कहीं उसे एक ग्रयोग्य वकील साबित न कर दिया जाए। लेकिन जब हंसने की ग्रावाजें बन्द हो गईं तो ग्राफन्ती बड़े धीरज से बोला : "ग्राप लोग बिलकुल सही फरमा रहे हैं – भुने हुए बीज कभी नहीं बोए जा सकते। लेकिन मैं ग्रापसे पूछता हूं : क्या खाई हुई मुर्गी कभी ग्रण्डे दे सकती है?" यह सुनकर इमाम ग्रौर जूरी के सदस्य हक्केबक्के रह गए। ग्रब कहीं उनकी समझ में ग्राया कि ग्राफन्ती उन्हें जाल में फंसाने के लिए ही देर से ग्राया था ग्रौर बेव-कूफीभरी बातें करने लगा था। ग्रदालत में उपस्थित दर्शक खुशी से चिल्ला पड़े : "बिलकुल ठीक है! खाई हुई मुर्गी भला ग्रण्डे कैसे दे सकती है?" ग्रदालत का माहौल देखकर इमाम ग्रौर जूरी के सदस्यों को मजबूर होकर पहले का फैसला रद्द करना पड़ा तथा सराय-मालिक को कुली से बाजार-भाव के मुताबिक मुर्गी के दाम लेने पड़े। इस तरह यह मुकदमा खत्म हो गया।

आफन्ती ने तेल खरीदा

नसरुद्दीन आफन्ती को लोग दुनिया का सबसे बुद्धिमान आदमी समझते थे। लेकिन उसकी बेगम का कहना था कि वह निरा मूर्ख है। एक दिन सब पड़ोसी मिलकर बेगम के पास गए। "तुम नसरुद्दीन को हमेशा बेवकूफ कहती हो। जरा यह तो बताओ कि उन्होंने कौन से बेवकूफी के काम किए हैं?"

"यह न पूछो, उनकी बेवकूफी के किस्से न जाने कितने हैं!" बेगम बोली। "मैं तुम्हें सिर्फ एक किस्सा सुनाती हूं। इससे पता चल जाएगा कि मेरे शौहर कितने बेवकूफ हैं!"

"अगर तुम उन्हें सचमुच बेवकूफ साबित कर दो, तो हम तुम्हारी बात के कायल हो जाएंगे," पड़ोसियों ने कहा।

बेगम ने कुछ ही दिन पुरानी एक घटना सुना दी :

"नसरुद्दीन लम्बी यात्रा के बाद घर लौटे, तो मैंने उन्हें आड़े हाथों लिया। मैंने कहा, 'तुम गप्पों में बेकार वक्त क्यों बरबाद करते हो और हमेशा घर से बाहर क्यों रहते हो?' तुम लोग जानते ही हो, नसरुद्दीन अमीरों के सामने तो शेर की तरह दहाड़ते हैं लेकिन मेरे सामने भीगी बिल्ली बन जाते हैं। मेरी फटकार सुनने के बाद भी वे बड़े अदब से मेरे सामने झुके, जैसे मैं कोई अजनबी हूं, और बोले : 'अल्लाह तुम्हारा भला करे! मेरी प्यारी मैना, क्या मैं लौटकर नहीं आ गया?' यह सुनते ही मेरा गुस्सा काफूर हो गया। मैंने मैना की तरह फुदककर अपने प्रीतम को बांहों में समेट लिया और आंखें मूंदकर मन ही मन सोचने लगी : 'मैं कितनी खुश-किस्मत हूं! अल्लाह ने मुझे कितना अच्छा शौहर दिया है!' लेकिन कुछ ही देर बाद उनकी हरकतों से मुझे फिर गुस्सा आ गया। अचानक नसरुद्दीन को एक काम याद आ गया, जो किसी ने उन्हें सौंपा था। बस, फिर क्या था? उसी के बारे में सोचने लगे और मेरी हर बात की अनसुनी करने लगे। मैं जानती थी कि यह अच्छा लक्षण नहीं है और उनके फिर एक

वार घर से गायब होने का संकेत है! इसलिए मैंने फौरन उनके हाथ में एक कटोरा व कुछ पैसे थमा दिए और उन्हें तेल खरीदने भेज दिया, क्योंकि घर में तेल की एक भी बूंद नहीं थी। मैं अपने शौहर का ध्यान बटाना चाहती थी, ताकि वे फिर कहीं घर से बाहर न चले जाएं। पर वे रास्तेभर उसी काम के बारे में सोचते रहे। तेल की दुकान आ गई। दुकानदार ने कटोरे में तेल भर दिया, पर उन्हें पता ही न चला कि कटोरा तेल से लबालब भर चुका है। दुकानदार ने पूछा : 'बाकी तेल किस बरतन में डालूं?' उनके पास कोई दूसरा बरतन न था। इसलिए कटोरे को उलटकर उसके तले में बने रिम की तरफ इशारा करते हुए वे बोले, 'बाकी तेल यहां डाल दो!' कटोरे का सारा तेल जमीन पर फैल गया। आसपास खड़े लोग ठहाका मार कर हंस पड़े। लेकिन अपने ख्यालों में डूबे नसरुद्दीन को कुछ भी पता नहीं चला। वे कटोरे की तरफ इशारा करते हुए बुदबुदाए : 'डालते क्यों नहीं?' दुकानदार ने बाकी तेल भी उसी में डाल दिया। नसरुद्दीन उलटे कटोरे के रिम के अन्दर दो-चार चम्मच तेल लेकर घर लौट आए। मैंने आश्चर्य से पूछा : 'मैंने तुम्हें जो पैसे दिए थे उनसे क्या सिर्फ इतना ही तेल आया?' जवाब मिला : 'ऐसी बात नहीं। बाकी तेल कटोरे के दूसरी तरफ है।' यह कहते हुए नसरुद्दीन ने फिर एक बार कटोरे को पलट दिया . . ."

यह सुनकर पड़ोसी हंसते-हंसते लोटपोट हो गए। नसरुद्दीन आफन्ती की बेगम मौके का फायदा उठाकर बोल पड़ी :

"अब तुम्हीं बताओ, दुनिया में क्या नसरुद्दीन जैसा बेवकूफ कोई और भी हो सकता है?"

लेकिन पड़ोसी बेगम की बात से सहमत नहीं हुए। उनका ख्याल था कि नसरुद्दीन की इस दिमागी उलझन का कोई न कोई कारण जरूर रहा होगा। "यह नहीं कहा जा सकता कि इस मामले में नसरुद्दीन ने बेवकूफी दिखाई। दरअसल उनका दिमाग किसी दूसरे आदमी की गम्भीर समस्या में उलझा हुआ था। तुमने अपने शौहर से यह क्यों नहीं पूछा कि उनके

दिमाग पर कौन सी समस्या हावी थी? तुम्हारी बात सुनकर हम यह नहीं कह सकते कि तुम्हारी ही सोच सही थी और तुम्हारे शौहर की सोच गलत थी।"

बेगम ने ज्यादा बहस करना ठीक नहीं समझा। वह अपने शौहर के बारे में बाकी लोगों से ज्यादा जानती थी और अच्छी तरह समझती थी कि वे कितने बेवकूफ हैं। हालांकि वह आफन्ती को हमेशा "जंगली पंछी" जैसे उपनामों से पुकारती थी, फिर भी जब दूसरे लोग उनकी तारीफ करते थे तो वह मन ही मन बेहद खुश होती थी।

青蛙骑手

——中国民间故事选

张光宇　张大羽　插图
刘继卣　蔡　荣

*

外文出版社出版

（中国北京百万庄路24号）

外文印刷厂印刷

中国国际书店发行

（北京399信箱）

1982年（大32开）第一版

编号：（印地）10050—1047

00110

10—H—276P

घुड़सवार मेढक

घुड़सवार मेढक

—चीन की लोककथाएं (भाग १)

विदेशी भाषा प्रकाशन-गृह, पेइचिङ

कथाक्रम

घुड़सवार मेंढक

(तिब्बती जाति की लोककथा)

एक समय की बात है। एक दूर-दराज इलाके में ऊंचे पहाड़ पर एक गरीब किसान दम्पति रहता था। पहाड़ की अनुपजाऊ ढलान पर वह पहाड़ी जौ और आलू उगाता था। वह दिनरात मेहनत करता था। फिर भी उसका गुजारा मुश्किल से चल पाता था।

दम्पति के कोई सन्तान न थी। धीरे-धीरे दोनों की उम्र ढलती गई। वे कमजोर होते गए। दोनों सन्तान के लिए बेचैन रहते। वे कहते थे: "काश, हमारा भी एक नन्हा-सा बच्चा होता! जब हम बूढ़े हो जाते, तो वह हमारी जमीन जोतता, हमारे बदले मजिस्ट्रेट के पास बेगार करता और ईंधन के लिए लकड़ी काट लाता। और जब हम बहुत बूढ़े हो जाते, तो अंगीठी के पास बैठकर कुछ देर कमर सीधी कर सकते!"

इसलिए दोनों भगवान गिरिराज से पुत्रप्राप्ति की प्रार्थना करने लगे। कुछ ही दिनों में किसान की पत्नी गर्भवती हो गई। लेकिन सात महीने बाद उसने बच्चे की जगह एक मेंढक को जन्म दिया, जिसकी दो बड़ी-बड़ी आंखें बाहर को निकली हुई थीं।

वृद्ध किसान ने कहा: "कितने आश्चर्य की बात है! बच्चे के बदले दो बड़ी-बड़ी आंखों वाला एक मेंढक पैदा हो गया है। चलो, इसे बाहर

फेंक आएं।"

लेकिन पत्नी राजी नहीं हुई। बोली : "भगवान ने हमारे साथ बड़ा अन्याय किया है। उसने हमें बच्चे की जगह मेढक दे दिया है। जो हो, यह मेढक आखिर मैंने ही तो पैदा किया है। इसे बाहर कैसे फेंक सकती हूं। मेढक कीचड़ वाले तालाब में रहना पसन्द करते हैं। हमारे घर के पिछवाड़े एक तालाब है। इसे उसी में छोड़ दिया जाए।"

बूढ़े किसान ने ज्योंही मेढक को उठाया और उसे बाहर ले जाने लगा, मेढक बोल पड़ा : "मां! बापू! मुझे इस तरह तालाब में न छोड़ो। मैं मनुष्य की सन्तान हूं! इसलिए मुझे मनुष्यों के बीच ही पलने-बढ़ने दो। बड़ा होने पर मैं अपनी जन्मभूमि का कायापलट कर दूंगा, गरीबों की जिन्दगी में तब्दीली ला दूंगा।"

बूढ़ा किसान भौचक्का रह गया। खुश होकर पत्नी से बोला : "जरा देखो तो इसे। बड़ी अजीब बात है! यह मेढक आदमी की तरह बोल रहा है।"

"यह ठीक ही तो कह रहा है!" पत्नी ने जवाब दिया। "हम गरीबों की जिन्दगी में तब्दीली लाना कितना जरूरी है! हम लोग आखिर कब तक इसी तरह जीवन बिताते रहेंगे। यह बोल सकता है, इसलिए यह कोई साधारण मेढक नहीं जान पड़ता। हम लोग इसे अपने ही साथ रखेंगे।"

पति-पत्नी दोनों ही बड़े दयालु और सहृदय थे। इसलिए वे अपने मेढक बेटे की देखभाल लड़के की ही तरह करने लगे।

इस प्रकार तीन वर्ष बीत गए। मेढक देख रहा था उसके माता-पिता रोज बेहद मेहनत व लगन से काम करते हैं। एक दिन वह अपनी मां से बोला : "मां, मेरे लिए मोटे अनाज की एक रोटी बना दो। उसे थैली में रखकर कल सुबह मैं मजिस्ट्रेट के पास जा रहा हूं। वह घाटी के सिरे पर पत्थर की मीनारों वाले किले में रहता है। मैं उसकी लड़की ब्याह कर लाना चाहता हूं। उसकी तीन सुन्दर लड़कियां हैं। मैं मजिस्ट्रेट की उस लड़की से विवाह करूंगा जो दयालु, सहृदय और सुयोग्य हो, जो

रोजमर्रा के कमरतोड़ काम में तुम्हारा हाथ बंटा सके।"

"बेटा, बेसिरपैर की न उड़ाओ," मां ने कहा। "तुम जैसे बदसूरत और छोटे प्राणी को अपनी लड़की कौन देगा! यह न भूलो कि तुम एक मेढक हो, जिसे चुटकियों में कुचला जा सकता है!"

"मां, तुम मेरे लिए एक रोटी तो बना दो," मेढक ने कहा। "मजिस्ट्रेट मेरी बात जरूर मान जाएगा।"

अन्त में मां राजी हो गई। "ठीक है, मैं तुम्हारे लिए एक रोटी बना देती हूं," वह बोली। "लेकिन मुझे डर है कि कहीं लोग तुम्हें देखते ही तुम्हारे ऊपर राख न उंडेल दें, जैसा कि लोग भूत-प्रेत भगाने के लिए अक्सर करते हैं। अगर ऐसा हुआ, तो तुम क्या करोगे?"

"नहीं मां," मेढक ने उत्तर दिया, "वे लोग ऐसा करने की जुर्रत नहीं कर सकते।" मां ने दूसरे दिन सुबह मोटे अनाज की एक बड़ी-सी रोटी बनाई और उसे एक थैले में रख दिया।

मेढक ने थैले को अपनी पीठ पर लाद लिया और फुदकता हुआ घाटी के सिरे पर खड़े मजिस्ट्रेट के किले की तरफ चल पड़ा।

जब मेढक किले के फाटक पर पहुंचा, तो उसने जोर से आवाज लगाई: "अरे ओ मजिस्ट्रेट, दरवाजा तो खोलो।"

मजिस्ट्रेट ने उसकी आवाज सुनी। सोचा, कोई उसे बुला रहा है। यह पता लगाने के लिए कि कौन आया है, उसने अपने सेवक को भेजा।

मेढक को देखते ही सेवक हैरान रह गया। लौट कर मालिक से बोला: "बड़े ताज्जुब की बात है, मालिक! फाटक पर एक मेढक खड़ा है, एक छोटा-सा मेढक! वह आपका नाम लेकर पुकार रहा है।"

मजिस्ट्रेट के दीवान ने बड़े विश्वास के साथ सलाह दी: "सरकार, यह जरूर कोई प्रेत-पिशाच है। इसके ऊपर राख डलवा दो।"

मजिस्ट्रेट उसकी बात से सहमत न हुआ। "ठहरो, जरा इन्तजार करो; हो सकता है, यह प्रेत-पिशाच न हो," वह बोला। "मेढक आम तौर पर पानी के अन्दर रहते हैं। कहीं ऐसा तो नहीं है कि नागराज ने इसे

किसी काम से अपने महल से यहां भेजा हो। इसलिए इस पर दूध का छिड़काव करो, जैसा कि देवताओं के सम्मान में किया जाता है। फिर इससे मिलने मैं खुद जाऊंगा।"

सेवकों ने मजिस्ट्रेट के आदेशानुसार काम किया। मेढक का स्वागत-सत्कार देवताओं की तरह किया गया। उसके ऊपर दूध छिड़का गया, कुछ दूध आसमान की ओर भी छिड़क दिया गया।

मजिस्ट्रेट स्वयं फाटक पर जा पहुंचा और बोला, "मेढक महाशय, क्या आप नागराज के महल से आए हैं? कहिए मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूं?"

"मैं नागराज के यहां से नहीं आया," मेढक ने जवाब दिया। "मैं तो अपने निजी काम से आया हूं। आपकी तीनों लड़कियां विवाह योग्य हो गई हैं। मैं उनमें से एक को अपनी पत्नी बनाना चाहता हूं। कृपया आप अपनी एक लड़की मुझे दे दीजिए।"

मजिस्ट्रेट और उसके साथी यह सुनकर दंग रह गए। मजिस्ट्रेट ने कहा: "तुम कैसी ऊलजलूल बातें कर रहे हो, मेढक महाशय! जरा अपनी सूरत तो देखो! कैसे बदसूरत और बौने हो तुम! मेरी लड़कियों का विवाह तुम्हारे साथ कैसे हो सकता है? मैं बड़े-बड़े मजिस्ट्रेटों को भी लड़की देने से इनकार कर चुका हूं। भला तुम जैसे बदसूरत मेढक को कैसे दे सकता हूं! तुम बड़े मूर्ख हो जो ऐसी बेतुकी मांग पेश कर रहे हो।"

"अच्छा तो इसका मतलब यह है कि तुम अपनी लड़की देने को राजी नहीं हो," मेढक ने कहा। "ठीक है, अगर तुम राजी नहीं हो, तो मैं हंसना शुरू करता हूं।"

मजिस्ट्रेट को यह सुनकर बड़ा क्रोध आया। "अरे ओ मेढक के बच्चे, लगता है तेरा दिमाग बिलकुल फिर गया है! अगर तू हंसना ही चाहता है तो हंस ले। कौन रोक रहा है तुझे?"

मेढक ने हंसना शुरू कर दिया। उसकी हंसी की आवाज मेढकों के तालाब से रात के अंधेरे में आने वाली टर्राने की आवाज से दस गुनी

ऊंची थी, सौ गुनी ऊंची थी। उसकी हंसी से पृथ्वी डोलने लगी, मजिस्ट्रेट के किले की ऊंची-ऊंची मीनारें इस तरह हिलने लगीं जैसे अभी-अभी गिर पड़ेंगी। दीवारों में दरारें पड़ने लगीं। कंकड़-पत्थर और धूल के कण हवा में उड़ने लगे। उजाला अंधेरे में बदल गया। चारों ओर कुहराम मच गया। मजिस्ट्रेट के परिवार के लोग और सेवक अपनी जान बचाने के लिए इधर-उधर दौड़ने लगे और भगदड़ में एक-दूसरे से टकराने लगे। कुछ लोगों ने मेज-कुर्सियां सिर पर उठा लीं और कंकड़-पत्थरों से बचने के लिए उन्हें ढाल के तौर पर इस्तेमाल करने लगे।

मजिस्ट्रेट ने निराश होकर खिड़की से बाहर झांका और गिड़गिड़ाकर मेढक से विनती की: "मेढक महाशय, कृपा करके हंसना बन्द कर दो। नहीं तो हम सब लोगों की जान खतरे में पड़ जाएगी। मैं अपनी बड़ी लड़की का विवाह तुमसे करने को तैयार हूं।"

मेढक ने हंसना बन्द कर दिया। धीरे-धीरे पृथ्वी का डोलना बन्द हो गया; इमारतें स्थिर हो गईं।

मजिस्ट्रेट को मजबूर होकर अपनी बड़ी लड़की मेढक को देनी पड़ी। उसने सेवक को आज्ञा दी कि वह दो घोड़े ले आए: एक लड़की की सवारी के लिए और दूसरा दहेज ले जाने के लिए।

बड़ी लड़की मेढक से शादी करने के लिए बिलकुल तैयार नहीं थी। घोड़े पर चढ़ने से पहले जब वह छज्जे के पास से गुजर रही थी तो उसने चुपचाप चक्की का एक पाट अपने कपड़ों में छिपा लिया।

मेढक फुदकता हुआ आगे-आगे चलता जा रहा था और बड़ी लड़की घोड़े पर उसके पीछे-पीछे चल रही थी। वह घोड़े को जोर से हांक रही थी, इस उम्मीद से कि घोड़े को तेज रफ्तार से दौड़ाकर वह मेढक के पास पहुंच जाएगी और घोड़े के पांव से कुचल कर उसका काम तमाम कर देगी। लेकिन मेढक कभी दाईं ओर फुदक जाता तो कभी बाईं ओर। इसलिए लड़की की इच्छा पूरी न हो पाई। अन्त में वह बेहद अधीर होकर मेढक के नजदीक जा पहुंची और कपड़ों के अन्दर से चक्की का

पाट निकालकर उसे फुदकते मेढक पर दे मारा। इसके बाद उसने अपने घोड़े को तेजी से घर की ओर दौड़ा लिया।

वह अभी कुछ ही दूर गई होगी कि पीछे से मेढक की आवाज सुनाई दी : "अरी ओ लड़की, ठहरो ! मुझे तुमसे एक जरूरी बात कहनी है।" लड़की ने गरदन मोड़ी तो देखा, मेढक खड़ा है। उसका ख्याल था मेढक कुचलकर मर गया होगा। पर वह तो चक्की के पाट के बीच में बने छेद से बाहर निकल आया था।

लड़की बेहद घबरा गई। उसने अपने घोड़े की लगाम खींच ली। मेढक उससे बोला : "विधाता ने शायद हमें एक-दूसरे के लिए नहीं बनाया है। तुम घर लौट सकती हो। शायद ऐसा ही तुम भी चाहती हो।" मेढक ने उसके घोड़े की लगाम थाम ली और उसके घर की तरफ चल पड़ा।

किले में पहुंचने के बाद मेढक ने मजिस्ट्रेट से कहा : "हमारे विचार एक-दूसरे से मेल नहीं खाते। इसलिए इस लड़की को वापस लौटा रहा हूं। अब तुम मुझे अपनी दूसरी लड़की दे दो। शायद वही मेरे भाग्य में हो।"

"कैसे घमण्डी मेढक हो तुम ! लगता है, तुम अपनी औकात बिलकुल नहीं जानते !" मजिस्ट्रेट क्रोध से बौखलाकर बोला। "तुम मेरी पहली लड़की लौटा रहे हो और दूसरी लड़की मांग रहे हो। जानते हो, मैं एक मजिस्ट्रेट हूं ? तुम्हें मनपसन्द लड़की कैसे दे सकता हूं ?" वह क्रोध से थरथर कांप रहा था।

"इसका मतलब यह है कि तुम अपनी लड़की देने को राजी नहीं हो," मेढक ने कहा। "अगर तुम राजी नहीं हो, तो मैं रोना शुरू करता हूं।"

मजिस्ट्रेट ने मन ही मन सोचा, इस छोटे-से मेढक के रोने से क्या फर्क पड़ने जा रहा है। यह इसकी हंसी जैसा भयानक नहीं हो सकता। इसलिए उसने त्यौरियां चढ़ाकर उत्तर दिया, "रोना चाहते हो, तो रोओ ! तुम्हारे रोने से यहां कौन डरने जा रहा है !"

मेढक ने रोना शुरू कर दिया। उसके रोने की आवाज ऐसी थी

मानो बरसात की रात में मूसलाधार पानी बरस रहा हो। ज्योंही मेढक ने रोना शुरू किया, चारों तरफ अंधेरा छा गया, आकाश में बिजली कड़कने लगी और पहाड़ की तलहटी में बाढ़ आ गई। शीघ्र ही समूची धरती सागर में बदलने लगी ; पानी लगातार बढ़ता जा रहा था और किले की पत्थर की मीनारों तक पहुंचने वाला था। मजिस्ट्रेट और उसके परिवार के लोगों को एक मीनार की छत पर शरण लेनी पड़ी। मजिस्ट्रेट ने गरदन बाहर निकाली और ऊंची आवाज में मेढक से बोला, "मेढक महाशय, रोना बन्द करो। नहीं तो हम सबकी जान खतरे में पड़ जाएगी। मैं अपनी दूसरी लड़की तुम्हें देने को तैयार हूं!"

मेढक ने रोना बन्द कर दिया। पानी धीरे-धीरे घटने लगा।

मजिस्ट्रेट ने मजबूर होकर फिर दो घोड़े लाने को कहा — एक लड़की की सवारी के लिए और दूसरा दहेज ले जाने के लिए। उसने अपनी दूसरी बेटी से मेढक के साथ जाने को कहा।

दूसरी बेटी भी मेढक के साथ शादी करने को राजी नहीं थी। उसने घोड़े पर चढ़ने से पहले चक्की का दूसरा पाट उठा लिया और उसे अपने कपड़ों में छिपा लिया। रास्ते में उसने भी मेढक को घोड़े से कुचलने की पूरी कोशिश की। मौका पाकर उसने भी मेढक के ऊपर चक्की का पाट दे मारा और घोड़े को एड़ मारकर घर की ओर लौट गई।

मेढक ने उसे भी जोर से आवाज लगाकर रोका : "अरी ओ लड़की, ठहरो! विधाता ने हमें एक दूसरे के लिए नहीं बनाया है। तुम अपने घर जा सकती हो।" घोड़े की लगाम पकड़कर मेढक ने उसे भी मजिस्ट्रेट को लौटा दिया। मेढक ने अब मजिस्ट्रेट की सबसे छोटी लड़की की मांग की।

यह सुनकर मजिस्ट्रेट आपे से बाहर हो गया। वह भर्राई हुई आवाज में बोला, "तुमने मेरी बड़ी लड़की को लौटा दिया, तो मैंने अपनी दूसरी लड़की तुम्हें दे दी। लेकिन अब तुम दूसरी लड़की को भी लौटा रहे हो और तीसरी लड़की की मांग कर रहे हो। यह सचमुच तुम्हारी बहुत

ज्यादती है। पूरी दुनिया में मेरे सिवाय एक भी मजिस्ट्रेट ऐसा नहीं जो तुम्हारी इस हरकत को बरदाश्त कर सके। तुम्हें . . . तुम्हें . . . तुम्हें . . . दरअसल कायदे-कानूनों की खाक परवाह नहीं है! . . ." वह इतने आवेश में आ गया कि उसकी जबान लड़खड़ाने लगी और वह अपनी बात भी पूरी नहीं कर पाया। उसने मन ही मन सोचा : जैसा मेरे साथ हुआ है, वैसा आज तक किसी दूसरे मजिस्ट्रेट के साथ नहीं हुआ होगा।

मेढक ने बड़ी शान्ति से उत्तर दिया : "मजिस्ट्रेट साहब, तुम इतने तैश में क्यों आ रहे हो? तुम्हारी दोनों बड़ी लड़कियां मेरे साथ जाने को बिलकुल राजी नहीं हैं। इसलिए मैंने उन्हें तुम्हारे पास वापस लौटा दिया है! लेकिन तुम्हारी तीसरी लड़की मेरे साथ जाने को तैयार है। उसे मेरे साथ क्यों नहीं भेजते?"

"नहीं, यह हरगिज नहीं हो सकता!" मजिस्ट्रेट ने तिरस्कारभरे स्वर में इनकार किया। "वह तुम्हारे साथ जाने को बिलकुल राजी नहीं है। कोई लड़की मेढक के साथ विवाह करने को भला कैसे राजी हो सकती है! अब मैं तुम्हारी मांग हरगिज पूरी नहीं कर सकता!"

"इसका मतलब यह है कि तुम राजी नहीं हो?" मेढक बोला। "अगर तुम मेरी बात नहीं मानोगे, तो मैं कूदना शुरू कर दूंगा।"

यह सुनकर मजिस्ट्रेट बहुत डर गया। पर बाहर से कड़ा रुख दिखाता हुआ बोला : "अगर तुम यही चाहते हो, तो कूद लो। मैं तुम्हारे कूदने से डर गया, तो भला मजिस्ट्रेट कैसे कहला सकता हूं।"

मेढक ने कूदना शुरू कर दिया। उसके कूदने से धरती कांप उठी। उसमें तूफानी सागर के समान हिलोरें उठने लगीं। पर्वत जोर-जोर से हिलने लगे। वे एक दूसरे से टकराने लगे। कंकड़-पत्थर और बालू के कण आकाश में उड़ने लगे। सूरज की रोशनी धुंधली पड़ गई। मजिस्ट्रेट के किले की दीवारें व मीनारें जोर-जोर से हिलने लगीं और ऐसा प्रतीत होने लगा मानो वे किसी भी समय चरमराकर गिर पड़ेंगी।

मजिस्ट्रेट को हार माननी पड़ी और अपनी तीसरी लड़की का विवाह

मेढक के साथ करने का वायदा करना पड़ा। मेढक ने कूदना बन्द कर दिया। धरती और पहाड़ फिर एक बार स्थिर हो गए।

मजिस्ट्रेट को अपनी तीसरी लड़की को मजबूरन मेढक के साथ भेजना पड़ा। एक घोड़े पर उसे बिठा दिया गया और दूसरे घोड़े पर उसका दहेज लाद दिया गया।

तीसरी लड़की अपनी दोनों बहिनों से भिन्न थी। वह बड़ी दयालु थी। उसने मन ही मन सोचा, हो न हो यह कोई विलक्षण शक्ति और बुद्धि वाला मेढक है। इसलिए वह उसके साथ जाने को तैयार हो गई।

मेढक उसे अपने घर ले गया। मां ने जब दोनों को आते देखा, तो आश्चर्य में पड़ गई। उसने सोचा, "कमाल की बात है! मेरे बदसूरत बेटे को इतनी खूबसूरत बहू कैसे मिल गई!"

बहू बड़ी मेहनती थी। रोज अपनी सास के साथ खेतों में काम करने जाती थी। सास उसे बहुत प्यार करने लगी। वह भी अपनी सास का

बड़ा ग्रादर करने लगी। ऐसी गुणवान बहू पाकर सास की खुशी का ठिकाना न रहा।

कुछ समय बाद शरद का मौसम ग्रा गया। स्थानीय रिवाज के मुताबिक हर साल शरद में फ़सल कटने के बाद एक त्यौहार मनाया जाता था। इस मौके पर एक घुड़दौड़ का ग्रायोजन भी किया जाता था। घुड़दौड़ में शामिल होने या उसे देखने ग्रमीर-गरीब सब तरह के लोग ग्रपने-ग्रपने खाल के तम्बुग्रों ग्रौर नई फसल के ग्रनाज के साथ सैकड़ों कोस से एक खुले मैदान में पहुंच जाते थे। वे लोग चन्दन की लकड़ी जलाकर देवी-देवताग्रों की पूजा करते थे, स्थानीय शराब पीते थे, नाचते-गाते थे ग्रौर घुड़दौड़ में भाग लेते थे। इस त्यौहार के मौके पर युवक-युवती ग्रपने-ग्रपने जीवन-साथी भी चुनते थे। मां की इच्छा थी कि इस वर्ष मेंढक भी उनके साथ घुड़दौड़ देखने जाए। लेकिन उसने इनकार कर दिया। बोला, "मैं नहीं जाऊंगा, मां। वहां जाने के लिए बहुत से पहाड़ों को पार करना पड़ता है। मेरे लिए वहां तक पहुंचना मुश्किल है।" इसलिए वह घर पर ही रह गया। परिवार के बाकी सब लोग घुड़दौड़ देखने चले गए।

यह त्यौहार सात दिन तक मनाया जाता था। ग्रन्तिम तीन दिनों में घुड़दौड़ होती थी। हर रोज घुड़दौड़ समाप्त होने के बाद विजयी युवकों को नौजवान लड़कियां घेर लेती थीं ग्रौर उन्हें ग्रपने मां-बाप या भाइयों के तम्बुग्रों में पहाड़ी जौ की शराब पीने के लिए ग्रामंत्रित करती थीं। यह शराब बड़े-बड़े मर्तबानों के ग्रन्दर लड़कियां खुद बनाती थीं।

घुड़दौड़ के तीसरे दिन ग्रन्तिम दौड़ शुरू होने के ठीक पहले हरे कपड़ों में सजा एक बांका जवान हरे रंग के घोड़े पर सवार होकर घुड़दौड़ के मैदान में ग्रा पहुंचा। वह एक हृष्टपुष्ट ग्रौर खूबसूरत नौजवान था। उसके कपड़े बढ़िया किमखाब ग्रौर रेशम के थे। उसके घोड़े की काठी पर सोना-चांदी ग्रौर मनि-मानिक जड़े हुए थे। उसके कन्धे पर चांदी व मूंगे से जड़ी बन्दूक लटकी हुई थी। जब उसने ग्रन्तिम दौड़ में

शामिल होने की अनुमति मांगी, तो लोग देखते रह गए। दौड़ शुरू होने के बाद भी वह बड़े इतमीनान से अपने घोड़े की काठी कसने में लगा हुआ था। दौड़ में शामिल बाकी घुड़सवारों के घोड़े काफी आगे निकल चुके थे। लेकिन दूसरे ही क्षण वह उछलकर अपने घोड़े पर सवार हो गया और देखते ही देखते उनके करीब जा पहुंचा।

सभी घुड़सवार विशाल चरागाह पर अपने-अपने घोड़े सरपट दौड़ा रहे थे। हरे घोड़े वाले नौजवान ने घोड़ा दौड़ाते-दौड़ाते अपनी बन्दूक भरकर तीन गोलियों से आसमान में तीन चीलों को मार गिराया। इसके बाद वह दर्शकों के पास से गुजरता हुआ अपने घोड़े के बाईं तरफ से नीचे कूद पड़ा और सुनहरे फूल चुनकर उन्हें बाईं तरफ के दर्शकों की ओर फेंकता हुआ फिर घोड़े पर सवार हो गया। कुछ देर बाद वह घोड़े के दाईं तरफ से नीचे कूद पड़ा और रुपहले फूल चुनकर उन्हें दाईं तरफ के दर्शकों की ओर फेंकता हुआ फिर घोड़े पर सवार हो गया। उसका घोड़ा हवाई रफ्तार से दौड़ रहा था। हरेभरे चरागाह में उसके घोड़े के खुरों के आघात से धूल के बादल उड़ रहे थे और दूर से देखने पर ऐसा लग रहा था मानो वह बादलों में उड़ रहा हो। दर्शक मंत्रमुग्ध होकर देख रहे थे। उसने दौड़ में बाकी सब घुड़सवारों को पछाड़ दिया और प्रथम स्थान प्राप्त किया।

सभी बुजुर्ग स्त्री-पुरुष, लामा और युवक-युवती उसे देखकर चकित रह गए। वे फुसफुसाकर एक-दूसरे से कहने लगे : "यह नौजवान कौन है ? इसका नाम क्या है ?"

"इसने पहले घोड़ा दौड़ाते-दौड़ाते बन्दूक चलाई, फिर घोड़े के बाईं तरफ से कूदकर सुनहरे फूल चुने और दाईं तरफ से कूदकर रुपहले फूल चुने। ऐसा दृश्य हमने पहले कभी नहीं देखा।"

"कितना खूबसूरत और हृष्टपुष्ट नौजवान है ! जरा इसके बेहतरीन घोड़े और सुन्दर काठी को तो देखो, रेशम और किमखाब को तो देखो ! ये चीजें इस पर कितनी फब रही हैं !"

"इतने हृष्टपुष्ट और सुन्दर नौजवान के लिए इतनी ही खूबसूरत लड़की कहां मिलेगी?"

सभी युवतियां उसे घेर कर खड़ी हो गईं। नवयुवक के सम्मान में उन्होंने बढ़िया-बढ़िया नाच-गाने पेश किए और उसे पहाड़ी जौ की शराब पीने का निमंत्रण दिया, जिसे उन युवतियों ने बड़े-बड़े मर्तबानों में खुद तैयार किया था।

सूरज डूबते ही वह नौजवान अपने हरे घोड़े पर सवार होकर चुपचाप उसी दिशा में उड़ गया जिधर से मेंढक के मां-बाप और उसकी पत्नी आए थे।

लोग हरे घोड़े के खुरों से उड़ने वाली धूल के बादलों को देखते रह गए। मेंढक की पत्नी भी अचम्भे में पड़ गई। वह सोचने लगी: यह नौजवान घुड़सवार आखिर कौन है? कहां से आया है? कितना हृष्टपुष्ट और सुन्दर है यह! क्या नाम है इसका? आखिर सूरज डूबते ही यह वापस क्यों लौट गया? शायद इसका घर यहां से बहुत दूर है। घर लौटने पर भी वह बाकी लोगों की ही तरह उस नौजवान के बारे में सोचती रही और उस गुत्थी को नहीं सुलझा पाई।

मेंढक दरवाजे पर ही खड़ा था। जब उसे घुड़दौड़ के बारे में बताया गया, तो यह देखकर सबको बड़ा अचम्भा हुआ कि उसे सब बातें पहले से ही मालूम थीं, यहां तक कि उस सुन्दर नौजवान घुड़सवार के बारे में भी सब बातें वह पहले से ही जानता था।

अगले वर्ष शरद में, उसी स्थान पर वार्षिक घुड़दौड़ का आयोजन फिर किया गया। मां-बाप और बहू घुड़दौड़ देखने फिर गए।

जब दौड़ शुरू हुई, तो सब लोग हरी पोशाक वाले घुड़सवार और उसके हरे घोड़े के बारे में सोचने लगे। बहुत से लोगों ने कहा, "अगर वह इस बार आया, तो हम लोग उसका नाम-पता जरूर पूछ लेंगे और यह भी पता लगा लेंगे कि वह किस मजिस्ट्रेट के इलाके में रहता है।"

घुड़दौड़ के तीसरे दिन, जब अन्तिम दौड़ शुरू होने वाली थी, ठीक उसी समय हरे घोड़े पर सवार वही नौजवान हरे रंग की पोशाक में सजकर अचानक मैदान में दाखिल हुआ, मानो कोई देवता सीधा स्वर्ग से उतर रहा हो। इस बार भी एक सुन्दर बन्दूक उसके कन्धे पर लटक रही थी। इस बार उसकी पोशाक पहले से ज्यादा चमकीले किमखाब की बनी हुई थी। जब घुड़दौड़ शुरू हो गई और दूसरे घुड़सवार काफी दूर निकल गए, तब भी वह चाय पीता रहा। चाय पीने के बाद वह उछलकर अपने घोड़े पर सवार हो गया। एड़ लगाते ही उसका घोड़ा हवा से बातें करने लगा। पिछले वर्ष की ही तरह इस बार भी उसने अपनी बन्दूक में तीन गोलियां भरीं और उनसे तीन चीलों को मार गिराया। फिर घोड़े के बाईं तरफ से नीचे कूदकर सुनहरे फूल चुनने के बाद उन्हें बाईं तरफ के दर्शकों की तरफ फेंकता हुआ घोड़े पर सवार हो गया। इसके बाद उसने घोड़े के दाईं तरफ से कूदकर रुपहले फूल चुने और उन्हें दाईं तरफ के लोगों की ओर फेंकता हुआ घोड़े पर सवार हो गया। वह अपने घोड़े को बेहद तेज रफ्तार से दौड़ाने लगा। ऐसा लग रहा था मानो कोई हरा बादल चरागाह में उड़ रहा हो। इस बार फिर वही नौजवान प्रथम आया।

हमेशा की ही तरह इस बार भी युवतियों ने विजयी घुड़सवार के सम्मान में नाच-गाने पेश किए। इस बार सभी युवतियों ने उसके सम्मान में विशेष उत्साह से नाच-गाने पेश किए और पहाड़ी जौ की शराब पीने के लिए उसे बड़े उत्साह से अपने-अपने तम्बुओं में आमंत्रित किया। पर सूरज डूबते ही वह नवयुवक फिर एक बार चुपचाप वहां से विदा हो गया।

बुजुर्ग स्त्री-पुरुषों, लामाओं और युवक-युवतियों के समूह घोड़े के खुरों से उड़ने वाली धूल को आश्चर्य से देखते रह गए। किसी को मालूम नहीं था कि यह नौजवान कौन है और कहां से आया है। इस बार भी वे लोग उसका नाम-पता नहीं पूछ पाए।

घुड़दौड़ से घर लौटने पर बूढ़े मां-बाप और बहू को यह जानकर बड़ा अचम्भा हुआ कि वहां की हर बात मेंढक को पता है। उसे यह भी मालूम था कि उस अद्‌भुत युवक ने देर से दौड़ शुरू करने पर भी जीत हासिल कर ली।

बहू ने सोचा, "वहां गए बिना आखिर इसे वहां की सारी बातें कैसे मालूम हो गईं। वह खूबसूरत नौजवान सूरज डूबते ही घर क्यों लौट गया था? वह उसी दिशा में क्यों लौटा था जिधर हमारा घर है? क्या मानवलोक में कोई इतना अच्छा घुड़सवार भी हो सकता है? कितना सुन्दर, कितना बलशाली और कितना आकर्षक था वह नौजवान!" उसने पक्का इरादा कर लिया कि वह इस मामले की तह में जाएगी।

समय बीतते देर न लगी। जल्दी ही वार्षिक घुड़दौड़ का समय फिर आ गया। बहू अपने सास-ससुर के साथ हमेशा की ही तरह इस बार भी पूजा करने, नाचने-गाने और घुड़दौड़ देखने गई। लेकिन घुड़दौड़ के अन्तिम दिन, बहू ने सास से कहा, "मां, मेरा जी बहुत घबरा रहा है। सिर बेहद भारी हो गया है, मानो उस पर किसी ने हजारों मन बोझ रख दिया हो। मैं फौरन घर वापस जाना चाहती हूं। खच्चर पर बैठकर घर लौट जाऊं?"

सास-ससुर बहू का हमेशा बहुत ध्यान रखते थे। उन्होंने उसे परिवार

के उस खच्चर पर घर लौटने की अनुमति दे दी जिस पर वे लोग अपना तम्बू लादकर लाए थे। बहू कुछ ही क्षणों में दूर निकल गई और सास-ससुर की आंखों से ओझल हो गई। उसने खच्चर को सरपट घर की ओर दौड़ा दिया। घर पहुंचते ही वह सबसे पहले अपने पति को ढूंढ़ने लगी। पर उसका कहीं पता नहीं था। अंगीठी के पास उसे केवल मेढक की खाल पड़ी मिली, जो उसके पति की ही खाल की तरह दिखाई दे रही थी। खाल को उसने हाथ में उठा लिया और उसे गौर से देखने लगी। उसकी आंखों में खुशी के आंसू उमड़ आए। वह चिल्ला पड़ी, "अब पता चला कि वह अद्भुत नौजवान घुड़सवार यह मेढक ही है! हे भगवान, मैं कितनी भाग्यशाली हूं! मेरा पति कितना खूबसूरत है, कितना हृष्टपुष्ट है, कितना बढ़िया घुड़सवार है! मुझे यह हरगिज नहीं सोचना चाहिए कि उसका और मेरा कोई मेल नहीं। मैं सचमुच कितनी भाग्यशाली हूं! साथ ही मैं कितनी बड़ी अभागिन हूं, जो अब तक अपने स्वामी के असली रूप के बारे में अन्धकार में थी!"

बहू की आंखों से लगातार आंसू बहते जा रहे थे। उसने बार-बार मेढक की खाल को देखा और नाराज होकर बोली : "तुम इतनी घिनौनी खाल क्यों ओढ़े रहते हो? इतने बौने और बदसूरत क्यों बने रहते हो? क्या मैं तुम्हारे लायक नहीं हूं? क्या तुम हमेशा मेढक ही बने रहोगे और मेरे सच्चे पति कभी नहीं बन पाओगे?"

उसे खाल से घृणा होने लगी। उसने फैसला कर लिया कि उसे जला देगी। उसने सोचा, अगर मैं इस खाल को जलाऊंगी नहीं, तो मेरा पति फिर एक बौना और बदसूरत मेढक बन जाएगा। इसलिए उसने फौरन मेढक की खाल को आग में डाल दिया।

जब खाल जल रही थी, तो सूरज डूबने वाला था। अचानक एक खूबसूरत नौजवान तेजी से घोड़ा दौड़ाता हुआ वहां आ पहुंचा, मानो आकाश से हरे रंग का बादल उतर आया हो। जब उसने अपनी खाल को जलते देखा, तो उसका चेहरा घबराहट से पीला पड़ गया। घोड़े से

नीचे कूदकर वह आग में जलती खाल को बचाने के लिए लपका। पर अब बहुत देर हो चुकी थी ; केवल एक पैर की ही खाल बाकी रह गई थी।

नौजवान ने एक गहरी उसांस भरी और लाश की तरह घर के सामने एक बड़े पत्थर पर गिर पड़ा।

मेढक की पत्नी बहुत घबरा गई और उसे उठाकर घर के भीतर ले जाने के लिए आगे बढ़ी।

"मेरे जीवन-साथी," उसने दुखी होकर कहा, "तुम एक शानदार युवक हो, एक शानदार घुड़सवार हो। फिर तुम मेढक क्यों बने रहना चाहते हो ? बाकी सब स्त्रियों के पति मनुष्य हैं, लेकिन मेरे पति मेढक हैं ! जानते हो, इससे मुझे कितनी वेदना होती है ?"

नौजवान ने उत्तर दिया : "जानता हूं, प्रिये। लेकिन तुमने बड़ी जल्दबाजी से काम लिया, जो कुछ भी किया बड़ी जल्दबाजी से किया। मेरे पर्याप्त शक्तिशाली बनने तक तुम्हें प्रतीक्षा करनी चाहिए थी। तब हम एक साथ सुख से जीवन बिता सकते। अब मैं जीवित नहीं रह सकूंगा और जनता भी खुशहाल नहीं हो सकेगी।"

"तो क्या तुम्हारी खाल जलाकर मैंने कोई गलत काम किया ?" पत्नी ने पूछा। "अब इसका निराकरण करने के लिए मुझे क्या करना चाहिए ?"

"इसमें तुम्हारा कोई दोष नहीं है, प्रिये। यह सब मेरी ही लापरवाही की वजह से हुआ।" नौजवान ने कहा। "मैं अपनी शक्ति आजमाना चाहता था। इसलिए प्रतियोगिता में शामिल होने चला गया। लेकिन अब न जनता ही सुखी रह सकेगी और न हम दोनों ही। मैं कोई साधारण प्राणी नहीं हूं। मैं धरती मां का बेटा हूं। अगर मैं खूब हृष्टपुष्ट और शक्तिशाली बन जाता, तो जनता के सब कष्ट दूर कर सकता था। मैं एक ऐसी दुनिया बनाना चाहता था जहां अमीर लोग गरीबों को पैरों तले न कुचलते, अफसर गरीब जनता का उत्पीड़न न करते। मैं कोई ऐसा रास्ता खोज निकालना चाहता था जिससे हम आसानी से सुन्दर

पङ्चिङ शहर जा सकते और अपने हान भाइयों को अनाज के बदले मवेशी बेच सकते। अभी मैं बड़ा नहीं हो पाया था, पूरी तरह शक्तिशाली नहीं वन पाया था। इसलिए मेढक की खाल ओढ़े विना ठण्डी रातें नहीं विता सकता था। अव मैं पौ फटने से पहले ही मर जाऊंगा। अगर मैं अपनी पूरी शक्ति का विकास करने में कामयाब हो जाता, तो यहां का मौसम काफी गरम हो जाता और मैं जनता के कष्ट दूर करने में सफल हो जाता। तव हमारा जीवन बड़े सुख से बीतता और मैं मेढक की खाल हमेशा के लिए उतार फेंकता। लेकिन तुमने तो समय से पहले ही मेरी खाल जला दी। अब मैं जमीन पर नहीं रह सकता। आज रात धरती मां के गर्भ में लौट जाऊंगा।"

यह सुनकर घुड़सवार मेढक की पत्नी की आंखों से आंसुओं की झड़ी लग गई। पति के निर्बल शरीर को उसने अपनी बाहों में भर लिया और दुखी होकर कहा, "मेरे जीवन-साथी, तुम्हें मरना नहीं चाहिए! तुम्हें अवश्य जीवित रहना चाहिए। मुझे पक्का विश्वास है कि तुम्हारी मृत्यु नहीं होगी।"

पत्नी विलख-बिलख कर रोने लगी। यह देखकर नौजवान ने उसका हाथ अपने कमजोर हाथों में थाम लिया और बोला : "प्रिये, इतनी दुखी क्यों होती हो! मुझे मृत्यु से बचाने का अब भी एक उपाय है।" फिर उसने पश्चिम की ओर इशारा किया और अपनी बात जारी रखते हुए कहा, "यह काम सिर्फ भगवान की इच्छा और अनुमति से ही हो सकता है। अभी वक्त है। उठो और फौरन मेरे घोड़े पर सवार हो जाओ। यह घोड़ा वहुत तेज दौड़ सकता है। यह तुम्हें पश्चिम की ओर ले जाएगा। वहां लाल वादलों के बीच एक दैवी भवन खड़ा है। वहां पहुंचकर भगवान से प्रार्थना करो। उनसे जनता की खुशहाली के लिए तीन चीजों की मांग करो और पौ फटने से पहले ही इन तीनों को पाने का आश्वासन ले लो : पहले, हमारे समाज में गरीब और अमीर का भेद न रहे; दूसरे, सरकारी अफसर आम जनता का उत्पीड़न न करें; तीसरे, कोई ऐसा

रास्ता खोज लिया जाए जिससे हम पेइचिङ जा सकें, वहां जाकर अपने मवेशियों का व्यापार कर सकें तथा अपने हान भाइयों से पांच तरह का माल खरीद सकें। अगर भगवान इन तीनों चीजों को देने का वायदा कर लें, तो मैं ठण्डी रातों में भी मेढक की खाल ओढ़े बिना रह सकूंगा और मरूंगा नहीं। तब हम दोनों सुखपूर्वक जीवन बिता सकेंगे। "

पत्नी उछलकर घुड़सवार मेढक के घोड़े पर सवार हो गई। घोड़ा पलभर में हवा से बातें करने लगा। पत्नी को ऐसा लग रहा था मानो वह आकाश में उड़ रही हो। शीघ्र ही वह चमकदार सफेद बादलों को पीछे छोड़ गई और अन्त में दैवी भवन में जा पहुंची। दैवी भवन सुनहरे सूरज की तरह जगमगा रहा था। वह भवन के अन्दर चली गई और भगवान से प्रार्थना करने लगी। भगवान उसके सच्चे प्रेम से एकदम प्रभावित हो गए और उन्होंने उसकी प्रार्थना स्वीकार कर ली।

भगवान ने उससे कहा, "तुम्हारा प्रेम सच्चा है। इसलिए मैं तुम्हारी सभी मांगे पूरी कर दूंगा। लेकिन शर्त यह है कि पौ फटने से पहले ही तुम्हें घर-घर जाकर यह समाचार सब लोगों को बताना होगा। तुम्हारी प्रार्थना सिर्फ तभी पूरी हो सकेगी जब तुम पौ फटने से पहले यह खबर सब लोगों को सुना दो। इस इलाके में अब ज्यादा ठण्ड नहीं पड़ेगी और तुम्हारे पति को रात में मेढक की खाल नहीं ओढ़नी पड़ेगी।"

यह सुनकर पत्नी बहुत खुश हुई। उसने भगवान को धन्यवाद दिया और घोड़े पर सवार होकर तेजी से घाटी की ओर चल पड़ी। पौ फटने से पहले ही उसे घाटी के हर परिवार को यह खबर सुनानी थी।

लेकिन ज्योंही उसने घाटी में प्रवेश किया, उसकी मुलाकात अपने पिता से हो गई। वह अपने किले के फाटक पर खड़ा था। बेटी को घोड़े पर तेजी से आता देखकर वह जोर से चिल्लाया : "क्या बात है, बेटी? इतनी रात में तुम घोड़े पर कहां से आ रही हो?"

"हां बापू, आज एक बहुत बड़ी बात हो गई है!" लड़की ने कहा। "भगवान ने मुझसे एक बहुत बड़ा वायदा किया है। मैं घर-घर जाकर

यह सूचना सब लोगों को देने जा रही हूं।"

"इतनी जल्दी क्या है? पहले मुझे तो बताओ कि भगवान ने तुमसे क्या वायदा किया है?" मजिस्ट्रेट बोला।

"बापू, फिलहाल मेरे पास समय नहीं है। आपको फिर बताऊंगी।"

"यह नहीं हो सकता! मैं यहां का मजिस्ट्रेट हूं। यह बात तुम्हें पहले मुझे बतानी होगी।" लम्बे डग भरते हुए मजिस्ट्रेट ने सीढ़ियों से नीचे उतरकर बेटी के घोड़े की लगाम थाम ली।

बेटी पिता से फौरन पिण्ड छुड़ाना चाहती थी। इसलिए उसने सारी बात बता दी। "भगवान ने तीन चीजें देने का वायदा किया है," वह बोली। "पहली चीज यह है कि अब से अमीर और गरीब के बीच का फर्क खत्म हो जाएगा।"

यह सुनते ही मजिस्ट्रेट ने नाक-भौं सिकोड़ ली। "अगर अमीर और गरीब के बीच फर्क ही नहीं रहेगा, तो लोगों की हैसियत भी एक जैसी हो जाएगी। ऐसी हालत में तुम्हारी बहिनों को मैं दहेज कैसे दे सकूंगा?" उसने घोड़े की लगाम और मजबूती से पकड़ ली।

"दूसरी चीज यह है कि सरकारी अफसर आम लोगों का उत्पीड़न नहीं कर सकेंगे।"

"ठीक है, लेकिन अगर सरकारी अफसर आम लोगों का उत्पीड़न नहीं करेंगे तो हमारी सेवा-टहल कौन करेगा? हमारे मवेशियों की देखभाल कौन करेगा? हमारी जमीन कौन जोतेगा?" यह कहते-कहते मजिस्ट्रेट का गला रुंधने लगा। "तीसरी चीज कौन-सी है?"

"कोई ऐसा रास्ता निकाल लिया जाएगा जिसके जरिए हम लोग [illegible] जाकर अपने हान भाइयों को मवेशी बेच सकेंगे और उसके बदले [illegible] तरह का माल उनसे खरीद सकेंगे। बापू, अगर भगवान ने अपना वायदा पूरा कर दिया, तो यहां की हालत कितनी अच्छी हो जाएगी, यहां का मौसम कितना सुहावना हो जाएगा! और फिर ..."

उसकी बात अभी पूरी भी न हो पाई थी कि मजिस्ट्रेट बरस पड़ा: "यह

सब बकवास है! हम अपने मवेशियों के साथ काफी खुशहाल हैं। हान जाति के लोगों से माल खरीदने की हमें क्या जरूरत है? मुझे पक्का विश्वास है कि भगवान ने यह सब नहीं कहा। मुझे तुम्हारी बात पर जरा भी यकीन नहीं है। इसे लोगों को बताने की मैं तुम्हें हरगिज इजाजत नहीं दे सकता!"

"बापू, मुझे जाने दो! मैं यहां एक क्षण के लिए भी नहीं रुक सकती!" बेटी जोर से चिल्लाई। वह घोड़े पर चढ़ने की कोशिश करने लगी। लेकिन मजिस्ट्रेट ने घोड़े की लगाम कसकर पकड़ी हुई थी और वह उसे छोड़ने को कतई तैयार नहीं था। वह बैचेन हो उठी और पिता से बहस करती रही।

उसी समय मुर्गे ने बांग दी। बेटी उछलकर घोड़े पर सवार हो गई। वह घोड़े को एड़ मारकर तेजी से भाग जाना चाहती थी। पर मजिस्ट्रेट ने लगाम नहीं छोड़ी। यह हांफने लगा और खीझकर बोला: "क्या तुम बौरा गई हो? क्या तुम यह चाहती हो कि तुम्हारी बहिनों की शादी बिना दहेज के हो? क्या तुम यह चाहती हो कि तुम्हारे पिता की इज्जत-आबरू धूल में मिल जाए? क्या तुम यह चाहती हो कि तुम्हारे मां-बाप अपना काम खुद करें? अगर भगवान ने यह सब कर दिया, तो हमारे मवेशियों की देखभाल आखिर कौन करेगा? हमारी जमीन को आखिर कौन जोतेगा? क्या तुम्हारी अक्ल बिलकुल पथरा गई है?"

बेटी नहीं समझ पाई कि वह क्या करे। मुर्गा दूसरी बार बांग दे चुका था और वह अब भी अपने पिता से संघर्ष कर रही थी।

दुखी होकर उसने घोड़े की पीठ पर जोर से चाबुक मारा। घोड़ा मजिस्ट्रेट को जमीन पर पटककर हवा से बातें करने लगा। अभी वह घाटी के पहले ही घर में पहुंच पाई थी कि मुर्गे ने तीसरी बार बांग दे दी। पौ फटने से पहले वह भगवान का सन्देश सिर्फ कुछ ही परिवारों तक पहुंचा पाई।

घुड़सवार मेढक की पत्नी का दिल बैठने लगा। उजाला हो चुका था।

वह अपने मिशन में सफल नहीं हो पाई थी। जल्दी-जल्दी घर लौटने के सिवाय अब वह कर ही क्या सकती थी!

घर लौटी तो देखा, सास-ससुर उसके नौजवान पति की लाश के पास बैठे विलाप कर रहे हैं। सास लगातार आंसू बहा रही थी और भगवान से उसकी सद्गति के लिए प्रार्थना कर रही थी।

हाय, उसकी सारी मेहनत बेकार गई थी! वह अपने प्रियतम की लाश पर गिर पड़ी और फूट-फूट कर रोने लगी। देरी से घाटी में पहुंचने के लिए वह रह-रहकर अपने को और अपने पिता को दोष देने लगी।

मेढक घुड़सवार की लाश पहाड़ पर एक चट्टान के नीचे दफना दी गई। हर रोज सांझ होने पर उसकी पत्नी समाधि के पास जाती और जोर-जोर से विलाप करती। ऐसा करते-करते एक दिन वह भी चट्टान में बदल गई। उसके बाद घुड़सवार मेढक की पत्नी के रोने की आवाज किसी ने नहीं सुनी।

यह चट्टान उसकी समाधि के पास आज भी खड़ी है। दूर से देखने में ऐसा लगता है मानो बिखरे बालों वाली कोई युवती प्रार्थना कर रही हो। वह अपने पति की समाधि पर हमेशा प्रार्थना करती रहेगी।

काठ का घोड़ा

(उइगुर जाति की लोककथा)

एक समय की बात है। एक बढ़ई और लोहार के बीच बहस छिड़ गई।

"मैं तुमसे अच्छा कारीगर हूं!" बढ़ई बोला।

"तुम यह कैसे कहते हो? दरअसल मैं तुमसे लाख गुना अच्छा कारीगर हूं!" लोहार ने दावा किया।

दोनों आपस में काफी देर बहस करते रहे। लेकिन किसी नतीजे पर नहीं पहुंच पाए। अन्त में यह मामला सुलझाने के लिए दोनों बादशाह के पास जा पहुंचे।

बादशाह ने उनसे पूछा, "तुम लोग यहां किसलिए आए हो?"

"मैं बढ़ई हूं," उनमें से एक बोला, "दुनिया में कोई बढ़ई ऐसा नहीं जो मेरी तरह बढ़िया चीजें बना सके। लेकिन यह लोहार मुझसे अच्छा कारीगर होने का दावा कर रहा है।"

"जो भी मेरी कारीगरी देखता है, प्रशंसा किए बगैर नहीं रह सकता," लोहार बोला। "फिर भी यह बढ़ई कहता है कि इसकी कारीगरी मुझसे बेहतर है!"

फिर दोनों कारीगर एक साथ बोले: "बादशाह सलामत, अब आप

ही फेसला कीजिए कि हम दोनों में कौन बेहतर कारीगर है ?"

उनकी बात सुनकर बादशाह भी दुविधा में पड़ गया। बोला : "इस विवाद का फैसला मैं एकदम कैसे कर सकता हूं ? मैंने तो तुम दोनों का हुनर अभी देखा तक नहीं। जाओ, दस दिन के अन्दर दोनों कोई अच्छी-सी चीज बनाकर मेरे पास ले आओ। तब मैं तुम्हारा फैसला कर सकूंगा।

दोनों वहां से फौरन चले गए और अपने-अपने काम में जुट गए। दस दिन बाद दोनों बादशाह के सामने फिर हाजिर हो गए। लोहार लोहे की एक बड़ी-सी मछली बनाकर लाया था।

"इसकी क्या विशेषता है ?" बादशाह ने पूछा।

"मेरी इस मछली पर अगर अनाज के एक लाख बोरे भी लाद दिए जाएंगे, तो भी यह समुद्र में तैरती रहेगी और डूबेगी नहीं !"

बादशाह को उसकी बात पर यकीन नहीं हुआ। यह मूर्ख अवश्य गलत साबित होगा, उसने सोचा। लोहे की यह मछली इतने भारी बोझ के साथ भला कैसे तैर सकती है ? फिर भी उसने अपने सेवकों को आज्ञा दी कि वे एक लाख अनाज के बोरे मछली पर लादकर उसे समुद्र में छोड़ दें। फिर देखेंगे कि वह तैर सकती है या नहीं। ताज्जुब की बात यह थी कि इतना बड़ा बोझा उठाने के बाद भी मछली डूबी नहीं और बड़ी कुशलता के साथ तेजी से आगे बढ़ने लगी। यह देखकर सब लोग चकित रह गए। बादशाह ने लोहार की भूरि-भूरि प्रशंसा की। "हम तुम्हें अपना अफसर बनाना चाहते हैं," बादशाह बोला। "आज से तुम्हें अपने मुहल्ले का प्रधान नियुक्त किया जाता है।"

बढ़ई काठ का घोड़ा लाया था। उसे देखकर बादशाह को बड़ी निराशा हुई। "यह तो सिर्फ बच्चों का खिलौना मालूम होता है," वह बोला। "लोहार की मछली से भला इसका क्या मुकाबला ?"

"बादशाह सलामत, मैं दावे से कह सकता हूं कि मेरा काठ का घोड़ा लोहे की मछली से लाख गुना बेहतर है !" बढ़ई ने कहा। "क्या आपने इसकी छब्बीस चाबियां देखी हैं ? पहली चाबी घुमाने पर यह उड़ने

लगता है। दूसरी चाबी घुमाने पर यह पहले से ज्यादा तेजी से उड़ने लगता है। और इस तरह जब छब्बीसवीं चाबी घुमाई जाती है, तो यह पक्षी से भी ज्यादा तेजी से उड़ने लगता है। आप इस घोड़े पर सवार होकर आसानी से पूरी दुनिया की यात्रा कर सकते हैं।"

अभी वे लोग बातें ही कर रहे थे कि बादशाह का छोटा लड़का वहां आ पहुंचा। जब उसने यह सुना कि काठ का घोड़ा हवा में उड़ सकता है, तो उसने सोचा, कितना अच्छा हो अगर इस घोड़े पर सवार होकर आकाश में उड़ा जाए और पूरी दुनिया की सैर की जाए! उसने अपने पिता से काठ के घोड़े में उड़ने की इजाजत देने का अनुरोध किया।

"हरगिज नहीं!" बादशाह बोला। "कौन जानता है कि यह घोड़ा सचमुच उड़ सकता है! अगर यह जमीन पर गिर पड़ा, तो क्या होगा?"

"डरने की कोई बात नहीं, बन्दापरवर। यह नीचे हरगिज नहीं गिरेगा!" बढ़ई ने विश्वास दिलाते हुए कहा।

छोटा शहजादा पिता से बार-बार आग्रह करने लगा। सबसे छोटा होने के कारण वह पिता का सबसे लाड़ला बेटा था। बादशाह ने आज तक उसकी कोई मांग कभी अस्वीकार नहीं की थी। अन्त में बादशाह ने मंजूरी दे दी और कहा, "ठीक है, तुम इसकी सवारी कर सकते हो। लेकिन घोड़े को धीरे-धीरे उड़ाना। पहली चाबी के सिवाय किसी और चाबी को न घुमाना।"

छोटे शहजादे ने वायदा किया कि वह ऐसा ही करेगा। घोड़े पर चढ़कर उसने पहली चाबी घुमा दी। घोड़ा सचमुच हवा में उड़ने लगा। शहजादा आसमान में पहुंच गया। पहाड़, नदियां, पेड़-पौधे, शहर और लोग नीचे रह गए। हर चीज उससे दूर होती जा रही थी। वह जितनी ऊंची उड़ान भरता जाता, धरती की चीजें भी उससे उतनी ही दूर होती जातीं। उड़ने में उसे बड़ा आनन्द आ रहा था। जोश में आकर उसने एक के बाद एक सभी चाबियों को घुमा दिया। घोड़े की रफ्तार बढ़ती गई। अनगिनत पेड़-पौधे, गांव और शहर पीछे छूटते गए।

जब शहजादा बहुत दूर निकल गया, तो उसे भूख सताने लगी। भाग्यवश उसे अपने ठीक नीचे एक शहर दिखाई दिया। उसने काठ के घोड़े की सब चाबियों को एक के बाद एक बन्द कर दिया। उसकी रफ्तार धीरे-धीरे कम होती गई और वह सकुशल नीचे उतर गया। छोटे शहजादे ने शहर की एक सराय में भरपेट भोजन किया और कुछ समय के लिए वहीं ठहर गया। अपनी इस यात्रा से वह बहुत खुश था। पलक मारते ही वह एक ऐसे शहर में आ गया था जिसे उसने पहले कभी नहीं देखा था।

दूसरे दिन वह सड़क पर घूमने निकल पड़ा। कुछ मोड़ पार करने के बाद वह एक मैदान में जा पहुंचा। वहां उसने देखा, लोगों की भीड़ आकाश की ओर देख रही है।

वहां जरूर कोई न कोई अजीबोगरीब चीज होगी, उसने सोचा। वह भीड़ के पास जा पहुंचा और बाकी लोगों की ही तरह आसमान की ओर देखने लगा। पर आसमान में उसे कुछ नहीं दिखाई दिया।

"तुम लोग आकाश में क्या देख रहे हो?" शहजादे ने पास खड़े एक आदमी से पूछा।

आदमी ने उसकी तरफ गौर से देखा और बोला : "हमारे बादशाह की एक लड़की है। वह बहुत सुन्दर है। दुनिया में इतनी सुन्दर लड़की शायद ही कहीं हो। बादशाह अपनी लड़की को बेहद प्यार करता है और यह नहीं चाहता था कि उसकी तरफ कोई नजर उठाकर भी देखे। जब वह राजमहल में थी, तो बादशाह को हमेशा उसी की चिन्ता लगी रहती थी। वह एक क्षण के लिए भी चैन से नहीं रह पाता था। अब उसने अपनी लड़की के लिए आकाश में एक महल बनवा दिया है। लड़की वहां अकेली रहती है। बादशाह अपना काम खत्म करने के बाद हर रोज बेटी से मिलने ऊपर जाता है। वह कुछ देर पहले आकाश महल में गया है और जल्दी ही लौटने वाला है। इसलिए लोग आकाश की ओर देख रहे हैं।"

यह सब सुनकर शहजादे को बड़ा अचम्भा हुआ। "आकाश में

महल कैसे बनाया जा सकता है?" उसने पूछा।

"इसे एक फरिश्ते ने बनाया है। सिर्फ बादशाह ही वहां जा सकता है।"

शहजादे के दिमाग में यह अनोखी कहानी लगातार घूमती रही। उस रात वह अपने काठ के घोड़े पर सवार होकर आकाश में जा पहुंचा। वहां सचमुच एक विशाल महल मौजूद था। दरवाजे पर पहुंचकर वह घोड़े से उतरा और अन्दर चला गया।

शहजादी ने देखा, कोई अन्दर आ रहा है। सोचा, उसके पिता होंगे। जब उसे पता चला कि पिता नहीं हैं, तो मन में सोचने लगी : यह जरूर कोई फरिश्ता होगा, मनुष्य तो यहां पहुंच ही नहीं सकता। शहजादी उसका स्वागत-सत्कार करने के लिए उठ खड़ी हुई।

शहजादी नौजवान शहजादे को दूर से भी ज्यादा खूबसूरत लगी। उसे देखते ही वह उस पर मोहित हो गया। "अगर यह मुझसे शादी कर ले, तो दुनिया में मुझसे ज्यादा खुशकिस्मत कोई नहीं होगा!" उसने मन ही मन सोचा।

उधर शहजादी भी उस खूबसूरत नौजवान शहजादे की तरफ आकर्षित होती जा रही थी। उसके मन में भी शहजादे के प्रति प्यार अंकुरित होने लगा। "मेरे पिता ने मुझे न जाने क्यों ऐसी जगह बन्द कर दिया है जहां मैं किसी से नहीं मिल सकती, किसी से बात नहीं कर सकती!" उसने मन ही मन कहा। "मैं भी चाहती हूं कि कोई मेरा चाहने वाला हो, कोई मुझसे प्यार करे!"

अनजाने में ही वे दोनों प्रेमसूत्र में बंध हो गए।

पौ फटने से पहले शहजादा सराय में लौट आया। सांझ होने पर बादशाह अपनी लड़की से मिलने आकाश महल में जा पहुंचा।

जब भी बादशाह शहजादी से मिलने जाता, उसका वजन जरूर नापता था। वह जानता था कि पुरुष-संसर्ग के बाद स्त्री का वजन बढ़ जाता है। उस दिन जब उसने शहजादी का वजन नापा, तो उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा। शहजादी का वजन एक किलो बढ़ चुका था। वह क्रोध से आगबबूला हो उठा। "जरूर दाल में कुछ काला है!" उसने सोचा। इस बात का पता लगाने के लिए वह फौरन अपने महल में लौट आया।

मंत्रियों ने जब बादशाह को बहुत परेशान देखा, तो कारण पूछने लगे। बादशाह ने सारी बात बता दी। "शहजादी से मिलने मेरे अलावा और कौन आ सकता है?" वह बोला। "जैसे भी हो, इस रहस्य का पता लगाने

का कोई तरीका खोज निकालना चाहिए।"

"हमारे पास चार वीर योद्धा हैं," मंत्रियों ने कहा। "आप इन चारों को अपने साथ आकाश महल में ले जाइए और चारों कोनों पर तैनात कर दीजिए। अगर किसी आदमी ने अन्दर जाने की कोशिश की, तो योद्धा पकड़ लेंगे।"

बादशाह को यह सलाह जंच गई। रात होने पर वह चारों योद्धाओं के साथ आकाश महल की ओर चल पड़ा। महल की रखवाली करने के लिए उसने चारों को चार कोनों पर तैनात कर दिया। सारा इन्तजाम पक्का करने के बाद राजा धरती पर लौट आया।

लेकिन मजे की बात यह हुई कि उसके चारों योद्धा खड़े-खड़े गहरी नींद में सो गए। नौजवान शहजादे ने पूरी रात आकाश महल में बिताई। दूसरे दिन बादशाह ने शहजादी का वजन लिया, तो वह पहले से चार किलो ज्यादा निकला। राजा क्रोध से तमतमा उठा।

कुछ ही समय में इस घटना की चर्चा घर-घर में होने लगी। बादशाह इतना शरमिन्दा हो गया कि लोगों के सामने जाने में भी कतराने लगा। उसने अपने एक मंत्री को बुलवाया और उससे राय पूछी। मंत्री ने राय दी कि वह आकाश महल में शहजादी के पलंग पर और कुर्सियों पर गीला रोगन लगवा दे और अगले दिन पूरे शहर में उस आदमी की खोज की जाए जिसके कपड़ों पर यह रोगन लगा हो। इस तरह अपराधी बचकर नहीं निकल सकेगा।

बादशाह सहमत हो गया। उसने शहजादी के पलंग और बाकी फरनीचर पर गीला रोगन लगवा दिया। उस रात शहजादा फिर आकाश महल में गया। लौटते समय उसने देखा, उसके कपड़ों में रोगन लग गया है। उसने अपने कपड़े उतारकर नीचे फेंक दिए। कपड़ों पर कुछ रत्न भी जड़े हुए थे। लेकिन शहजादे को उन्हें फेंकने का जरा भी दुख न था। शहजादी के प्यार के सामने भला इन रत्नों का क्या मूल्य था!

उसी शहर में एक गरीब बूढ़ा आदमी भी रहता था। वह हर रोज

पौ फटने से पहले उठ जाता और सुबह की नमाज के लिए घर-घर जाकर लोगों को जगाता। उस दिन जब वह उठा, तो क्या देखता है कि आकाश से कोई चीज नीचे गिर रही है। "ये कीमती कपड़े जरूर अल्लाह ने ही मेरे लिए भेजे हैं, क्योंकि मैंने अपनी सारी जिन्दगी उसी की खिदमत में गुजार दी है," उसने सोचा और कपड़ों को उठाकर अपने घर ले गया।

शाम को शहर के सभी लोग नमाज पढ़ने मस्जिद में जा पहुंचे। भीड़ में बादशाह के आदमी भी थे। बूढ़ा आदमी अल्लाह के भेजे कपड़े पहनकर खुशी-खुशी नमाज पढ़ने आया था। उसे क्या पता था कि आज उसकी जिन्दगी का सबसे बुरा दिन है। नमाज के बाद उसे गिरफ्तार कर लिया गया।

"तुम्हारे कपड़ों में यह रोगन कैसे लगा?" बादशाह ने कड़कती आवाज में पूछा। "मैं नहीं जानता, गरीबपरवर! ये कपड़े तो मुझे सड़क पर इसी हालत में पड़े मिले हैं!"

बादशाह को उसकी बात पर विश्वास नहीं हुआ। इसलिए उसे जेल में डाल दिया गया। अपराध कबूल कराने के लिए उसे तरह-तरह की यातनाएं दी गईं। अन्त में उसे फांसी लगाने के लिए रस्सी से बांधकर एक मैदान में ले जाया गया।

यह उस शहर की छोटी-मोटी घटना नहीं थी। सब लोग यह देखने को उत्सुक थे कि शहजादी का प्रेमी आखिर कैसा है। जब उन्होंने उस बूढ़े आदमी के गले में फांसी का फन्दा देखा, तो उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ। पूरे शहर में खलबली मच गई। हर आदमी का ख्याल था कि इस बूढ़े आदमी के साथ अन्याय हो रहा है।

[illegible] जब यह खबर नौजवान शहजादे के पास पहुंची तो उसे [illegible] हुआ। काठ के घोड़े को बगल में दबाकर वह तेजी से मैदान की ओर दौड़ पड़ा। बूढ़े आदमी को फांसी लगने ही वाली थी। "ठहरो!" शहजादा जोर से चिल्लाया। "इसे फांसी मत दो! यह बेगुनाह है। [illegible] महल में शहजादी से मिलने यह नहीं मैं गया था। रोगन लगे

कपड़े इसके नहीं मेरे हैं। चाहो, तो मुझे फांसी पर चढ़ा दो! पर इस बेकसूर बूढ़े ग्रादमी को फौरन रिहा कर दो!"

जल्लाद एकदम रुक गए। उन्होंने वादशाह के पास खबर भिजवा दी: "एक नौजवान ग्रपने को ग्रपराधी वता रहा है, ग्रपना जुर्म कबूल कर रहा है। बूढ़े ग्रादमी ग्रौर नौजवान इन दोनों में से किसे फांसी दी जाए?"

"उस नौजवान को फांसी दे दो जो ग्रपने को ग्रपराधी बता रहा है!" बादशाह ने ग्राज्ञा दे दी।

जल्लादों ने बूढ़े ग्रादमी को रिहा कर दिया। पर ज्योंही वे नौजवान शहजादे को वन्दी वनाने के लिए उसकी तरफ वढ़े, वह कूदकर काठ के घोड़े पर सवार हो गया ग्रौर उसकी चावियां घुमाता हुग्रा ग्राकाश में उड़ गया। सव लोग देखते रह गए। जव वादशाह ने देखा कि वह नौजवान इतने लोगों को चकमा देकर भाग गया है, तो वह गश खाकर गिर पड़ा।

नौजवान शहजादा ग्राकाश महल में जा पहुंचा ग्रौर शहजादी से बोला, "हमारा प्रेम दिन-ब-दिन वढ़ता जा रहा है। ग्रव हम दोनों के लिए एक-दूसरे से ग्रलग रहना ग्रसम्भव हो गया है। तुम्हारे पिता को मेरे बारे में सब कुछ पता चल गया है। इस लिए वे मुझे ग्रपने शहर में नहीं रहने देंगे। ग्रब सिर्फ एक ही उपाय रह गया है: तुम हमारे घर चलो। मेरे माता-पिता तुम्हें देखकर बहुत खुश होंगे!"

यह सुनकर शहजादी ने कहा, "मैंने ग्रपनी जिन्दगी तुम्हें सौंप दी है। जहां तुम जाग्रोगे, वहां मैं भी जाऊंगी!"

दोनों ग्राकाश महल से वाहर निकले ग्रौर काठ के घोड़े पर सवार होकर तेजी से उड़ चले। जब वे काफी लम्वा रास्ता पार कर चुके, तो शहजादी ग्रचानक चिल्लाई: "मैं ग्रपने दो मूल्यवान रत्न महल में ही भूल ग्राई हूं। उन्हें मां ने मुझे वचपन में दिया था ग्रौर कहा था कि शादी के बाद मैं उन्हें ग्रपने सास-ससुर को भेंट कर दूं। इन रत्नों के

बिना मैं तुम्हारे साथ कैसे जा सकती हूं ?"

"हम लोग अब आकाश महल से बहुत दूर आ गए हैं," शहजादे ने कहा। "उन रत्नों को भूल जाओ।"

"ऐसा कैसे हो सकता है ! मैं उन रत्नों के बिना आगे नहीं जा सकती। अगर सास-ससुर के पास खाली हाथ गई, तो क्या लोग मेरी खिल्ली नहीं उड़ाएंगे ?"

शहजादे के सामने उसकी इच्छा पूरी करने के सिवाय और कोई चारा नहीं रह गया। उसने चाबियों को बन्द किया और नीचे उतर गया। "मैं यहां तुम्हारा इन्तजार करूंगा," वह बोला। "काठ के घोड़े पर सवार होकर जितनी जल्दी हो सके रत्न लेकर लौट आओ।"

शहजादी घोड़े पर चढ़ गई और महल की ओर उड़ने लगी।

उधर जब बादशाह ने नौजवान को आसमान में उड़ते देखा, तो वह बेहोश हो गया। जब होश में आया, तो सबसे पहले उसे अपनी लड़की का ही ख्याल आया। यह देखने के लिए कि उसकी बेटी नौजवान के साथ गई कि नहीं, वह आकाश महल में जा पहुंचा। वहां लड़की नहीं थी। अभी वह सोच ही रहा था कि क्या करे, अचानक शहजादी लौटती दिखाई दी। वह पलंग के नीचे छिप गया। ज्योंही शहजादी कमरे में आई, बादशाह ने उसे पकड़ लिया। उसे अपने महल में ले जाकर उसने एक खाली कमरे में बन्द कर दिया। वह काठ के घोड़े को भी अपने साथ ले गया। लेकिन यह नहीं समझ पाया कि उसे कैसे इस्तेमाल किया जाता है। इसलिए उसे भी बादशाह ने महल के एक अन्य कमरे में डाल दिया।

पहले किसी और मुल्क के बादशाह ने भी शहजादी की सुन्दरता के बारे में सुना था। वह अपने लड़के की शादी शहजादी से करना चाहता था। शादी की बात पक्की करने के लिए उसने अपना आदमी शहजादी के पिता के पास भेजा था। पर बादशाह ने इनकार कर दिया था। अब तो शहजादी बिलकुल बदनाम हो चुकी थी और अच्छे खानदान का कोई भी नौजवान उससे शादी करने को तैयार न था। इसलिए बादशाह उसकी

शादी एक दूर-दराज मुल्क के शहजादे से करना चाहता था। जब उस मुल्क के बादशाह की ओर से विवाह का प्रस्ताव आया, तो लड़की के पिता ने उत्तर में लिखा :

"मेरी बेटी विवाह योग्य हो चुकी है। मैं उसकी शादी आपके बेटे से करने के लिए तैयार हूं। आज से हम दोनों एक-दूसरे के रिश्तेदार बन गए हैं। हम दोनों के मुल्कों के बीच मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध हमेशा कायम रहेंगे। मैं आशा करता हूं कि आपका बेटा हमारे यहां आएगा और मेरी बेटी को ब्याह ले जाएगा।"

बादशाह ने अपनी लड़की के साथ कैसा व्यवहार किया, इसकी चर्चा किए बिना फिलहाल हम आपको नौजवान शहजादे के पास ले चलते हैं। शहजादा बहुत देर तक अपनी प्रेमिका का इन्तजार करता रहा। उसने चारों तरफ नजर दौड़ाई तो देखा कि वह एक विशाल रेगिस्तान में खड़ा है। चारों तरफ बालू के टीले दिखाई दे रहे थे। जब आंधी चलती, तो बालू के ढेर एक जगह से दूसरी जगह जा पहुंचते। सूरज की किरणें आग उगल रही थीं। हरियाली का कहीं नामोनिशान भी न था। भूख के मारे उसकी आंतें उलटने लगीं और प्यास के मारे गला सूखने लगा। चारों तरफ तलाश करने पर भी उसे कहीं एक भी बूंद पानी नहीं मिला। उसने सोचा, किसी टीले पर चढ़कर शायद कहीं पानी नजर आ जाए। वह रेत के एक ऊंचे-से टीले पर चढ़ने की कोशिश करने लगा। वह जैसे ही ऊपर चढ़ने की कोशिश करता, पांव बालू में धंस जाते। बड़ी मुश्किल से वह टीले पर चढ़ पाया। ऊपर पहुंचने पर उसने सिर उठाकर चारों तरफ देखा। पर उसके पैर के नीचे की बालू खिसकने लगी, मानो वसन्त में बरफ का ढेर पिघल रहा हो। मजबूती से पांव टिकाने के बाद, उसे पास ही एक हराभरा बगीचा दिखाई दिया। उसमें तरह-तरह के पेड़ पके हुए फलों से लदे थे। लाल और हरे रंग के बेशुमार फल डालियों से चिपके हुए थे। उन्हें देखकर शहजादे के मुंह में पानी आ गया। वह बगीचे की ओर दौड़ पड़ा। उसने कुछ आड़ू तोड़कर खा लिए। वे बड़े सुगन्धित,

गोल और रसभरे थे। उसने भरपेट आड़ू खाए और एक पेड़ की छांह में सो गया।

जब जाग खुली और उसने अपने चेहरे पर हाथ फेरा, तो हक्का-बक्का रह गया। उसके चेहरे पर घनी दाढ़ी और मूंछें उग आई थीं। वह नहीं समझ पाया कि यह परिवर्तन कैसे हुआ। इससे पहले उसके चेहरे पर दाढ़ी नहीं थी। वह काफी देर तक इसके बारे में सोचता रहा। तब उसे फिर भूख लग आई। इस बार उसे आड़ू तोड़ने का साहस न हुआ। आड़ुओं पर उसे शक होने लगा। नाशपाती के पेड़ के पास जाकर उसने एक डाली से कुछ नाशपातियां तोड़ लीं। नाशपातियां खूब बड़ी-बड़ी, पतले छिलके वाली और जायकेदार थीं। वे उसे इतनी स्वादिष्ट लगीं कि एक के बाद एक खाता ही चला गया। भरपेट नाशपाती खाने के बाद वह फिर सो गया।

अंधेरा होने से कुछ पहले उसकी नींद टूट गई। पर ज्योंही उसने अंगड़ाई ली, उसका सिर पेड़ के तने से जा टकराया। उसे अपना सिर कुछ भारी-सा मालूम होने लगा।

डरते-डरते उसने अपने सिर पर हाथ फेरा। उस पर दो मोटे-मोटे सींग उग आए थे। दाढ़ी भी बरफ की तरह सफेद हो चुकी थी और एक फुट से ज्यादा लम्बी हो गई थी। उसे अपनी शकल-सूरत की कल्पनामात्र से डर महसूस होने लगा। "जब शहजादी लौटकर आएगी, तो मुझे कैसे पहचान पाएगी? अब वह मुझे हरगिज प्यार नहीं करेगी। ओह, अब मेरा क्या होगा?" वह अपने बारे में जितना ज्यादा सोचता जाता, उसकी घबराहट भी उतनी ही बढ़ती जाती। वह फूट-फूटकर रोने लगा। जब काफी देर हो चुकी, तो थकान के मारे उसकी आंख लग गई।

सपने में एक बूढ़ा बाबा उसके पास आया और उसके सिर पर हाथ फेरता हुआ बोला: "मेरे बच्चे, तुम इतने दुखी क्यों हो?"

नौजवान शहजादे ने अपनी दुखभरी कहानी उसे सुना दी।

"चिन्ता न करो," बूढ़े बाबा ने कहा। "पेड़ों के नीचे से कुछ सूखे

आड़ुओं और नाशपातियों को चुनकर उन्हें खा लो। इससे तुम्हारी दाढ़ी-मूंछें और सींग गायब हो जाएंगे। मेरे बच्चे, इस जगह ज्यादा देर न ठहरो। यहां राक्षस रहते हैं। अभी वे सो रहे हैं। अगर जाग जाएंगे, तो तुम्हें जिन्दा नहीं छोड़ेंगे।"

नौजवान शहजादा हैरान होकर बूढ़े बाबा की बातें सुन रहा था। अचानक उसकी नींद खुल गई। वह आंखें मलता हुआ उठ बैठा। चन्द्रमा आधे आकाश में पहुंच चुका था। ठण्डी हवा के थपेड़े शरीर में सिरहन पैदा कर रहे थे। बालू बिलकुल ठण्डी पड़ चुकी थी। बूढ़े बाबा के आदेशानुसार उसने एक मुट्ठी में सूखे आड़ू भर लिए और दूसरी मुट्ठी में सूखी नाशपातियां। इन फलों को खाने के वाद उसने अपने सिर और चेहरे पर हाथ फेरा। दाढ़ी-मूंछें और सींग सब नदारद हो चुके थे। कुछ देर सोचने के बाद उसने विलो के पेड़ की कुछ टहनियां तोड़ लीं और उनसे एक टोकरी बना डाली। फिर ताजे और सूखे दोनों तरह के आड़ुओं और नाशपातियों को टोकरी में भरकर फौरन बगीचे से बाहर चला गया।

शहजादा घर लौटना चाहता था। लेकिन यह नहीं जानता था कि उसका घर किस दिशा में है। उसने सोचा, मुझे इसके बारे में ज्यादा परेशान नहीं होना चाहिए और जिस तरफ रास्ता मिले चल देना चाहिए। वह जिधर भी जाता, उसे रेत ही रेत दिखाई देती। भूख लगती, तो सूखे आड़ू और नाशपाती खा लेता। थकान महसूस होती, तो जमीन पर सो जाता और उठते ही फिर चल पड़ता। इस तरह वह सात दिन लगातार चलता रहा। इस दौरान उसे परिन्दा भी नजर नहीं आया, मनुष्य की तो बात ही दूर थी। अन्त में उसे एक सड़क मिल गई। उसने राहत की सांस ली। वह सड़क के किनारे बैठ गया।

सबसे पहले उसकी नजर गधे पर सवार एक आदमी पर पड़ी। उसने राजकुमार को बताया कि अगर वह पूरब की ओर जाएगा तो अपने घर पहुंच सकता है और अगर पश्चिम की ओर जाएगा, तो शहजादी के शहर में पहुंच सकता है। "शहजादी और काठ का घोड़ा दोनों ही खो

चुके हैं। उन्हें ढूंढ़े बिना घर जाकर क्या करूंगा ?" उसने सोचा। इसलिए वह पश्चिम की ओर चल पड़ा।

रास्ते में उसे घुड़सवारों का एक दल मिला। वे लोग हथियारों से लैस थे। उनके घोड़े भी खूब सजेधजे हुए थे। पूरा काफिला बहुत शानदार मालूम हो रहा था।

घुड़सवारों के बीचोंबीच एक शाही बग्घी चल रही थी। उसकी खिड़कियों पर शीशे लगे हुए थे। बग्घी को सुनहरे डिजायनों से सजाया गया था। उसे चार अच्छी नस्ल के घोड़े खींच रहे थे। ये घोड़े रेशम और साटन के रंगीन वस्त्रों से सुसज्जित थे। बग्घी को देखने के लिए शहजादा सड़क के एक तरफ हट गया। अचानक बग्घी रुकी और एक आदमी ने उसके पास आकर पूछा कि वह क्या चीज बेच रहा है।

"मेरे पास बेचने के लिए कुछ नहीं है !" उसने जवाब दिया।

आदमी ने उसकी टोकरी की तरफ इशारा करते हुए कहा : "क्या तुम्हारे पास आड़ू और नाशपातियां नहीं हैं ? हमारा शहजादा पूरे दिन यात्रा करके थक गया है। वह भूखा-प्यासा है। टोकरी के कुछ फल हमें क्यों नहीं बेच देते ?"

"ये फल बिकाऊ नहीं हैं। ये तो मेरे अपने खाने के लिए हैं। रास्ते में क्या तुम्हें कहीं घास का तिनका भी नजर आया ? तुम्हीं बताओ, अगर ये फल तुम्हें बेच दूंगा, तो खुद क्या खाऊंगा ?"

बग्घी में बैठे शहजादे ने बौखलाकर अपने सेवक से कहा कि वह फल लेकर जल्दी आए। फिर उसने एक अन्य सेवक को सोने की अशरफी देते हुए कहा : "इन फलों के लिए नौजवान को मुंहमांगा दाम दे दो।"

नौजवान शहजादे ने सेवक से पूछा, "तुम लोग कहां जा रहे हो ?"

"हमारा शहजादा उस शहर की शहजादी से शादी करने जा रहा है।" सेवक ने पश्चिम की ओर इशारा करते हुए कहा।

यह सुनकर नौजवान शहजादे को बड़ा धक्का लगा। पर उसने संयम

रखते हुए सेवक से सारी बात विस्तार से पूछी। अब उसे पक्का यकीन हो गया कि बग्घी में बैठा शहजादा उसी की प्रेमिका से शादी करने जा रहा है। उसने सोने की अशरफी ले ली और दो लाल-लाल ताजे आड़ू और दो बड़ी-बड़ी ताजा नाशपातियां सेवक को दे दीं। बग्घी में बैठा शहजादा बहुत खुश हुआ और सारे फल फौरन खा गया।

घुड़सवारों का काफिला सड़क पर आगे बढ़ता जा रहा था। बग्घी के अन्दर शहजादा गहरी नींद में सो रहा था। बग्घी तेजी से आगे बढ़ती जा रही थी। जैसे ही शहजादे की जाग खुली, वह घबड़ाकर जोर-जोर से रोने लगा। मंत्री और सेवक फौरन बग्घी के पास जा पहुंचे। पर शह-जादा कहीं नजर न आया। बग्घी के अन्दर दो सींगों वाला एक अजीब-सा जानवर बैठा था, जिसके चेहरे पर सफेद दाढ़ी-मूंछें उगी हुई थीं। घुड़सवारों का काफिला रुक गया और फल बेचने वाले नौजवान का इन्त-जार करने लगा।

कुछ देर बाद नौजवान शहजादा भी वहां पहुंच गया। मंत्रियों ने उसे रोककर पूछा, "तुमने हमारे शहजादे को कैसे फल बेचे हैं?"

"क्यों, क्या बात है? मेरे फल तो बिलकुल ठीक हैं। मैंने उन्हें खुद तोड़ा है!"

"फिर उन्हें खाने के बाद हमारे शहजादे के चेहरे पर दाढ़ी-मूंछें और सिर पर सींग कैसे उग आए हैं?"

बग्घी के अन्दर के शहजादे को इस हालत में देखकर नौजवान शहजादा मन ही मन बहुत खुश हुआ। "लेकिन मैं भी तो ये फल हर रोज खा रहा हूं। आखिर मेरे साथ ऐसा क्यों नहीं हुआ?" अपनी खुशी छिपाता हुआ वह बोला।

मंत्री उसकी बात का जवाब नहीं दे पाए।

नौजवान शहजादे ने ऐसा दिखाया मानो वह कुछ सोच रहा हो। फिर इस तरह बोला जैसे यह बात उसे अभी-अभी सूझी हो: "तुम्हारा शहजादा फल खाने के फौरन बाद क्या सो तो नहीं गया था?"

"क्यों नहीं, फल खाने के बाद वह सोया जरूर था!" मंत्रियों ने उत्तर दिया।

"फिर तुम लोग किसी को दोषी नहीं ठहरा सकते। तुम यहां दूसरी जगह से आए हो। इसलिए शायद यहां के नियमों को नहीं जानते। यहां खाने के बाद फौरन सोने की मनाही है। अगर कोई ऐसा करता है, तो उसके चेहरे पर दाढ़ी-मूंछें निकल आती हैं और सिर पर सींग उग आते हैं।"

यह सुनकर सभी मंत्री एक-दूसरे की ओर भय और निराशा के साथ देखने लगे। उन लोगों का ख्याल था कि दोष शहजादे का ही है, क्योंकि वह लालची होने के साथ-साथ आलसी भी है। लेकिन अब क्या किया जाए?

वे लोग इस मसले पर काफी देर तक बहस करते रहे। जाहिर था कि शहजादी अब ऐसे शहजादे से विवाह नहीं करेगी। "अब हमारी भलाई इसी में है कि फौरन घर लौट जाएं," एक मंत्री ने सुझाव दिया। "अगर हम लोग शहजादी के शहर में चले भी गए, तो वे लोग हमें बाहर खदेड़ देंगे।"

लेकिन बग्घी के अन्दर बैठा शहजादा राजी न हुआ। उसने सोचा, शहजादी के बिना घर लौटने से अच्छा तो मर जाना है। "मैं इतने दिनों से शहजादी को मन में बसाए हुए हूं," वह बोला। "वह मेरी बन चुकी है और अब मैं उसे किसी भी हालत में दूसरे के पास नहीं जाने दूंगा!"

उनमें एक मंत्री राजघराने का बड़ा हितैषी था। उसने एक तरकीब सोच निकाली। "क्यों न शहजादे की भूमिका अदा करने के लिए एक खूबसूरत-सा नौजवान ढूंढ़ लिया जाए," उसने राय पेश की। "इस तरह हम शहजादी के घर वालों को धोखा देकर उसे हासिल कर सकते हैं। जहां एक बार वह हमारे मुल्क में आ गई, फिर वह कुछ नहीं कर पाएगी।"

इस राय से सभी मंत्री सहमत हो गए। अब उन्होंने एक खूबसूरत

नौजवान की तलाश शुरू कर दी। वे लोग हर राह चलते नौजवान की खूबसूरती को परखने लगे। अन्त में वे इस नतीजे पर पहुंचे कि फल बेचने वाला नौजवान ही सबसे सुन्दर है। उन्होंने अपनी स्कीम के बारे में उससे बात की। नौजवान शहजादे ने ऐसा दिखाया मानो वह कुछ न जानता हो, इस मामले में कोई दिलचस्पी न रखता हो। "मैं इस पचड़े में नहीं पड़ना चाहता," वह बोला। "तुम लोग इस काम के लिए किसी और को ढूंढ़ लो। मेरे पास अपने ही बहुत से काम हैं।"

मंत्री अनुरोध करते रहे, उस पर दबाव डालते रहे। उन्होंने काम पूरा होने पर पांच सोने की अशरफियां देने का वायदा किया। "पांच तो बहुत कम हैं," नौजवान शहजादा बोला।

"अच्छा, हम तुम्हें सात अशरफियां देंगे। अब तो मान जाओ!" सात अशरफियों पर सौदा तय हो गया। उन्होंने नौजवान शहजादे को तो बग्घी में बिठा दिया और सींग वाले शहजादे को घोड़े पर। सींग वाले शहजादे का चेहरा उन्होंने एक झीने आवरण से ढक दिया और उसके सिर पर कपड़ा बांध दिया। उन्होंने उससे कहा, शहर में प्रवेश करते ही वह किसी कमरे में छिप जाए, और किसी भी हालत में बाहर न निकले।

सारा बन्दोबस्त करने के बाद वे लोग आगे बढ़ गए।

जब वे लोग शहर में पहुंचे, तो बादशाह उनका स्वागत करने आ पहुंचा। यह देखकर उसे बड़ी खुशी हुई कि उसका दामाद एक बेहद खूबसूरत नौजवान है और अपने साथ बहुत से तोहफे भी लाया है। पर अपनी लड़की की कारगुजारियों के बारे में उसे बड़ी चिन्ता थी और डर था कि अगर शहजादे को पता चल गया, तो वह कहीं उससे विवाह करने से इनकार न कर दे। इसलिए वह फौरन शादी की तैयारी में जुट गया। चार दिन तक दावतें चलती रहीं। अधेड़ लोगों के खाने-पीने का इन्तजाम महल के बाहर किया गया और युवक-युवतियों का महल के अन्दर, ताकि वे लोग वर-वधू का मनोरंजन कर सकें। बादशाह का ख्याल था कि अगर दूल्हे और दूसरे मेहमानों को पूरे दिन व्यस्त रखा गया, तो उन्हें शहजादी के चालचलन के बारे में कुछ मालूम नहीं हो सकेगा।

तीन दिन से खूब जश्न मनाया जा रहा था। पर इस दौरान शहजादी लगातार रोती जा रही थी। दूल्हे को देखने के लिए उसने एक क्षण के लिए भी घूंघट नहीं उठाया। वह लगातार अपने प्रेमी नौजवान शहजादे के बारे में ही सोचती जा रही थी। चौथे दिन बादशाह ने एक विश्वसनीय बूढ़ी महिला को यह पता लगाने भेजा कि दूल्हा उसकी बेटी को प्यार करने लगा है या नहीं।

उस रात महल में भोज के समय दूल्हा शहजादी के पास बैठा था। जब सब लोग नाच-गाने में मस्त थे, तो मौके का फायदा उठाकर उसने राजकुमारी के कान में धीरे से कहा कि वह उसका प्रेमी नौजवान शहजादा है। यह सुनते ही शहजादी ने अपना घूंघट उठा लिया और उसकी तरफ देखा। उसे लगा जैसे वह सपना देख रही है। उसे बड़ा ताज्जुब हुआ कि उसके पिता उन दोनों की शादी के लिए आखिर राजी कैसे हो गए?

नौजवान शहजादे को डर था कि शहजादी कहीं कोई ऐसा काम न कर बैठे जिससे दोनों मुश्किल में पड़ जाएं। इसलिए उसने संक्षेप में अपनी

सारी आपबीती उसे सुना दी और उससे कहा कि वह पहले की ही तरह बिलकुल अनजान बनी रहे। इसके बाद शहजादी ने रोना बन्द कर दिया और वह खूब हंसने-बोलने लगी। उसने कई बार शहजादे के साथ नाच भी किया। नाच के दौरान दोनों ने वहां से भाग निकलने की योजना बनाई। शहजादे ने कहा, विवाह के बाद जब वह अपने पिता से विदा होने जाए, तो काठ का घोड़ा जरूर मांग ले और उसके बिना किसी भी सूरत में जाने को तैयार न हो, चाहे बादशाह उसे कितना भी डराए-धमकाए।

बूढ़ी महिला लौटकर बादशाह से बोली : "वे दोनों अब एक-दूसरे को बेहद प्यार करने लगे हैं। सारी रात एक साथ नाचते-गाते रहे हैं।" यह सुनकर बादशाह बहुत खुश हुआ।

दूसरे दिन शहजादी की विदाई का वक्त आ गया। महल के फाटक पर बड़े-बड़े अमीर-उमराव दुलहन को विदा करने आ पहुंचे। नौजवान शहजादा और उसके साथी जाने को तैयार थे। लेकिन महल में शहजादी अपने पिता से काठ के घोड़े की मांग कर रही थी और उसके बिना जाने से इनकार कर रही थी। बादशाह गुस्से से आगबबूला हो उठा। बेटी को डराने-धमकाने के लिए उसने जल्लाद भी बुलाए। लेकिन वह टस से मस न हुई। उसने कहा, काठ के घोड़े के बिना वह यहां से हरगिज नहीं जाएगी और अगर उसकी मांग पूरी न की गई, तो यहीं मर जाएगी। बादशाह क्रोध से पागल हो उठा। उसकी अक्ल काम नहीं कर रही थी। बाहर अमीर-उमराव इन्तजार करते-करते परेशान हो गए। देरी का कारण पता लगाने अन्दर गए, तो बादशाह बोला : "मेरी यह फूहड़ लड़की बच्चों की तरह जिद करके हम सबको परेशान कर रही है। वह काठ का घोड़ा भी अपने साथ ले जाना चाहती है।"

यह सुनकर अमीर-उमराव हंस पड़े। "जब यह खिलौना उसे इतना प्यारा है, तो ले क्यों नहीं जाने देते ?"

अब बादशाह इनकार न कर सका। उसने काठ का घोड़ा शहजादी

को दे दिया। इसके बाद दूल्हा अपनी दुलहन और बरात के साथ विदा हो गया।

यात्रा करते-करते कई दिन बीत गए। नौजवान शहजादे और शहजादी की मंत्री और सेवक पूरी निगरानी रखते थे और उन्हें एक पल के लिए भी अकेला नहीं छोड़ते थे। इसलिए उन्हें भागने का मौका नहीं मिल पा रहा था। जैसे-जैसे वे दाढ़ी-मूंछ और सींग वाले शहजादे के घर के नजदीक पहुंचते जा रहे थे, वैसे-वैसे उनकी चिन्ता बढ़ती जा रही थी। अन्त में नौजवान शहजादे ने एक उपाय खोज निकाला और चुपके से शहजादी के कान में बता दिया। उसने कहा, जब वे लोग महल के फाटक के पास पहुंचे, तो नौजवान शहजादी सोने की अशरफियों से भरी सात तश्तरियों की मांग करे और कहे कि इन अशरफियों को वह मुट्ठियों में भर-भरकर लुटाना चाहती है। जो अशरफियां जिसके हाथ लगेंगी, वे उसी की हो जाएंगी। जब तक उसकी यह मांग मंजूर नहीं की जाएगी, वह बग्घी से नीचे नहीं उतरेगी।

शहजादी ने यह बात अच्छी तरह गांठ बांध ली। फाटक पर पहुंचकर उसने ऐसा ही किया। वह मुट्ठियों में भर-भरकर अशरफियां लुटाने लगी। चारों तरफ अशरफियां ही अशरफियां बिखर गईं। सब लोग सोने की अशरफियों पर मधुमक्खियों की तरह टूट पड़े। मौके का फायदा उठाकर नौजवान शहजादे ने काठ का घोड़ा तैयार कर लिया और शहजादी को अपने साथ घोड़े पर बिठाकर उसकी सब चाबियों को घुमा दिया। पलभर में घोड़ा उन दोनों को लेकर आकाश में पहुंच गया। शहजादे ने घोड़े का मुंह अपने मुल्क की तरफ मोड़ लिया और कुछ ही देर में दोनों सुरक्षित नौजवान शहजादे के माता-पिता के पास पहुंच गए।

शहजादे का पिता दिनरात अपने बेटे के बारे में सोचता रहता था। वह इसके लिए बढ़ई को ही दोषी समझता था और उसे फांसी पर चढ़ाना चाहता था। लेकिन बाद में उसने फ़ांसी देने का इरादा छोड़कर उसे एक पुल पर कीलने का हुक्म दे दिया। नौजवान शहजादे के लौटने से

तीन दिन पहले उसे पुल पर कीला जा चुका था।

"पिताजी," शहजादा बोला, "बढ़ई का काठ का घोड़ा बड़े कमाल का निकला! इसके बिना मैं न तो इतने सारे मुल्कों की यात्रा कर सकता था और न इतनी खूबसूरत शहजादी को ब्याहकर आपके पास लौट सकता था। आप उस माहिर बढ़ई को जरूर कोई अच्छा-सा इनाम दें।"

बादशाह उसकी बात सुनकर दंग रह गया। उसे अपने किए पर बहुत पछतावा हो रहा था। उसने शहजादे को सच्ची बात बता दी। साथ ही उसने बढ़ई को रिहा कराने के लिए एक आदमी फौरन पुल पर भेज दिया। बढ़ई अभी जीवित था। उसे शाही महल में पहुंचा दिया गया। नौजवान शहजादे ने खुद उसकी सेवा-टहल की और जब उसके सब घाव अच्छी तरह भर गए, तो उसे बहुत-सा सोना-चांदी इनाम दिया।

नौजवान शहजादे और खूबसूरत शहजादी की शादी का जश्न फिर एक बार धूमधाम से मनाया गया। कुछ समय बाद शहजादा राजगद्दी का उत्तराधिकारी बन गया।

मा ल्याङ ग्रौर उसकी जादू की कूची

(हान जाति की लोककथा)

बहुत पुरानी बात है। मा ल्याङ नाम का एक लड़का बचपन में ही ग्रनाथ हो गया था। वह जंगल से लकड़ियां चुनकर ग्रौर घास काटकर गुजर-बसर करता था। वह एक बुद्धिमान लड़का था। उसके मन में चित्रकला सीखने की तीव्र इच्छा थी। लेकिन उसके पास कूची खरीदने के लिए पैसे नहीं थे।

एक दिन मा ल्याङ एक स्कूल के पास से गुजर रहा था। उसने देखा, ग्रध्यापक चित्र बना रहा है। कूची से खींचे जाने वाले चित्र को वह बड़े गौर से देखने लगा। मा ल्याङ ग्रनजाने में ही स्कूल के ग्रन्दर चला गया।

"मैं भी चित्रकला सीखना चाहता हूं," उसने कहा। "क्या ग्राप मुझे एक कूची दे सकते हैं?"

"क्या कहा?" ग्रध्यापक उसे घूरते हुए बोला। "एक भिखारी भला चित्रकला कैसे सीख सकता है? तुम सपना तो नहीं देख रहे?" उसने मा ल्याङ को दुतकार कर बाहर खदेड़ दिया।

लेकिन मा ल्याङ ग्रपनी धुन का पक्का था।

"मैं गरीब हूं तो क्या हुग्रा? क्या मैं चित्रकला नहीं सीख सकता?" उसने मन ही मन सोचा।

मा ल्याङ ने चित्रकला सीखने का पक्का इरादा कर लिया और हर रोज चित्र बनाने का अभ्यास करने लगा। जब वह लकड़ी चुनने पहाड़ पर जाता, तो टहनी से बालू पर पक्षियों के चित्र बनाता ; जब नदीतट पर नरकट काटने जाता, तो पानी में अंगुली डुबोकर चट्टान पर मछलियों के चित्र बनाता ; जब घर लौट आता, तो गुफाघर की दीवारों पर मेज-कुर्सियों के चित्र बनाता। उसने अपने गुफाघर की दीवारें चित्रों से भर डालीं।

समय बीतता गया। मा ल्याङ हर रोज चित्र बनाने का अभ्यास करता रहा। उसकी कला का स्तर दिन-ब-दिन ऊंचा होता गया। उसके चित्रों को देखकर लोगों को ऐसा लगता था मानो पक्षी उड़ रहे हों, मछलियां तैर रही हों। उसके सभी चित्र बड़े सजीव होते थे। लेकिन अब भी उसके पास कूची नहीं थी ! वह अक्सर सोचता रहता था, अगर मेरे पास एक कूची होती तो कितना अच्छा होता !

एक दिन सुबह से शाम तक लगातार काम करने और चित्र बनाने के बाद मा ल्याङ बहुत थक गया। बिस्तर पर लेटते ही उसे गहरी नींद आ गई। तभी सफेद दाढ़ी वाला एक बूढ़ा बाबा उसके सामने प्रगट हुआ। उसने मा ल्याङ को एक कूची दी और बोला :

"यह लो बेटा, मैं तुम्हें यह जादू की कूची भेंट कर रहा हूं। इसे सावधानी से इस्तेमाल करना!"

मा ल्याङ ने कूची हाथ में ले ली। कूची चमकदार सोने की बनी हुई थी और कुछ भारी थी।

"वाह, कितनी सुन्दर कूची है यह!" मा ल्याङ खुशी से उछल पड़ा। "बहुत-बहुत धन्यवाद, बाबा! ..."

मा ल्याङ अभी अपनी बात अच्छी तरह पूरी भी नहीं कर पाया था कि सफेद दाढ़ी वाला बूढ़ा बाबा अन्तर्धान हो गया। मा ल्याङ बिस्तर से उठ खड़ा हुआ। तो क्या यह एक सपना था? पर नहीं, यह भला सपना कैसे हो सकता था? जादू की कूची अब भी उसके हाथ में थी! उसे बड़ा अचम्भा हो रहा था।

मा ल्याङ ने जादू की कूची से एक चिड़िया का चित्र बनाया। चित्र पूरा होते ही चिड़िया पंख फड़फड़ाती हुई आकाश में उड़ गई और एक सुरीला गीत गाने लगी। उसने जादू की कूची से एक मछली बनाई। मछली दुम हिलाती हुई पानी में कूद पड़ी और तैरने लगी। यह देखकर मा ल्याङ बहुत खुश हुआ।

अपने गरीब गांववासियों के लिए मा ल्याङ जादू की कूची से हर रोज कुछ न कुछ बनाता रहता था। हर परिवार की आवश्यकता के अनुसार

वह अब तक हल, कुदाली, लैम्प, बाल्टी आदि न जाने कितनी चीजें बना चुका था।

लेकिन यह रहस्य ज्यादा दिनों तक गुप्त नहीं रखा जा सका। मा ल्याङ की जादू की कूची की खबर फैलते-फैलते गांव के जमींदार तक भी पहुंच गई।

जमींदार ने मा ल्याङ को पकड़ने के लिए दो आदमी भेजे। दोनों उसे पकड़कर जमींदार के पास ले गए। जमींदार चाहता था कि मा ल्याङ उसके लिए भी चित्र बनाए।

हालांकि मा ल्याङ अभी बच्चा ही था, लेकिन वह बड़ा होशियार और बहादुर था। अमीरों के हथकण्डों को वह अच्छी तरह समझता था। जमींदार के डराने-धमकाने और फुसलाने का उस पर कोई असर नहीं पड़ा और उसने जमींदार के लिए एक भी चित्र बनाने से इनकार कर

दिया। दुष्ट जमींदार बौखला उठा। उसने मा ल्याङ को अस्तबल में बन्द करवा दिया और भूखा रखा।

तीन दिन बाद भारी बरफवारी होने लगी। शाम तक जमीन पर वरफ की मोटी-मोटी तहें जम गईं। जमींदार ने सोचा, मा ल्याङ भूख से नहीं तो ठण्ड से अवश्य मर गया होगा। इसलिए वह उसे देखने अस्तबल की ओर चल पड़ा। दरवाजे के पास पहुंचकर उसे अन्दर से स्वादिष्ट भोजन की खुशबू आने लगी। दरारों से झांककर अन्दर देखा, तो दंग रह गया। मा ल्याङ अंगीठी के पास बैठा आग ताप रहा था और गरम-गरम केक खा रहा था! जमींदार को अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हुआ। उसने सोचा, इसके पास अंगीठी और केक आखिर कहां से आए? इसने जरूर इन सब चीजों के चित्र बनाए होंगे। गुस्से से आगबबूला होकर उसने अपने आदमियों को हुक्म दिया कि वे मा ल्याङ की जादू की कूची छीन लें और उसे जान से मार डालें। लेकिन जब जमींदार अपने दस-बारह खूंखार कारिन्दों के साथ अस्तबल में पहुंचा, उससे पहले ही मा ल्याङ नौ दो ग्यारह हो चुका था। दीवार पर केवल एक सीढ़ी दिखाई दी, जिससे मा ल्याङ भागा था।

मा ल्याङ का पीछा करने के लिए जमींदार फौरन सीढ़ी पर चढ़ने लगा। पर तीसरे डण्डे पर पांव रखते ही वह धड़ाम से नीचे गिर पड़ा। जब फिर चढ़ने के लिए उठा, तो सीढ़ी गायव हो चुकी थी।

जमींदार के घर से भागने के बाद मा ल्याङ ने फैसला किया कि वह अब अपने गांव में नहीं रहेगा। अगर उसका कोई मित्र उसे अपने यहां छिपाने की कोशिश करता, तो वह जमींदार का कोपभाजन बन सकता था। इसलिए मा ल्याङ ने फैसला किया कि वह अपने गांव से बहुत दूर चला जाएगा। उसने गांव वालों से मन ही मन विदाई लेते हुए कहा :

"मेरे प्यारे गांववासियो, अलविदा!"

इसके बाद उसने एक शानदार घोड़े का चित्र बनाया और उस पर सवार हो गया। घोड़ा सरपट दौड़ने लगा।

अभी वह कुछ ही दूर गया होगा कि उसे अपने पीछे शोरगुल सुनाई पड़ा। पीछे मुड़ा, तो देखा जमींदार और उसके पन्द्रह-बीस गुर्गे घोड़ों पर सवार होकर उसका पीछा कर रहे हैं। उनके हाथ में तेज मशालें थीं। जमींदार के हाथ में तलवार चमक रही थी।

जल्दी ही वे लोग मा ल्याङ के करीब पहुंच गए। मा ल्याङ ने बड़े धीरज के साथ जादू की कूची निकाली और उससे एक तीर-कमान बना लिया। फिर उसने कमान पर तीर चढ़ा दिया और "सर्र" की आवाज के साथ उसे जमींदार की तरफ छोड़ा। तीर जमींदार के गले में लगा और वह घोड़े से नीचे गिर गया। मा ल्याङ ने अपने घोड़े को कसकर चाबुक मारा। घोड़ा हवा से बातें करने लगा।

इस तरह कई दिनों तक लगातार घोड़ा दौड़ाने के बाद मा ल्याङ एक शहर में जा पहुंचा। मा ल्याङ ने उसी शहर में रहने का फैसला कर लिया, क्योंकि अब वह अपने गांव से बहुत दूर आ चुका था। शहर में

उसे काम नहीं मिल पाया, इसलिए वह अपनी जादू की कूची से चित्र वनाकर उन्हें बाजार में बेचने लगा। यह सोचकर कि उसके बारे में कहीं किसी को पता न चल जाए, वह चित्र बनाने में बड़ी सावधानी बरतता था। पशु-पक्षियों के चित्रों में वह उनका कोई न कोई अंग अधूरा छोड़ देता था, ताकि उनमें जान न आ जाए।

एक दिन उसने एक ऐसे सारस का चित्र वनाया जिसकी आखें नहीं थीं। पर अनजाने में ही उसकी कूची सारस के सिर को छू गई। आंखों की जगह स्याही लगते ही सारस ने आंखें खोल दीं और पंख फड़फड़ाता हुआ आकाश में उड़ गया। यह देखकर पूरा शहर चकित रह गया। कुछ शरारती लोगों ने सम्राट से शिकायत कर दी। सम्राट ने मा ल्याङ को राजदरबार में पेश करने का आदेश दे दिया। मा ल्याङ सम्राट के पास नहीं जाना चाहता था। लेकिन उसके सिपाही तरह-तरह के प्रलोभन देकर और डरा-धमका-कार उसे सम्राट के पास ले गए।

मा ल्याङ ने गरीबों पर सम्राट के अत्याचारों की वहुत सी कहानियां सुन रखी थीं। इसलिए वह सम्राट से घृणा करता था। ऐसे आदमी के लिए वह किसी भी

हालत में चित्र नहीं वनाना चाहता था। इसलिए जव सम्राट ने उसे नागराज का चित्र बनाने का आदेश दिया तो उसने नागराज की जगह एक मेढक का चित्र बना दिया ; जव सम्राट ने अमरपक्षी बनाने का आदेश दिया, तो उसने एक मुर्गे का चित्र बना दिया। बदसूरत मेढक और मैला-कुचैला मुर्गा सम्राट के आसपास कूदने-फांदने लगे और चारों तरफ गन्दगी फैलाने लगे। उन्होंने इतनी गन्दगी फैला दी कि पूरे राजमहल में वदबू आने लगी। यह देखकर सम्राट गुस्से से आगबबूला हो उठा और उसने अपने सिपाहियों को हुक्म दिया कि वे मा ल्याङ की जादू की कूची छीन लें और उसे जेल में बन्द कर दें।

जादू की कूची अब सम्राट के कब्जे में आ गई थी। उसने इस कूची से चित्र बनाने की कोशिश की। सबसे पहले उसने एक सोने का पहाड़ वनाया। फिर सोचा, सिर्फ एक सोने का पहाड़ काफी नहीं है। इसलिए वह एक के वाद एक सोने के पहाड़ वनाता गया। सारा चित्र सोने के पहाड़ों से भर गया। लेकिन क्या आप अनुमान लगा सकते हैं कि चित्र पूरा होने के बाद उन सोने के पहाड़ों का क्या हुआ ? वे सब पत्थर की चट्टानों में बदल गए। क्योंकि चट्टानें वहुत भारी थीं, इसलिए वे नीचे गिरने लगीं। सम्राट कुचलते-कुचलते बचा।

फिर भी सम्राट ने लालच नहीं छोड़ा। सोने के पहाड़ बनाने में असफल होने के वाद उसने सोने की ईंटें बनाने की सोची। पहले उसने एक ईंट बनाई। पर वह उसे कुछ छोटी लगी। अब सम्राट ने उससे कुछ वड़ी ईंट बनाई ; लेकिन वह उससे भी सन्तुष्ट न हुआ। अन्त में उसने सोने की एक लम्बी-सी सिल्ली बना डाली। लेकिन क्या आप अनुमान लगा सकते हैं कि चित्र पूरा होने के बाद क्या हुआ ? सोने की सिल्ली ने एक विशाल अजगर का रूप ले लिया। अजगर अपना बड़ा-सा मुंह खोलकर सम्राट की तरफ लपका। यह देखकर सम्राट डर के मारे वेहोश हो गया। भाग्यवश राजदरवार के अधिकारी उसे बचाने आ गए। वरना अजगर उसे निगल जाता।

जब सम्राट को पक्का विश्वास हो गया कि जादू की कूची उसके लिए बेकार है, तो उसने मा ल्याङ को रिहा कर दिया और उसके साथ बहुत अच्छा बरताव किया। उसने मा ल्याङ को ढेर सारा सोना-चांदी भेंट किया और अपनी एक राजकुमारी से शादी करने का अनुरोध किया।

मा ल्याङ अपनी योजना पहले ही बना चुका था। उसने ऐसा दिखाया मानो उसे सम्राट का प्रस्ताव स्वीकार हो। सम्राट यह देखकर बहुत खुश हुआ और उसने मा ल्याङ को जादू की कूची लौटा दी।

"अगर इससे पहाड़ का चित्र बनवाया गया, तो उसमें से जंगली जानवर निकल सकते हैं," सम्राट ने सोचा। "अच्छा यह होगा कि इससे समुद्र का चित्र बनवाया जाए।"

इसलिए मा ल्याङ को उसने पहले समुद्र का चित्र बनाने का आदेश दिया।

मा ल्याङ ने अपनी जादू की कूची उठाई और समुद्र का चित्र बना डाला। पलभर में सम्राट के सामने एक विशाल समुद्र प्रकट हो गया। उसका पानी बिलकुल शान्त था और वह जेड के आईने की तरह चमक रहा था।

"इस समुद्र में मछलियां क्यों नहीं हैं?" समुद्र की ओर देखते हुए सम्राट ने पूछा।

मा ल्याङ ने अपनी जादू की कूची से चित्र में कुछ रंग और भर दिए। क्षणभर में इन्द्रधनुष के सातों रंगों वाली मछलियां प्रकट हो गईं। वे थोड़ी देर दुम हिलाकर पानी में तैरती रहीं; फिर धीरे-धीरे समुद्र की गहराई में विलीन हो गईं।

सम्राट मंत्रमुग्ध होकर यह सब देख रहा था। जब मछलियां बहुत दूर निकल गईं, तो वह मा ल्याङ से बोला :

"जल्दी से एक नाव बना दो। मैं नाव पर बैठकर इन मछलियों को देखने समुद्र में जाना चाहता हूं।"

मा ल्याङ ने एक बड़ी-सी नाव बना दी। नाव पर सम्राट, सम्राज्ञी, राजकुमार, राजकुमारी और बहुत से मंत्री सवार हो गए। फिर कुछ रेखाएं खींचकर उसने हवा बना डाली। समुद्र में हलकी-हलकी लहरें उठने लगीं और नाव आगे बढ़ने लगी।

सम्राट को नाव की रफ्तार कुछ धीमी लगी। नाव के आगे के हिस्से में खड़ा होकर वह जोर से चिल्लाया :

"हवा की रफ्तार और तेज करो! और तेज!"

मा ल्याङ ने अपनी जादू की कूची से कुछ सशक्त रेखाएं खींचीं और हवा की रफ्तार तेज हो गई। समुद्र की लहरें धीरे-धीरे उग्र रूप धारण करने लगीं। नाव के सफेद पाल अपने आप खुल गए और नाव हवा के रुख के साथ तेजी से गहरे समुद्र की ओर बढ़ने लगी।

मा ल्याङ ने अपनी कूची से कुछ रेखाएं और खींच डालीं। समुद्र गरज उठा, उसमें प्रचण्ड लहरें उठने लगीं, नाव डांवाडोल होने लगी।

"बस करो! अब ज्यादा हवा नहीं चाहिए!" सम्राट गला फाड़कर चिल्लाने लगा। "मैं कहता हूं, अब बस करो!"

लेकिन मा ल्याङ ने उसकी बात पर ध्यान नहीं दिया। वह अपनी जादू की कूची चलाता रहा। सहसा समुद्र ने भयानक रूप धारण कर लिया और उसकी ऊंची-ऊंची तरंगें नाव के भीतर तक पहुंचने लगीं।

सम्राट के सारे कपड़े गीले हो गए। वह मस्तूल को पकड़कर खड़ा हो गया और मा ल्याङ की ओर इशारा करता हुआ जोर-जोर से चिल्लाता रहा।

मा ल्याङ ने ऐसा दिखाया जैसे उसे कुछ न सुनाई पड़ रहा हो। वह तेज हवा लाने के लिए नई-नई रेखाएं खींचता रहा। सहसा आकाश

में अंधेरा छा गया। तूफानी हवा के साथ काले बादल उमड़ने लगे। भयंकर लहरें आसमान को छूने लगीं। उनके भीषण थपेड़ों में नाव डगमगाने लगी। अन्त में लहरों के प्रहार से क्षत-विक्षित नाव डूब गई और सम्राट, उसके परिवार के लोग और मंत्रिगण रसातल में पहुंच गए।

सम्राट के मरने के बाद, मा ल्याङ और उसकी जादू की कूची की चर्चा दूर-दूर तक होने लगी। लेकिन मा ल्याङ का क्या हुआ, यह पक्के तौर पर कोई नहीं जानता।

कुछ लोग कहते हैं, उसने अपने गांव लौटकर बाकी जिन्दगी गांव के किसानों के साथ बिताई। कुछ लोग कहते हैं, वह दुनिया में जगह-जगह घूमता रहा और गरीबों के लिए चित्र बनाता रहा।

वीर शिगार की कहानी

(ई जाति की लोककथा)

कहते हैं किसी समय आकाश में सात सूरज थे और छै चन्द्रमा। पृथ्वी रोशनी से जगमगाती रहती थी। उन दिनों मौसम बड़ा सुहावना रहता था। सभी पशु-पक्षी खुशहाली का जीवन विताते थे। ऐसे ही समय पूर्वी समुद्र के एक द्वीप में वीर शिगार का जन्म हुआ था। धीरे-धीरे वह बड़ा हुआ और उसका विवाह हो गया। वसन्त के आरम्भ में एक दिन वह हाथ में तलवार उठाए अपनी दोनों पत्नियों से विदा होकर अपने हवाई घोड़े पर सवार हो गया और विश्व-यात्रा पर निकल पड़ा। वह दुनिया के अलग-अलग स्थानों में जाकर यह देखना चाहता था कि वहां सभी मनुष्य और पशु-पक्षी भगवान की इच्छा के मुताबिक सुख-शान्ति और समानता का जीवन बिता रहे हैं या नहीं।

लम्बे समय तक यात्रा करने के बाद वह ल्याङशान पर्वत के पास एक पठार में जा पहुंचा। वहां पक्षियों का एक समूह दुखी होकर विलाप कर रहा था। "मैं आधी दुनिया की यात्रा कर चुका हूं," उसने सोचा। "सभी स्थानों में मनुष्य और पशु-पक्षी सुख-शान्ति और समानता का

जीवन बिता रहे हैं। फिर ये पक्षी यहां रो क्यों रहे हैं?" पता लगाने के लिए वह पक्षियों के पास जा पहुंचा।

"दुनिया में सभी पशु-पक्षी सुख-शान्ति से रह रहे हैं। पर तुम लोग यहां इतने दुखी क्यों हो?" उसने पूछा।

शिगार की ऊंची ग्रावाज सुनकर सब पक्षी उसकी तरफ देखने लगे।

"कौन कहता है दुनिया में सभी पशु-पक्षी सुख-शान्ति से रह रहे हैं?" एक बातूनी लवा पक्षी ने कहा। "श्रीमान जी, यह बात किसी जमाने में जरूर सच थी। पर जब से पहाड़ पर एक दुष्ट ग्रजगर प्रकट हुग्रा है, तब से हमारा सुख-चैन खत्म हो गया है।"

"क्या कहा?"

"हां, पहाड़ पर एक ग्रजगर प्रकट हो गया है! वह पूर्वी पहाड़ का ग्रजगर कहलाता है!" लवा पक्षी ने रुग्रांसी ग्रावाज में कहा। उस दुष्ट ने ग्रपने हट्टेकट्टे शरीर को छै चन्द्रमाग्रों की रोशनी से बेहद पुख्ता ग्रौर सात सूरजों की गरमी से बेहद मजबूत बना लिया है। ग्रब वह ग्रपने लिए भोजन खोजने खुद नहीं जाता, बल्कि हमें ग्रादेश देता है कि हम रोजाना उसके पास एक पक्षी भेज दें। ग्रगर हम रोज उसके पास एक पक्षी नहीं भेजेंगे, तो वह हम सब पक्षियों को मारकर खा जाएगा। ग्राज तीतर की बारी है। हम उसे विदा करने के लिए इकट्ठे हुए हैं।"

शिगार को तीतर ग्रौर ग्रन्य पक्षियों पर बड़ी दया ग्राई। "तुम इस तरह ग्रपनी जान गंवाने के बजाय उस दुष्ट से लड़ते क्यों नहीं?" उसने पूछा।

उसकी बात सुनते ही सब पक्षी एक साथ बोल पड़े। लवा पक्षी की ग्रावाज उनमें सबसे ऊंची थी: "उस दुष्ट से लड़ाई? उसका ग्रौर हमारा भला क्या मुकाबला! जब तक चन्द्रमा ग्रौर सूरज उसकी हिमायत करते रहेंगे, तबतक वह दुष्ट ग्रजगर ग्रपने ग्रसली ग्राकार में नहीं लौटेगा ग्रौर ठण्ड से नहीं मरेगा।"

"ठीक है! मैं ग्रभी इसका खात्मा करता हूं!" शिगार ने ग्राश्वासनभरे

शब्दों में कहा और फौरन घोड़े पर सवार होकर दौड़ पड़ा।

जल्दी ही वह पहाड़ की चोटी पर जा पहुंचा और कमान खींचकर सूरजों की तरफ तीर छोड़ने लगा। तीर लगते ही पहला सूरज धुएं की काली गेंद में बदल गया और नीचे गिर पड़ा। इसी तरह उसने एक-एक करके छै सूरजों को धराशायी कर दिया। जब छठा सूरज नीचे गिर गया, तो सातवां सूरज बोल पड़ा : "वीर शिगार, जरा ठहरो! अगर तुमने मुझे भी नीचे गिरा दिया, तो पृथ्वी से गरमी बिलकुल खत्म हो जाएगी, सभी जीव-जन्तु ठण्ड से मर जाएंगे, यहां तक कि तुम भी जिन्दा नहीं रह पाओगे!"

"तुम ठीक कहते हो," कुछ सोचने के बाद शिगार बोला। "लेकिन एक बात याद रखो। अब से तुम अपना ताप दुष्ट पशु-पक्षियों को नहीं दोगे।"

पक्षियों ने जब छै के छै सूरजों को एक के बाद एक नीचे गिरते देखा, तो वे खुशी से नाचने लगे।

वे झुण्ड बनाकर अजगर की गुफा में जा पहुंचे। वह अभी जीवित था, लेकिन सिकुड़कर बैठा था और ठण्ड से ठिठुर रहा था। पक्षियों ने आपस में सोच-विचार करने के बाद एक बाज को शिगार के पास भेजा और उससे अनुरोध किया कि अगर वह सूरजों की ही तरह चन्द्रमाओं को भी धराशायी कर दे, तो अजगर फिर उन्हें कोई हानि नहीं पहुंचा सकेगा।

शिगार ने फौरन छै के छै चन्द्रमाओं पर तीर चलाना शुरू कर दिया। जब पांचवां चन्द्रमा भी नीचे गिर गया, तो छठा चन्द्रमा बोल पड़ा :

"वीर शिगार, जरा ठहरो! अगर तुम मुझे भी नीचे गिरा दोगे, तो पृथ्वी में बिलकुल रोशनी नहीं रह जाएगी। अंधेरे में किसी को कुछ नहीं दिखाई देगा, तुम्हें भी कुछ नहीं दिखाई देगा!"

"ठीक है!" कुछ सोचने के बाद शिगार ने कहा। "लेकिन एक बात का वायदा करो। अब से तुम दुष्ट पशु-पक्षियों को अपनी रोशनी नहीं दोगे!"

शिगार बाज के साथ पहाड़ से नीचे उतर आया और पठार की ओर चल पड़ा। वहां सभी पक्षी वीर शिगार की महान विजय की खुशी मना रहे थे। उनमें सभी तरह के पक्षी थे। वे खुशी से पंख फड़फड़ाते हुए नाच रहे थे। ज्योंही लवा पक्षी और तीतर ने शिगार को आते देखा, उन्होंने सब पक्षियों की तरफ से उसे धन्यवाद दिया। उन्होंने कहा :

"वीर शिगार, हम आपके बहुत आभारी हैं। हमारी शान्ति भंग करने वाला अजगर ठण्ड से ठिठुर-ठिठुर कर मर गया है। हमारा खुश-हाल जीवन फिर लौट आया है। पृथ्वी के पक्षी आपका एहसान कभी नहीं भूलेंगे।"

"मुझे धन्यवाद देने की कोई जरूरत नहीं। मैं कामना करता हूं कि तुम सब हमेशा सुखी रहो!" शिगार ने मुस्कराते हुए उत्तर दिया।

पक्षियों से विदा होने के बाद वह अपनी विश्व-यात्रा में आगे बढ़ गया। जल्दी ही वह एक ऐसे गांव में जा पहुंचा जिसके चारों तरफ दीवार बनी हुई थी। फाटक से गुजरकर ज्योंही वह गांव के अन्दर पहुंचा तो उसने देखा, सड़क पर लोग तेजी से इधर-उधर आ-जा रहे हैं। सब लोग बड़े हैरान-परेशान नजर आ रहे थे। उसने अपने घोड़े को सड़क के किनारे खड़ा कर लिया और आने-जाने वालों की भीड़ को देखने लगा। वह खुद भी बहुत दुखी हो रहा था। हो न हो इस गांव पर कोई भारी विपत्ति आई है, उसने सोचा। घोड़े से उतरकर उसने बड़े अदब के साथ एक बूढ़ी स्त्री से पूछा :

"मांजी, सारी दुनिया में सुख-शान्ति और खुशहाली छाई हुई है। फिर इस गांव के लोग इतने दुखी क्यों जान पड़ते हैं?"

"कौन कहता है, दुनिया में सुख-शान्ति है? हां, पहले कभी हम भी सुख शान्ति के साथ रहते थे। पर अब वह जमाना लद चुका है। अब हमारे गांव में जरा भी सुख-शान्ति नहीं है। क्या तुम्हें हमारे गांव में एक भी गाय या भेड़ दिखाई दे रही है? गांव के बाहर घुटने-घुटने ऊंची घास यों पड़ी है और सोतों का पानी बेकार बह रहा है! सभी पशु मर चुके

हैं, अब मनुष्यों की बारी है। हे भगवान, बुढ़ापे में मुझे ये कैसे दिन देखने पड़ रहे हैं?" अपने सफेद बालों की तरफ इशारा करती हुई वह बोली।

"क्या कहा? क्या यहां भी कोई दुष्ट गांव के लोगों की सुख-शान्ति भंग कर रहा है? भगवान चाहता है कि दुनिया में सब लोग सुख-शान्ति से रहें। भगवान की इच्छा के विपरीत काम करने का हक किसी को नहीं है!"

शिगार एक लम्बा-तगड़ा सुन्दर युवक था। साथ ही उसकी आवाज भी बड़ी वजनदार थी। शिगार की आवाज सुनकर लोग उसके चारों तरफ जमा हो गए और अपनी दुखमय दास्तान सुनाने लगे।"

"कुछ समय पहले पश्चिमी समुद्र से एक दैत्य प्रकट हुआ है," एक बूढ़े आदमी ने कहा। "उसने यहां भारी उत्पात मचाया हुआ है। अब तक वह हमारे अनगिनत मवेशियों को खा चुका है। अब वह बड़ा आरामतलब हो गया है। उसने हमें आदेश दिया है कि हम लोग उसका भोजन हर रोज समुद्र के किनारे पहुंचा दें। अगर हम उसका खाना नहीं पहुंचाएंगे, तो वह हमारे पूरे गांव को नष्ट कर देगा और उसे समुद्र में डुबो देगा।..." बूढ़ा आदमी दुखी होकर आहें भरने लगा। एक नौजवान ने उसकी बात जारी रखी:

"वह हमारे सब मवेशियों को खा चुका है और अब मनुष्यों की बारी है।"

यह दैत्य कैसा है?" शिगार ने पूछा।

"जादूगर का कहना है कि यह एक अनिष्टकारी ड्रैगन है!" किसी ने उत्तर दिया।

शिगार फौरन जादूगर की खोज में निकल पड़ा।

"इस अनिष्टकारी ड्रैगन के बारे में तुम क्या जानते हो?" जादूगर को देखते ही शिगार ने ऊंची आवाज में पूछा।

"हर बात जानता हूं!" जादूगर ने शिगार की तरफ देखे बिना सिर नीचा करके उत्तर दिया।

"तुम्हारे जादू-टोने का आखिर क्या फायदा ? यह दैत्य तुम्हारे गांव के लोगों को खा रहा है और तुम कुछ नहीं कर रहे !"

"श्रीमान जी, मंत्र पढ़ते-पढ़ते मेरा गला सूख गया है ! इस दुष्ट ड्रैगन पर मंत्रों से काबू पाना सम्भव नहीं है। जब यह पानी के अन्दर होता है तो इसे खोजना असम्भव हो जाता है। जब यह भूमि पर होता है, तो नौ बार तेज किए गए छुरे से वार करने पर भी इसकी खाल पर खरोंच तक नहीं आती। इसे केवल आग में जलाकर मारा जा सकता है। पर यह हमारे बूते के बाहर है।"

"कोई न कोई उपाय तो निकालना ही होगा !"

शिगार सिर झुकाकर कुछ देर सोचता रहा। फिर घोड़े पर सवार होकर पश्चिम की ओर चल पड़ा। शीघ्र ही वह काले लोहे के एक बड़े-से पहाड़ पर पहुंच गया। वहां घास का एक भी तिनका नजर नहीं आ रहा था। पहाड़ की तीन बार परिक्रमा करने के बाद शिगार ने लोहे की तीन मोटी-मोटी सलाखें उठाईं और लौट पड़ा। हालांकि आने-जाने में उसे हजारों कोस का फासला तय करना पड़ा, फिर भी पूरी यात्रा में उसे सिर्फ उतना ही समय लगा जितना एक बार खाना खाने में लगता है।

शिगार ने लोगों के साथ मिलकर समुद्रतट पर लकड़ियां जलाईं, लोहे की सलाखों को गरम करके लाल-सुर्ख बना दिया और गांव की अन्तिम भेड़ कटवा दी। उसने लोहे की सलाखों को जोड़कर दरवाजे की चौखट का रूप दे दिया और उसके नीचे कटी हुई भेड़ रख दी। लाल-सुर्ख सलाखों के ताप में भेड़ का मांस भुनने लगा और उसकी सुगन्ध चारों तरफ़ फैलने लगी।...

शीघ्र ही हवा का एक तेज झोंका आया और समुद्र के पानी में दस फुट ऊंची लहरें उठने लगीं। काले रंग का अनिष्टकारी ड्रैगन समुद्र से बाहर निकला और भुनी हुई भेड़ की तरफ लपका। उसने भेड़ को निगलने के लिए अपना मुंह खोला ही था कि तीनों लाल सलाखें उसके ऊपर गिर पड़ीं। वह दर्द से चीख उठा और तड़पने लगा। नथुनों से गरम-गरम भाप

ि...ने लगी। कुछ ही देर में उसके प्राण निकल गए।

अधिकतर गांववासी दूर से ही यह सारा दृश्य देख रहे थे। पर कुछ साहसी लोग नजदीक आकर स्थिति का जायजा ले रहे थे। वे दौड़कर बाकी साथियों के पास जा पहुंचे और आंखोंदेखा हाल उन्हें बताने लगे। सभी नौजवान वीर शिगार के साहस और बुद्धि की सराहना करने लगे। माताओं ने अपने बच्चों को बताया कि वे वीर शिगार को हमेशा याद रखें।

शिगार के पराक्रम की प्रशंसा के गीत गाते हुए गांव के सब लोग एक जगह इकट्ठे हो गए और उसे धन्यवाद देने लगे। "भगवान चाहता है कि दुनिया में सब लोग सुख-शान्ति से रहें," अपने घोड़े पर चढ़ते हुए शिगार ने कहा। "उसकी इच्छा का अनादर नहीं करना चाहिए। यह दुष्ट ड्रैगन मर चुका है। अब दूसरों को डराने-धमकाने वाला कोई जन्तु नहीं रह गया है। इसलिए तुम लोग सुख-शान्ति से जीवन बिता सकते हो और अपना पशुधन फिर बढ़ा सकते हो।"

लोग शिगार के प्रति आभार प्रकट करने के लिए नाचते-गाते हुए काफी दूर तक उसके पीछे-पीछे चलते रहे और जब तक वह उनकी आंखों से ओझल नहीं हो गया तब तक उसी दिशा में देखते रहे।

इस वीरतापूर्ण कारनामे के बाद शिगार पूर्वी समुद्र के द्वीप में अपनी पहली पत्नी से मिलने जा पहुंचा। पत्नी को अपने प्रीतम से मिले एक लम्बा अरसा हो चुका था। उसे देखते ही उसकी आंखों में आंसू छलछला आए। लेकिन जब उसे अपने पति के वीरतापूर्ण कारनामों का पता चला, तो वह बहुत खुश हुई।

लेकिन स्वार्थवश उसने एक मूर्खता कर डाली। यह सोचकर कि पति दूर देशों की यात्रा पर फिर न निकल जाए, उसने रात के अंधेरे में चुप-चाप उसके हवाई घोड़े का एक पंख काट दिया।

दूसरे दिन शिगार तड़के ही अपने हवाई घोड़े पर सवार होकर दूसरी पत्नी से मिलने चल पड़ा। लेकिन वहां पहुंचने में उसे बड़ी कठिनाई हुई

और उसके घोड़े को बहुत ताकत लगानी पड़ी।

दूसरी पत्नी भी उसे देखते ही रोने लगी। लेकिन जब उसने अजगर और ड्रैगन को मारने की कहानी सुनी, तो वह भी खुश हो गई।

यह सोचकर कि वह लम्बी यात्रा पर फिर न निकल जाए, उसने भी रात के अंधेरे में चुपचाप हवाई घोड़े का दूसरा पंख काट दिया।

शिगार फिर एक बार विश्व-यात्रा करना चाहता था। जून के महीने में एक दिन वह हर रोज से कुछ पहले उठ गया। उसने अपने हवाई घोड़े को चुपचाप बाहर निकाला और उस पर सवार हो गया। ज्योंही उसने एड़ लगाई, घोड़ा जोर से उछला। लेकिन पंख न होने की वजह से उड़ नहीं पाया और हिनहिनाता हुआ चारों तरफ चक्कर काटने लगा।...

हिनहिनाने की आवाज सुनकर उसकी पत्नी फौरन बाहर निकल आई। लेकिन तब बहुत देर हो चुकी थी। पत्नी के कुछ कहने से पहले ही शिगार और उसका घोड़ा समुद्र में गिर चुके थे।

"वीर शिगार समुद्र में गिर गया है! वीर शिगार अपने घोड़े समेत समुद्र में गिर गया है!" यह खबर कानोंकान सभी लोगों और पशु-पक्षियों में फैल गई। वे कितने दुखी हुए, इसका वर्णन शब्दों में करना कठिन है। लोगों और पशु-पक्षियों के झुण्ड के झुण्ड शोक प्रगट करने समुद्रतट पर आ पहुंचे। पक्षी समुद्र से वीर शिगार को लौटाने की प्रार्थना करने लगे। पर लहरों के गर्जन-तर्जन के सिवाय उन्हें कुछ न सुनाई पड़ा। जब वे हताश हो गए, तो वहां से चले गए। फिर भी उन्होंने आशा नहीं छोड़ी। हर वर्ष जून में पठार के सब पक्षी समुद्रतट पर जमा हो जाते हैं और समुद्र से वीर शिगार को लौटाने की प्रार्थना करते हैं।

विशाल समुद्र में ऊंची-ऊंची लहरें लगातार उठती रहती हैं, पर पक्षियों को कोई उत्तर नहीं मिलता।

तीसरा बेटा और दुष्ट मजिस्ट्रेट

(च्वाङ जाति की लोककथा)

किसी समय एक गरीब बूढ़ा आदमी बांस की चीजें बनाकर अपना और अपने परिवार का पेट पालता था।

उस बूढ़े आदमी के तीन बेटे थे। मरने से पहले वह अपने तीनों बेटों से बोला : "तुममें से हर आदमी को कोई न कोई हुनर सीख लेना चाहिए। मैंने अपना पूरा जीवन तुम्हारे पालन-पोषण में लगा दिया। अब तुम्हें अपनी रोजी का बन्दोबस्त खुद करना होगा।"

यह कहने के बाद उसके प्राणपखेरू उड़ गए। मरते समय वह कुछ पैसे छोड़ गया था। उनसे बेटों ने एक ताबूत खरीदा और अच्छी तरह उसका अन्तिम संस्कार कर दिया।

पिता की कमाई में से उनके पास केवल तीन सिक्के बच गए थे। तीनों बेटों ने एक-एक सिक्का बांट लिया।

बड़ा बेटा बहुत आलसी था। वह पूरे दिन इधर-उधर वक्त बरबाद करता रहता था। इसलिए उसका सिक्का पिता की मृत्यु के बाद जल्दी ही खत्म हो गया। आलसीपन के कारण उसने कोई काम नहीं किया। अन्त में भुखमरी के कारण उसकी मृत्यु हो गई।

दूसरा बेटा बड़ा मेहनती था। उसने सब्जी उगाने का हुनर सीख

लिया। अपने सिक्के से वह कुछ बीज खरीद लाया और एक अच्छा माली बन गया। पर कमरतोड़ मेहनत करने पर भी वह दो जून का खाना मुश्किल से जुटा पाता था।

तीसरा बेटा अभी बहुत छोटा था। फिर भी वह पूरे दिन अपनी जीविका के बारे में सोचता रहता था।

एक दिन उसने नदी किनारे कुछ मछुवों को काम करते देखा। उनके काम करने के तरीके को वह बड़े ध्यान से देखता रहा। इस तरह उसने मछली पकड़ना सीख लिया। वह अपने सिक्के से मछली पकड़ने की दो बंसियां खरीद लाया और हर रोज मछली पकड़ने नदी किनारे जाने लगा। वह नदी में मछलियां पकड़ता और उन्हें बेच देता। धीरे-धीरे वह बहुत सी मछलियां पकड़ने और बेचने लगा। अब उसका गुजारा अच्छी तरह चलने लगा। कुछ पैसे उसके पास बच भी जाते थे, जिनसे वह रोजमर्रा की जरूरत की चीजें खरीद सकता था। कुछ ही दिनों में वह एक माहिर मछुवा बन गया।

एक दिन वह नदी किनारे देर तक मछलियों की प्रतीक्षा करता रहा। पर उसके हाथ एक भी मछली नहीं लगी। वह अपने भाग्य को बुरी तरह कोसने लगा। तभी उसे पानी में एक बड़ी-सी मछली दिखाई दी, जो आंखें मटकाती हुई और पूंछ हिलाती हुई तैर रही थी तथा बंसी के कांटे में फंसने वाली सभी छोटी मछलियों को निगलती जा रही थी। यह देखकर तीसरे बेटे को इतना गुस्सा आया कि उसने अपनी बरछी उठाई और मछली पर दे मारी। बरछी से बिंधी मछली ने पानी में एक पलटा खाया और नदी के पेंदे में जा पहुंची। पानी में बुलबुले उठने लगे। बरछी से बंधी रस्सी की मदद से तीसरे बेटे ने मछली को ऊपर खींच लिया।

उस दिन उसके हाथ केवल एक ही मछली लगी थी। इसलिए उसने उसे खुद ही पकाने का फैसला किया। जब उसने मछली का पेट काटा, तो उसके अन्दर बहुत-सी छोटी-छोटी मछलियां मौजूद थीं। उनमें एक

बहुत ही सुन्दर कार्प मछली भी थी। वह ग्रभी जीवित थी ग्रौर गलफड़ों से सांस ले रही थी। तीसरे बेटे को उस सुन्दर कार्प मछली पर दया ग्रा गई। उसने एक तांबे के तसले में साफ पानी भरा ग्रौर कार्प मछली को उसमें छोड़ दिया। वह ग्रपनी दुम हिलाती हुई पानी में तैरने लगी। तीसरा बेटा खुश होकर उसे देखता रहा। देखते-देखते उस कार्प मछली से उसे लगाव हो गया। तीसरे बेटे ने उसे ग्रपने ही पास रख लिया। वह उसे रोज़ केंचुग्रा, काई ग्रौर सेवार खिलाता था।

सुनहरी कार्प मछली दिन-ब-दिन सुन्दर होती गई। तीसरा बेटा उसे बहुत चाहने लगा। मछलियां पकड़ते, बाजार जाते ग्रौर खेल देखते समय भी वह कार्प मछली को ग्रपने साथ रखता।

एक दिन तीसरा बेटा मछली बेचने बाजार गया तो कार्प मछली को ग्रपने साथ नहीं ले गया। घर लौटा, तो कार्प मछली वहां नहीं थी। वह हैरान रह गया। खड़ा-खड़ा तांबे के खाली तसले को देखता रहा। ग्रांखों से ग्रांसू टपटप तसले पर गिरने लगे। उस दिन से वह बहुत दुखी रहने लगा ग्रौर ग्रकेलापन महसूस करने लगा।

एक दिन वह नदी किनारे बरगद के पेड़ के नीचे बैठा मछलियां पकड़ रहा था। नदीतट की ठण्डी-ठण्डी बयार ग्रौर लहरों के कलकल संगीत की थपकियों में उसे नींद ग्रा गई। लेकिन ग्रचानक उसकी जाग खुल गई।.... वह ग्रपनी ग्रांखें मलने लगा। उसने देखा, उसी की उम्र का एक युवक उसका कन्धा थपथपा रहा है। युवक बड़े प्यार से उससे बोला: "भैया, क्या तुम मुझे नहीं पहचानते?" तीसरे बेटे ने सोचा, मुझे तो ग्राज तक किसी ने "भैया" कहकर नहीं पुकारा। यह कौन हो सकता है? "ग्रच्छा, तो तुमने मुझे ग्रब भी नहीं पहचाना?" ग्रजनबी ने फिर कहा। "ग्ररे भाई, मैं तुम्हारा पक्का दोस्त हूं ग्रौर तुमने ही मेरे प्राण बचाए हैं!" यह सुनकर तीसरा बेटा ग्रौर ग्रधिक उलझन में पड़ गया। वह नहीं समझ पाया कि क्या जवाब दे। ग्रन्त में ग्रजनबी युवक ने गुत्थी सुलझा दी: "मैं वह सुनहरी कार्प मछली हूं, जिसे तुमने बचाया

था और जिसकी तुमने इतनी अच्छी तरह देखभाल की थी।"

यह सुनते ही तीसरा बेटा सारी बात समझ गया। कार्प मछली ने बताया कि वह जल-जन्तुओं के शासक नागराज का बेटा है। उस दिन वह एक सुनहरी कार्प का वेष धारण करके घूमने-फिरने बाहर निकला था। पर अचानक एक बड़ी मछली ने उसे निगल लिया। अगर तीसरे बेटे ने बड़ी मछली को न मारा होता, तो उसके प्राण नहीं बच सकते थे।

"तुमने मेरी जान बचाई, मुझे अपने पास रखा और अच्छा-अच्छा खाना खिलाया। तुम्हारी इस दयालुता को मैं और मेरे माता-पिता कभी नहीं भूल सकते। मैं तुम्हें अपने घर चलने का निमंत्रण देने आया हूं।" नागराज का बेटा बोला।

"मुझे तुम्हारे साथ जाने में बड़ी खुशी होगी," तीसरे बेटे ने जवाब दिया। "लेकिन मैं पानी के भीतर कैसे जा सकता हूं ?"

"अपनी आंखें बन्द कर लो और मेरे कपड़े का छोर पकड़कर मेरे पीछे-पीछे चलते रहो !" नागराज के बेटे ने कहा।

तीसरे बेटे ने वैसा ही किया। उसे लगा जैसे किसी लम्बी सड़क पर चल रहा हो। जल्दी ही वे दोनों नागराज के महल में पहुंच गए। महल लाल बिल्लौर के खम्भों और हरे बिल्लौर की दीवारों से बना हुआ था। रंगबिरंगे पारदर्शी बिल्लौर से महल की सुन्दरता में चार चांद लग गए थे।

नागराज ने तीसरे बेटे का बहुत आदर-सत्कार किया। उसके ठहरने का इन्तजाम सबसे अच्छे कमरे में किया और उसे बढ़िया-बढ़िया व्यंजन खिलाए। नागराज का लड़का उसे अपना बगीचा भी दिखाने ले गया। वहां उसने तरह-तरह के विचित्र फल-फूल देखे। बगीचे में उसने शहद से भी ज्यादा मीठी बिना गुठली वाली लीची देखी, चाय की प्याली से भी ज्यादा बड़े "नागचक्षु" फल देखे और रसभरे आड़ू देखे। बगीचे में सदाबहार केले और अन्य पेड़-पौधे भी थे, जिन्हें उसने पहले कभी नहीं देखा था।

तीसरा बेटा कोई एक महीने तक नागराज के महल में रहा। एक दिन उसने नागराज के बेटे से कहा : "भैया, तुमने मेरी बहुत सेवा की है। इसके लिए मैं तुम्हारा बहुत ग्राभारी हूं। पर मेरे घर की देखभाल करने वाला ग्रौर कोई नहीं है, इसलिए मुझे ग्रब यहां से लौट जाना चाहिए।"

"ग्रगर तुम सचमुच ही लौट जाना चाहते हो, तो ठीक है," नागराज के बेटे ने कहा। "लेकिन कभी-कभार हमारे यहां ग्राते रहना। एक बात मैं तुमसे ग्रौर कहना चाहता हूं : ग्रगर मेरे पिताजी तुम्हें कोई उपहार देना चाहें, तो तुम उनसे सिर्फ सफेद मुर्गी मांगना।"

दूसरे दिन सुबह तीसरा बेटा नागराज से विदा लेने जा पहुंचा। सोने-चांदी से भरे कई कमरे दिखाते हुए नागराज ने उससे बड़े स्नेह से कहा : "इन बहुमूल्य चीजों में से तुम जो भी चीज ले जाना चाहो ले जा सकते हो!" तीसरे बेटे ने चमकदार सोने की सिल्लियों, चांदी की ईंटों, मोती की लड़ियों ग्रौर रत्नों की ग्रोर एक नजर देखा। तभी उसे नागराज के बेटे की बात याद ग्रा गई ग्रौर वह बोल पड़ा : "महाराज, मेरे पास खाने-पीने की चीजों की कमी नहीं है। पर मैं घर में ग्रकेला हूं ग्रौर यह ग्रकेलापन कभी-कभी मुझे काटने लगता है। ग्रगर ग्रापको कोई परेशानी न हो, तो मुझे ग्रपनी सफेद मुर्गी दे दीजिए। उससे मेरा मन लगा रहेगा।" नागराज कुछ देर के लिए सोच में पड़ गया ग्रौर ग्रपनी सफेद दाढ़ी पर हाथ फेरने लगा। ग्रन्त में उसने तीसरे बेटे की बात मान ली ग्रौर उसे सफेद मुर्गी दे दी।

तीसरे बेटे ने सफेद मुर्गी को पिंजरे में बन्द कर लिया ग्रौर घर की ग्रोर चल पड़ा। घर लौटकर वह हर रोज पहले की ही तरह मछली पकड़ने ग्रौर उसे बाजार में बेचने जाने लगा। लेकिन जब वह घर लौटता, तो गरम-गरम चावल ग्रौर स्वादिष्ट व्यंजन मेज पर रखे मिलते।

पहले दिन उसने सोचा, शायद पड़ोसियों ने खाना बनाकर उसके लिए रख दिया है। पर जब वह उन्हें धन्यवाद देने गया, तो यह जानकर उसे बड़ा ग्राश्चर्य हुग्रा कि खाना पड़ोसियों ने नहीं रखा था!

एक दिन इस रहस्य का पता लगाने तीसरा बेटा पूरे दिन घर पर ही रहा। पर उस दिन खाना बनाने कोई नहीं आया। दूसरे दिन वह रोज की ही तरह फिर मछली पकड़ने चला गया। जब लौटा, तो मेज पर खाना तैयार रखा था। वह हैरान रह गया। उसने मन ही मन कहा, "यह खाना आखिर कौन बनाता है? अगर उसका पता चल जाता, तो मैं कम से कम उसे धन्यवाद तो दे देता।"

दूसरे दिन वह घर से मछली पकड़ने तो निकला, लेकिन आधे रास्ते से ही लौट आया और दरवाजे की दरार से अन्दर झांकने लगा। उसने देखा, एक सुन्दर लड़की सफेद चोली और रंगीन लहंगा पहने अंगीठी के पास खड़ी खाना बना रही है। वह अपने को न रोक सका और जोर से चिल्लाया: "सुन्दर लड़की, मैं तुम्हें किन शब्दों में धन्यवाद दूं!" आवाज सुनते ही लड़की ने ताली बजाई और वह सफेद मुर्गी बनकर पिंजरे में पहुंच गई।

तीसरा बेटा कुछ न कर पाया। सिर्फ अगले दिन का इन्तजार करता रहा। अगले दिन भी वह हमेशा की ही तरह मछली पकड़ने घर से निकल पड़ा। लेकिन आधे रास्ते से ही लौट आया और दरवाजे की दरार से अन्दर झांकने लगा। उसने देखा, सफेद मुर्गी फिर पिंजरे से बाहर निकलकर एक सुन्दर लड़की बन गई है। उसने फौरन दरवाजा खोल दिया। लड़की पिंजरे के अन्दर नहीं लौट पाई और लज्जा से सिर झुकाए उसके सामने खड़ी रही।

"सुन्दरी, तुम सचमुच बड़ी दयालु हो! तुम हर रोज मेरे लिए खाना बना जाती हो! मैं तुम्हारा बड़ा आभारी हूं। पर तुम हो कौन और कहां से आई हो?"

"आभारी होने की क्या जरूरत है," लड़की ने कहा। "मैं दरअसल तुम्हारी कोई खास सेवा नहीं कर पा रही हूं। मैं नागराज की कन्या हूं। तुमने मेरे भाई के प्राण बचाए हैं। मैं तुम्हारे एहसान का बदला चुकाने आई हूं।"

दोनों के मन में एक-दूसरे के लिए प्रेम अंकुरित होने लगा। अन्त में दोनों ने विवाह कर लिया। नव-दम्पति को बधाई देने लोग दूर-दूर से आए। एक गरीब आदमी के तीसरे बेटे के साथ नागराज की कन्या के विवाह ही कहानी सुनकर सबको बड़ा आश्चर्य हुआ।

एक दिन दुष्ट काउन्टी मजिस्ट्रेट का एक गुर्गा भी वहां आया। उसने मजिस्ट्रेट को बताया कि उसने एक बेहद सुन्दर लड़की देखी है, जो नागराज के महल से यहां आई है। इसके बाद नौजवान दम्पति को भारी मुसीबतों का सामना करना पड़ा। मजिस्ट्रेट ने हुक्म दिया कि तीसरे बेटे को उसके सामने पेश किया जाए।

"इस काउन्टी के सभी कस्बे और छोटे-बड़े गांव मेरे अधीन हैं। यहां का हर काम मेरे हुक्म के मुताबिक होता है," मजिस्ट्रेट ने तीसरे बेटे से कहा। "मैं तुम्हें हुक्म देता हूं कि तीन दिन के अन्दर अपनी पत्नी को मेरे पास भिजवा दो। वरना तुम्हारा सिर काट दिया जाएगा!"

"अपनी पत्नी के सिवाय मैं आपके लिए हर चीज ला सकता हूं, आपकी हर मांग पूरी कर सकता हूं।" तीसरे बेटे ने दृढ़ता से उत्तर दिया। दुष्ट मजिस्ट्रेट बड़े शातिराना ढंग से मुस्कराया और बोला : "तुम कहते हो, मेरी हर मांग पूरी कर सकते हो। अच्छी बात है। तुम मछुए हो, इसलिए मैं तुम्हें हुक्म देता हूं कि तीन दिन के अन्दर मेरे लिए एक ही आकार की एक सौ बीस लाल कार्प मछलियां पकड़कर लाओ। हर मछली का वजन ठीक बारह औंस होना चाहिए, न रत्तीभर कम न रत्तीभर ज्यादा।"

तीसरा बेटा चिन्ता में पड़ गया। घर लौटकर उसने सारी घटना अपनी पत्नी को बता दी। पत्नी ने ढाढ़स बंधाते हुए कहा : "चिन्ता न करो। मैं तुम्हारी मदद करूंगी!" फिर उसने लाल कागज काटकर एक ही आकार की एक सौ बीस कार्प मछलियां बना डालीं और उन्हें कांच के बरतन में छोड़कर ऊपर से ठण्डा पानी डाल दिया। पानी पड़ते ही सब मछलियां जीवित हो उठीं। सभी कार्प मछलियों का आकार एक जैसा था और सब लाल रंग की थीं। बरतन के अन्दर पानी में तैरती वे कार्प मछलियां बेहद सुन्दर लग रही थीं। तीसरा बेटा उन्हें आश्चर्य से देखता रह गया। पर उन्हें ज्यादा देर अपने पास न रखकर शीघ्र ही मजिस्ट्रेट के पास ले गया।

तीसरे बेटे को परास्त करने में पहली बार असफल रहने के बाद उस दुष्ट मजिस्ट्रेट ने दूसरी मांग पेश कर दी : "मुझे पता चला है कि तुम्हारी पत्नी बहुत अच्छा कपड़ा बुन सकती है। उससे कहो कि मेरे लिए सड़क के बराबर लम्बा नीला कपड़ा बुने। लेकिन यह काम तीन दिन के अन्दर पूरा हो जाना चाहिए।"

"आप आखिर एक के बाद एक चीज की मांग क्यों करते जा रहे हैं?" तीसरे बेटे ने कहा।

"क्या तुमने खुद ही नहीं कहा था कि तुम मेरी हर मांग पूरी कर सकते हो?" मजिस्ट्रेट बोला।

तीसरे बेटे ने सोचा, इस दुष्ट मजिस्ट्रेट से बहस करना व्यर्थ है।

इसलिए गुस्से में भरकर घर लौट गया। इस बार भी उसकी पत्नी ने सान्त्वना देते हुए कहा :

"चिन्ता न करो। मैं इसका उपाय जानती हूं।" इसके बाद वह एक सफेद मछली में बदल गई और तैरती हुई अपने पिता के शीशमहल में जा पहुंची। शीशमहल से लौटते समय वह अपने साथ एक जादू की तुम्बी लेती आई, जो इसकी हर इच्छा पूरी कर सकती थी।

तीसरा बेटा जादू की तुम्बी पाकर बहुत खुश हुआ। तीसरे दिन उन्होंने नीला कपड़ा मजिस्ट्रेट के पास भेज दिया।

"यह कपड़ा कितना लम्बा है?" मजिस्ट्रेट ने पूछा। "सड़क के बराबर," तीसरे बेटे ने उत्तर दिया। "तुम कैसे जानते हो कि यह सड़क के बराबर लम्बा है?" मजिस्ट्रेट ने बौखलाकर पूछा। "अगर आप चाहें, तो नापकर देख सकते हैं," तीसरा बेटा बोला। मजिस्ट्रेट ने तुरन्त कपड़े को नापने का आदेश दे दिया। उसके कर्मचारी पूरे दिन और पूरी रात कपड़ा नापते रहे। फिर भी वह खत्म नहीं हुआ। यह देखकर मजिस्ट्रेट बदनीयती के साथ बोल पड़ा : "ठीक है, हम मान लेते हैं कि तुम पूरा कपड़ा लाए हो। लेकिन कल तुम्हें मेरे लिए कुछ लाल भेड़ें लानी होंगी!

लाल भेड़ें मिलने पर उसने भैंसों की मांग की। तीसरे बेटे को उसकी यह मांग भी पूरी करनी पड़ी। यह सिलसिला काफी समय तक चलता रहा। मजिस्ट्रेट मांग पेश करता रहा और तीसरा बेटा उसे पूरा करता रहा। यह देखकर मजिस्ट्रेट को तीसरे बेटे पर बहुत गुस्सा आया। वह बोला : "तुम इतने गरीब हो। फिर भी मेरी हर मांग कैसे पूरी कर रहे हो? तुम्हारे पास जरूर कोई जादू की चीज है। उसे फौरन मेरे सुपुर्द कर दो!"

तीसरे बेटे ने सोचा, यह मजिस्ट्रेट बड़ा लालची है। एक के बाद एक मांग करता जा रहा है! अगर जादू की तुम्बी इसे दे दूंगा, तो मेरा क्या होगा? अगर इसने किसी और चीज की मांग की, तो उसे मैं कैसे पूरा करूंगा? इसलिए वह जोर से बोला : "मैं आपकी हर मांग पूरी कर चुका

हूं। अब जादू की चीज कहां से पैदा कर सकता हूं ?"

मजिस्ट्रेट गुस्से से आगबबूला हो उठा। उसने मेज पर जोर से मुक्का मारा और चिल्लाकर बोला : "मेरा हुक्म मानते हो कि नहीं ? अगर जरा भी आनाकानी की, तो जेल में बन्द कर दूंगा !"

तीसरे बेटे के लिए अपना गुस्सा रोकना असम्भव हो गया। मजिस्ट्रेट के सरकारी निवास से बाहर निकलते ही वह जोर-जोर से चिल्लाने लगा : "यह मजिस्ट्रेट राक्षस है ! यह मजिस्ट्रेट राक्षस है !"

मजिस्ट्रेट के गुर्गे ने सुना, तो वह दौड़ा-दौड़ा शिकायत करने जा पहुंचा। मजिस्ट्रेट ने आदमी भेजकर तीसरे बेटे को गिरफ्तार कर लिया और कालकोठरी में डाल दिया। दूसरे दिन उसे मजिस्ट्रेट के सामने पेश किया गया। मजिस्ट्रेट तीसरे बेटे पर बरस पड़ा : "तुम मुझे राक्षस कहते हो ! जानते हो, राक्षस कैसा होता है ? तीन दिन के अन्दर एक सौ बीस राक्षस मेरे सामने पेश करो। नहीं तो मैं तुम्हारा सिर कटवा दूंगा !"

मजिस्ट्रेट का हुक्म मानने के सिवाय तीसरे बेटे के सामने और कोई चारा नहीं था ! वह घर लौट गया और पत्नी से सलाह-मशविरा करने लगा। "वह राक्षसों की मांग क्यों कर रहा है ?" पत्नी ने आश्चर्य से कहा। "ठीक है, हम उसे राक्षस दे देंगे, लेकिन जादू की तुम्बी हरगिज नहीं देंगे।"

पत्नी ने जादू की तुम्बी से एक सौ बीस बड़े-बड़े कठघरों और बारह सौ चिन कोयले की मांग की। फिर उसने दस चिन कोयला हर पिंजरे में रखकर उन पर रंगीन कागज चिपका दिया। इसके बाद उसने उन पिंजरों में तेल डाला। तेल डालते ही कोयले के ढेरों में जान आ गई और वे तरह-तरह के राक्षसों में बदल गए। पिंजरों में बन्द ये राक्षस "राक्षस ! राक्षस !" चिल्लाने लगे।

तीसरा बेटा राक्षसों को लेकर मजिस्ट्रेट के निवास की ओर चल पड़ा। रास्ते में राक्षसों को देखने वाले लोगों की भीड़ जमा होती गई। मजिस्ट्रेट के सरकारी निवास तक पहुंचते-पहुंचते भीड़ बढ़ती गई। मजिस्ट्रेट ने

भीड़ को हटाने और पिंजरों को नजदीक लाने का आदेश दिया। "क्या इन कठघरों में सचमुच राक्षस बन्द हैं?" उसने पूछा।

"लेकिन ये खाते क्या हैं?"

"केवल तेल पीते हैं। इन्हें केवल एक बार तेल पिलाना होता है, बार-बार पिलाने की जरूरत नहीं होती। तेल पिलाने के बाद ये कभी नहीं मरते। पर आपको इन्हें ताले में बन्द रखना होगा।"

मजिस्ट्रेट ने तीसरे बेटे से फिर कुछ नहीं कहा और उसे घर लौटने दिया।

राक्षसों को देखकर मजिस्ट्रेट बहुत खुश हुआ। उसने सोचा, क्यों न इन्हें सम्राट को भेंट कर दिया जाए। उस रात उसने राक्षसों को बहुत सा तेल पिलाया और उनकी अच्छी तरह देखभाल की।

ये राक्षस दरअसल बड़े पेटू थे। एक ही बार के भोजन में बारह सौ चिन तेल पी गए। उनके पेट इतने फूल गए कि वे रातभर चीखते-चिल्लाते रहे। यह सोचकर कि उन्हें जरूर कोई रोग हो गया है, मजिस्ट्रेट ने चिराग जलाया और उन्हें देखने जा पहुंचा। ज्योंही वह कठघरों के पास पहुंचा, चिराग की लौ से राक्षसों ने आग पकड़ ली। पलभर में आग की लपटें चारों तरफ़ फैल गईं। आग से मजिस्ट्रेट का पूरा सरकारी निवास खाक में मिल गया तथा मजिस्ट्रेट, उसके अफसर और गुर्गे सभी जलकर भस्म हो गए।

लम्बी दीवार पर पति की तलाश

(हान जाति की लोककथा)

ईसा के लगभग दो सौ साल पहले की बात है। छिन राजवंश का पहला सम्राट श ह्वाङ अभी गद्दी पर बैठा ही था। सम्राट अपनी प्रजा पर बहुत अत्याचार करता था। अपने राज्य की सुरक्षा के लिए उसने एक लम्बी दीवार बनाने का फैसला किया। दीवार के निर्माण के लिए उसने अनगिनत लोगों को देश के कोने-कोने से पकड़ लिया और उनसे बेगार कराई। निर्माण-कार्य रात-दिन चलता रहा। मजदूरों को ढेर सारी मिट्टी और ईंटें ढोनी पड़ती थीं। साथ ही उन्हें पेशकार के कोड़ों की मार और गाली-गलौज भी सहनी पड़ती थी। उन्हें भरपेट खाना नहीं मिल पाता था ; उनके बदन के कपड़े तार-तार हो गए थे। हर रोज बहुत से मजदूरों की अकाल मृत्यु हो जाती थी।

नौजवान वान शील्याङ को भी सम्राट श ह्वाङ की लम्बी दीवार के निर्माण-स्थल पर बेगार करने जबरन भरती किया गया था। उसकी पत्नी एक सुन्दर और नेक स्त्री थी। उसका नाम मङ च्याङन्वी था। जब पति को लम्बी दीवार के निर्माण-स्थल पर बेगार करते काफी अरसा हो गया और उसकी कोई खबर न मिली, तो वह बहुत दुखी हुई। सोचने लगी, पति को सम्राट का न जाने कितना अन्याय-अत्याचार सहना पड़

रहा होगा। पति के विछोह में पत्नी के मन में उस दुष्ट शासक के प्रति घृणा की भावना दिन-प्रति-दिन बढ़ती गई।

तभी वसन्त का सुहावना मौसम आ गया। फूल खिलने लगे। पेड़-पौधे अंकुरित होने लगे। घास हरीभरी हो गई। अबाबीलों के जोड़े आकाश में उड़ने लगे। खेत में काम करते-करते मङ च्याङन्वी पति की याद में खो गई और गुनगुनाने लगी :

आया चैत, खिली फुलवारी,
अबाबील है नीड़ सजाती,
उड़ते जोड़ों में सब पंछी,
मैं एकाकी, दुख की मारी!

वसन्त बीत गया, गरमियां गुजर गईं, शरद का मौसम आ गया। लेकिन पत्नी को वान शील्याङ की कोई खबर नहीं मिली। पता चला कि लम्बी दीवार का निर्माण उत्तर की तरफ हो रहा है और वहां इतनी ठण्ड पड़ती है कि हड्डियां कांपने लगती हैं। जब मङ च्याङन्वी को यह बात पता चली, तो उसने अपने पति के लिए जल्दी-जल्दी एक रूईदार कोट सिला और एक जोड़ी जूते बनाए। लेकिन इन चीजों को उसके पति के पास कौन ले जाता? लम्बी दीवार वहां से इतनी दूर जो थी। वह बार-बार सोचती रही कि यह सवाल कैसे हल किया जाए। जब अन्य कोई उपाय नहीं सूझा, तो उसने फैसला किया कि कपड़े और जूते देने वह खुद ही पति के पास जाएगी।

जब मङ च्याङन्वी ने अपनी यात्रा शुरू की, तो ठण्ड पड़ने लगी थी। पेड़ों से पत्ते झड़ने लगे थे। शरद की फसल भी कट चुकी थी। खेत खाली पड़े थे। उनमें कोई आदमी नजर नहीं आ रहा था। मङ च्याङन्वी को अकेले यात्रा करने में बड़ा अजीब लग रहा था। वह पहले कभी अपने गांव से बाहर नहीं निकली थी। उसे रास्ता भी मालूम नहीं था। इसलिए लोगों से बार-बार रास्ता पूछना पड़ रहा था।

एक बार रात होने के पहले वह किसी गांव या कस्बे में नहीं पहुंच पाई। उसे सड़क के किनारे पेड़ों के झुरमुट के बीच एक मन्दिर में रात गुजारनी पड़ी। पूरे दिन चलने की वजह से वह बहुत थक गई थी। इसलिए पत्थर की बेंच पर लेटते ही उसे गहरी नींद आ गई। सपने में उसने देखा, उसका पति उसकी ओर आ रहा है। वह खुशी से फूली न समाई। लेकिन तभी पति ने उसे बताया कि उसकी मृत्यु हो चुकी है। यह सुनते ही वह पागलों की तरह रोने लगी . . . सुबह उठी, तो सपना याद आते ही उसका दिल आशंकाओं से भर गया। वह मन ही मन सम्राट को कोसने लगी, जिसने असंख्य लोगों को अपने परिवार से जुदा कर दिया था।

मङ च्याङन्वी ने अपनी यात्रा जारी रखी। एक दिन वह एक पहाड़ी सड़क के किनारे एक छोटी-सी सराय में पहुंची। सराय की मालकिन एक बूढ़ी स्त्री थी। मङ च्याङन्वी के थके-हारे चेहरे और धूल में सने कपड़ों को देखकर उसने पूछा कि वह कहां जा रही है। मङ च्याङन्वी ने उसे अपनी दास्तान सुना दी। बूढ़ी स्त्री का दिल पसीज गया। "हे भगवान!" उसने गहरी उसांस भरते हुए कहा, "लम्बी दीवार तो यहां से अभी बहुत दूर है। तुम्हें बहुत से पहाड़ों और नदियों को पार करना पड़ेगा। तुम जैसी कमजोर स्त्री वहां कैसे पहुंच सकती है?" लेकिन मङ च्याङन्वी ने बूढ़ी स्त्री को बताया कि वह अपने पति को जूते-कपड़े अवश्य पहुंचाएगी, चाहे रास्ते में उसे कितनी ही कठिनाइयों का सामना क्यों न करना पड़े। बूढ़ी स्त्री उसके संकल्प से बहुत प्रभावित हुई। लेकिन साथ ही चिन्तित भी हो उठी और सोचने लगी: क्या यह सकुशल लम्बी दीवार तक पहुंच भी पाएगी? दूसरे दिन वह मङ च्याङन्वी के प्रति सहानुभूति दिखाती हुई उसे कुछ दूर तक पहुंचाने भी गई।

मङ च्याङन्वी लगातार आगे बढ़ती जा रही थी। एक दिन वह पहाड़ों के बीच एक गहरी घाटी में पहुंच गई। सहसा आकाश में काले बादल घिर आए और उत्तर की तरफ से तेज हवा चलने लगी। मौसम बहुत ठण्डा हो गया। वह घाटी में लगातार चलती रही। पर उसे कहीं एक

भी घर नहीं दिखाई दिया। खरपतवार, कंटीली झाड़ियों और चट्टानों के सिवाय वहां कुछ नहीं था। सांझ होने पर अंधेरा इतना बढ़ गया कि रास्ता खोजना भी मुश्किल हो गया। पहाड़ की तलहटी में एक नदी वह रही थी। उसका पानी बिलकुल गदला था। मङ च्याङन्वी नहीं सोच पाई कि रात बिताने कहां जाए ? अन्त में उसने झाड़ियों में ही रात बिताने का फैसला किया। वह पूरे दिन की भूखी थी, इसलिए उसे जाड़ा और ज्यादा सता रहा था। यह सोचकर कि इस बरफीले मौसम में उसका पति कितनी तकलीफ उठा रहा होगा, उसका दिल भर आया। उसे लगा, मानो किसी ने उसके कलेजे पर छुरी भोंक दी हो।

दूसरे दिन मङ च्याङन्वी की आंख खुली तो उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा। पूरी घाटी बरफ से ढकी हुई थी। उसके शरीर पर भी बरफ की तहें जम गई थीं। अब वह आगे की यात्रा कैसे जारी रख सकेगी ? अभी वह यह सब सोच ही रही थी कि अचानक एक कौवा कहीं से उड़ता हुआ आया और उसके सामने बैठ गया। कौवे ने दो बार 'कांव-कांव' की और कुछ दूर उड़ने के बाद फिर उसके सामने आ बैठा। कुछ देर में कौवे ने फिर दो बार 'कांव-कांव' की। मङ च्याङन्वी ने सोचा, यह पक्षी उसे अपने पीछे चलने का संकेत दे रहा है। इसलिए उसने अपनी यात्रा फिर शुरू कर दी। कौवे का साथ होने के कारण वह कुछ खुश नजर आ रही थी। चलते-चलते वह गुनगुनाने लगी।

बरस रहा हिम आसमान से
धवल हुई धरती,
पहुंचाऊंगी पति को कपड़े
बाधा लांघ सभी,
कौवा साथी मेरा, मुझको
राह दिखाने आया,
मंजिल अब भी दूर, दूर मेरे
प्रीतम का साया।

इस तरह वह अनेक पहाड़ों और छोटी-बड़ी नदियों को पार करती हुई आगे बढ़ती गई।

कई दिनों की यात्रा के बाद आखिरकार लम्बी दीवार आ ही गई। उसे देखते ही वह खुशी से झूम उठी। दीवार पहाड़ों के ऊपर एक अजगर की तरह दूर तक फैली हुई थी। वहां हवा बहुत ठण्डी थी और पहाड़ केवल सूखी घास से ढके हुए थे। पेड़ों का कहीं नामोनिशान भी न था। लम्बी दीवार के आसपास आदमी ही आदमी नजर आ रहे थे। ये वही लोग थे जिन्हें इसका निर्माण करने के लिए जबरन यहां लाया गया था।

मङ च्याङन्वी लम्बी दीवार के साथ-साथ चलती हुई वहां काम कर रहे मजदूरों के बीच अपने पति को खोजती जा रही थी। अपने पति के बारे में उसने कई मजदूरों से पूछा। पर उसका आता-पता कोई नहीं बता पाया। रास्ते में जो भी मिलता, उससे पति के बारे में पूछती।...

उसने देखा, सभी मजदूरों के चेहरे पीले पड़ गए हैं, आंखें धंस गई हैं, गाल पिचक गए हैं। कई मजदूर मर चुके थे। उनकी लाशें इधर-उधर पड़ी थीं। उनकी तरफ कोई देख भी नहीं रहा था। मङ च्याङन्वी को अपने पति की और ज्यादा चिन्ता होने लगी। वह आंसू बहाती रही और पति की खोज करती रही।

अन्त में उसे अपने पति के दुखद अन्त का पता चल गया। कमरतोड़ श्रम करता-करता वह काफी पहले ही मर चुका था। उसकी लाश लम्बी दीवार के नीचे गाड़ दी गई थी। यह दुखमय समाचार सुनकर मङ च्याङन्वी मूर्छित हो गई। कुछ मजदूरों ने उसे होश में लाने की कोशिश की। पर उसकी बेहोशी दूर होने में बहुत समय लगा। होश में आते ही उसने फिर रोना शुरू कर दिया। कई दिनों तक उसकी आंखों

से लगातार श्रांसू बहते रहे। उसे रोता देख बहुत से मजदूरों की श्रांखें गीली हो गईं। वह इतनी जोर से विलाप करने लगी कि श्रचानक लम्बी दीवार का लगभग दो सौ मील लम्बा हिस्सा चरमराकर गिर पड़ा। तभी तेज श्रांधी श्राई श्रौर दीवार का मलबा श्राकाश में उड़ने लगा।

"मङ च्याङन्वी के श्रांसुश्रों के प्रवाह से ही लम्बी दीवार गिर पड़ी है!" लोग श्राश्चर्य से एक-दूसरे से कहने लगे। वे दुष्ट सम्राट से नफरत करने लगे, क्योंकि उसने मजदूरों को सिवाय दुख के श्रौर कुछ नहीं दिया था।

जब सम्राट को पता चला कि मङ च्याङन्वी ने लम्बी दीवार को चकनाचूर कर दिया है, तो वह उससे मिलने खुद जा पहुंचा। सम्राट देखना चाहता था कि वह कैसी स्त्री है। जब सम्राट ने देखा कि मङ च्याङन्वी परी जैसी खूबसूरत है, तो उसने उसे श्रपनी रानी बनाना चाहा।

पर मङ च्याङन्वी दुष्ट सम्राट से बेहद नफरत करती थी। इसलिए उसका प्रस्ताव मानने का सवाल ही नहीं उठता था। पर उसने अपना उद्देश्य पूरा करने के लिए बड़ी सूझबूझ से काम लिया। वह सम्राट से बड़े आदर के साथ बोली : "अगर आप मेरी तीन मांगें पूरी कर दें, तो मैं अवश्य आपकी रानी बन जाऊंगी।" जब सम्राट ने पूछा कि वे तीन मांगें कौन सी हैं, तो मङ च्याङन्वी ने कहा : पहले, मेरे पति को चांदी के ढक्कन वाले सोने के ताबूत में दफनाया जाए ; दूसरे, आपके सभी मंत्री व सेनापति मेरे पति के लिए मातम मनाएं और उनके जनाजे के जलूस में शामिल हों ; तीसरे, आप खुद भी उनके जनाजे के जलूस में शामिल हों और उनके बेटे की तरह मातम मनाएं।

सम्राट मङ च्याङन्वी की सुन्दरता पर मोहित था। इसलिए उसने उसकी सभी मांगें स्वीकार कर लीं।

मङ च्याङन्वी की मांग के अनुसार सब चीजों की व्यवस्था कर दी गई। जनाजे के जलूस में ताबूत के ठीक पीछे सम्राट श ह्वाङ चल रहा था और उसके पीछे-पीछे दरबारी व सेनापति चल रहे थे। सम्राट अपनी होने वाली रानी की सुन्दरता देखकर मन ही मन बहुत खुश हो रहा था।

जब मङ च्याङन्वी के पति को अच्छी तरह दफना दिया गया, तो वह कब्र के सामने घुटने टेककर पति की याद में देर तक जोर-जोर से रोती रही। फिर वह उठी और पास ही बहने वाली एक नदी में कूद पड़ी। अपनी इच्छा पूरी न होती देखकर सम्राट आगबबूला हो गया। उसने अपने सेवकों को हुक्म दिया कि उसे फौरन पानी से बाहर निकाल लाएं। लेकिन सेवकों के नदी में कूदने से पहले ही मङ च्याङन्वी एक सुन्दर रुपहली मछली बन गई और बड़ी शान से तैरती हुई नदी के नीले पानी की गहराइयों में विलीन हो गई।

जैतून झील

(हान जाति की लोककथा)

हजारों साल पुरानी बात है। एक मां और उसका इकलौता बेटा जैतून पर्वत की तलहटी में जैतून झील के पास एक गांव में रहते थे। दोनों बहुत गरीब थे। मां काफी बूढ़ी थी और कामकाज करने में असमर्थ थी। नौजवान बेटे ने जमींदार से जमीन का एक टुकड़ा काश्त के लिए ले लिया और उस पर दिनरात कमरतोड़ मेहनत करने लगा। फिर भी उसकी गरीबी ज्यों की त्यों बनी रही। मां-बेटे को भरपेट खाना-कपड़ा भी नसीब नहीं हो पाता था।

नौजवान मन ही मन सोचने लगा: "जैतून झील में हमेशा लहरें उठती रहती हैं, फिर भी उसका पानी गदला क्यों रहता है? मैं दिनरात कठोर परिश्रम करता रहता हूं, फिर भी इतना गरीब क्यों हूं?"

किसी ने उसे बताया कि कठिनाई के समय पश्चिमी स्वर्ग के देवता से राय लेना अच्छा होता है। नौजवान ने अपने प्रश्न के समाधान के लिए पश्चिमी स्वर्ग के देवता के पास जाने का फैसला कर लिया।

वह इरादे का पक्का था। जो भी काम सोचता, उसे पूरा करके ही छोड़ता। घर पर उसने इतना ईंधन, चावल, नमक और तेल रख दिया जिससे उसकी मां काफी दिनों तक काम चला सकती थी। फिर पश्चिमी

स्वर्ग के देवता से मिलने चल पड़ा।

वह उनचास दिन लगातार पश्चिम की ओर चलता रहा। चलते-चलते उसे बहुत थकान महसूस हुई और प्यास लग आई। उसने रास्ते के किनारे बनी एक झोंपड़ी पर दस्तक दी और पीने के लिए पानी मांगा।

झोंपड़ी के अन्दर से एक दयालु बुढ़िया बाहर निकली। उसने नौजवान को अन्दर बुला लिया और उसका खूब आदर-सत्कार किया। इसके बाद उसने पूछा : "बेटा, तुम हांफते हुए इतनी तेजी से कहां जा रहे हो ?"

"मैं पश्चिमी स्वर्ग की ओर जा रहा हूं, मांजी," उसने उत्तर दिया, "मैं पश्चिमी स्वर्ग के देवता से पूछना चाहता हूं कि हमेशा लहरें उठती रहने पर भी जैतून झील का पानी गदला क्यों रहता है और दिनरात कठोर परिश्रम करते रहने पर भी मैं इतना गरीब क्यों हूं ?"

यह सुनकर बुढ़िया बड़ी खुश हुई और मुस्कराती हुई बोली : "बेटा, क्या तुम मेरे भी एक सवाल का जवाब देवता से पूछ लाओगे ? मेरी लड़की अठारह वर्ष की हो गई है। वह बहुत सुन्दर है, बुद्धिमान है, हर काम में निपुण है। लेकिन अभी तक उसके मुंह से एक भी बोल नहीं निकल पाया। इसलिए मैं बड़ी चिन्तित हूं। क्या तुम देवता से पूछ सकते हो कि वह बोलती क्यों नहीं ?"

"ठीक है, मैं आपके प्रश्न का उत्तर देवता से जरूर पूछ लाऊंगा," नौजवान ने वायदा किया।

एक रात बुढ़िया के घर विश्राम करने के बाद उसने अपनी यात्रा जारी रखी। वह फिर उनचास दिन लगातार चलता रहा। चलते-चलते उसे बड़ी थकान महसूस होने लगी। अंधेरा होने जा रहा था। उसने रास्ते के किनारे बनी एक झोंपड़ी का दरवाजा खटखटाया।

एक बूढ़े आदमी ने दरवाजा खोला और उसे अन्दर बुला लिया। उसने नौजवान को अच्छी तरह खिलाने-पिलाने के बाद उससे पूछा : "पसीने से लथपथ होकर तुम इतनी तेजी से कहां जा रहे हो ?"

"मैं पश्चिमी स्वर्ग की तरफ जा रहा हूं। मैं पश्चिमी स्वर्ग के देवता

से पूछना चाहता हूं कि जैतून झील का पानी हमेशा लहरें उठने पर भी गदला क्यों रहता है और मैं दिनरात कठोर परिश्रम करने पर भी इतना गरीब क्यों हूं ?" नौजवान ने जवाब दिया।

बूढ़े आदमी ने हंसते हुए कहा : "मेरी किस्मत अच्छी है जो तुम आ गए। मुझे भी एक सवाल पूछना है : मेरे बगीचे में सन्तरे का एक हराभरा पेड़ है। क्या कारण है कि उसमें फल नहीं लगते ?"

"मैं इसका कारण जरूर मालूम कर लूंगा," नौजवान ने वायदा किया। दूसरे दिन उसने अपनी यात्रा फिर शुरू कर दी।

चलते-चलते वह प्रचण्ड लहरों वाली एक बड़ी नदी के किनारे जा पहुंचा। पार जाने के लिए वहां कोई नाव नहीं थी। वह नहीं समझ पाया कि नदी कैसे पार की जाए ? नदी के किनारे एक बड़ी-सी चट्टान पर बैठकर वह उस पार जाने का तरीका सोचने लगा। अचानक हवा का एक तेज झोंका आया। आसमान में काले बादल छा गए और नदी से किसी के गरजने की आवाज सुनाई दी। कुछ देर में आंधी थम गई और आसमान

में एक सुन्दर-सा रंगीन वादल दिखाई देने लगा। नदी की तज लहरों से एक ड्रैगन प्रकट हुआ और नौजवान से बोला :

"नौजवान भाई, इतनी तेजी से कहां भागे जा रहे हो?"

"मैं पश्चिमी स्वर्ग की तरफ जा रहा हूं। पश्चिमी स्वर्ग के देवता से पूछना चाहता हूं कि हमेशा लहरें उठने पर भी जैतून झील का पानी गदला क्यों रहता है और दिनरात कठोर परिश्रम करने पर भी मैं इतना गरीब क्यों हूं?" नौजवान ने जवाब दिया।

"भाई, क्या देवता से मेरा भी एक प्रश्न पूछ सकोगे? मैं न मनुष्य को हानि पहुंचाता हूं और न पशु-पक्षियों को, फिर भी एक हजार साल से यहां सजा पा रहा हूं। मुझे अभी तक स्वर्गलोक में जगह क्यों नहीं मिली?"

"मैं तुम्हारे प्रश्न का उत्तर अवश्य मालूम करूंगा," नौजवान ने वायदा किया। ड्रैगन ने उसे अपनी पीठ पर बिठाकर नदी पार करा दी। पश्चिम की ओर एक दिन से अधिक यात्रा करने के बाद वह एक विशाल प्राचीन नगर के एक आलीशान महल के पास जा पहुंचा। उसने द्वारपाल से पूछा कि पश्चिमी स्वर्ग के देवता कहां रहते हैं। द्वारपाल उसे एक शानदार भवन में ले गया। भवन के बीचोंबीच एक हंसमुख बूढ़ा व्यक्ति बैठा था। उसकी दाढ़ी और सिर के वाल सन की तरह सफेद हो चुके थे। शायद पश्चिमी स्वर्ग के देवता यही हैं, नौजवान ने मन ही मन सोचा। उसके कुछ कहने से पहले ही बूढ़े व्यक्ति ने मुस्कराकर पूछा :

"नौजवान, तुम इतनी दूर किसलिए आए हो?"

"मैं आपसे चार प्रश्न पूछने आया हूं।"

पश्चिमी स्वर्ग के देवता ने उसकी वात स्वीकार कर ली। पर एक शर्त लगा दी :

"हमारे यहां एक खास नियम है : तुम एक प्रश्न पूछ सकते हो, दो नहीं ; तीन प्रश्न पूछ सकते हो, चार नहीं ; विषम संख्या में चाहे जितने प्रश्न पूछ सकते हो, पर सम संख्या में नहीं। तुम मुझसे चार प्रश्न नहीं बल्कि सिर्फ तीन प्रश्न पूछ सकते हो।"

नौजवान को यह तय करने में बड़ी कठिनाई हुई कि अपने चार प्रश्नों में से कौन सा प्रश्न न पूछे। वह काफी देर तक सोचता रहा : "मेरा अपना प्रश्न तो महत्वपूर्ण है ही, पर बाकी तीन प्रश्न भी कम महत्वपूर्ण नहीं हैं। लेकिन पश्चिमी स्वर्ग के देवता ने केवल तीन प्रश्न पूछने की इजाजत दी है। इसलिए अच्छा यह होगा कि मैं अपना प्रश्न न पूछूं और दूसरों के पूछ लूं।" उसने अपना प्रश्न न पूछने और बाकी तीन प्रश्न पूछने का फैसला कर लिया।

तीनों प्रश्नों का सन्तोषजनक उत्तर पाने के बाद वह पश्चिमी स्वर्ग के देवता के महल से खुशी-खुशी लौट गया।

नदी के किनारे ड्रैगन उसका इन्तजार कर रहा था। "मेरे प्रश्न का क्या हुआ?" वह बोला।

"पश्चिमी स्वर्ग के देवता ने कहा है, अगर तुम स्वर्गलोक में जाना चाहते हो, तो तुम्हें दो जरूरी काम करने होंगे।"

"कौन से दो काम? जल्दी बताओ!" ड्रैगन ने अनुरोध किया।

"पहला काम यह है कि तुम मुझे नदी पार करवाओगे। दूसरा काम यह है कि उस मोती को उतार फेंकोगे जो रात के समय तुम्हारे सिर पर चमकता रहता है।"

ड्रैगन ने उसे नदी पार करवा दी। फिर उसकी मदद से अपने सिर का मोती उतार फेंका। ऐसा करते ही ड्रैगन के सिर पर दो सींग उग आए और वह एकदम स्वर्गलोक की ओर उड़ गया। बादलों को चीरते हुए आकाश में पहुंचकर उसने नौजवान से कहा :

"मेरे सिर का मोती तुम उठा लेना। यह मेरी तरफ से तुम्हारे लिए एक तोहफा है!"

नौजवान उस चमकीले मोती को उठाकर घर की ओर चल पड़ा। जब वह बूढ़े आदमी की झोपड़ी में पहुंचा, तो उसने पूछा : "क्या तुम मेरे प्रश्न का उत्तर लाए हो?"

"हां, ले आया हूं। पश्चिमी स्वर्ग के देवता ने कहा है कि तुम्हारे बगीचे

के तालाब के नीचे सोने से भरे नौ कलश तथा चांदी से भरे नौ कलश दबे हुए हैं। अगर तुम उन कलशों को बाहर निकाल लो और तालाब के पानी से सन्तरे के पेड़ को सींचो, तो उस पर फल आने लगेंगे।"

बूढ़े आदमी ने अपने बेटे को बुलाया और दोनों ने मिलकर तालाब का पानी बाहर निकाल दिया। इसके बाद उन्होंने तालाब को खोदना शुरू कर दिया। इस काम में नौजवान ने भी उनकी मदद की। वे लोग कुछ देर तक खोदते रहे। पर उन्हें न सोने से भरे कलश दिखाई दिए और न चांदी से भरे कलश। फिर भी वे निराश नहीं हुए और लगातार खोदते चले गए। अन्त में उन्हें सोने से भरे नौ कलश और चांदी से भरे नौ कलश मिल गए। जैसे ही उन्होंने उन कलशों को बाहर निकाला, तालाब के नीचे से साफ पानी का एक चश्मा फूट पड़ा। पलभर में सारा तालाब पानी से भर गया।

बूढ़े आदमी ने साफ पानी से सन्तरे के पेड़ को सींचा। पानी डालते ही पेड़ की हर शाख पर फल आ गए। जल्दी ही पूरा पेड़ सुनहरे रंग के सन्तरों से लद गया। यह देखकर बूढ़ा आदमी बहुत खुश हुआ। वह नहीं समझ पाया कि किन शब्दों में उसे धन्यवाद दे।

उसने नौजवान से कुछ दिन वहीं रुकने का आग्रह किया और तोहफे के रूप में उसे बहुत-सा सोना-चांदी भेंट किया। लेकिन नौजवान को जल्दी घर लौटना था। इसलिए उससे विदा होकर आगे चल पड़ा। रात को चमकने वाला मोती और बहुत-सा सोना-चांदी लेकर वह दयालु बुढ़िया के पास जा पहुंचा।

बुढ़िया उससे मिलने दौड़कर झोंपड़ी से बाहर निकल आई और बोली :

"तुमने मेरा काम किया कि नहीं?"

"हां," उसने उत्तर दिया। "पश्चिमी स्वर्ग के देवता ने कहा है कि तुम्हारी लड़की तभी बोलेगी, जब वह अपनी पसन्द के किसी नौजवान की तरफ प्यार से देखेगी।"

बुढ़िया अभी नौजवान से बात कर ही रही थी कि उसकी लड़की वहां आ पहुंची। नौजवान को देखते ही उसका चेहरा लज्जा से गुलाब की तरह लाल हो गया और वह मुस्कराने लगी। फिर उसने धीरे से पूछा : "ये कौन हैं, मां ?"

यह सुनते ही बुढ़िया खुशी से फूली न समाई। उसने लड़की को गले से लगा लिया। खुशी के मारे उसकी आंखों में आंसू छलछला आए। नौजवान बड़ा सुन्दर, हृष्टपुष्ट और ईमानदार था। इसलिए दयालु बुढ़िया ने अपनी लड़की से कहा :

"बेटी, आज का दिन बड़ा शुभ है। आज तुम अपनी जिन्दगी में पहली बार कुछ बोली हो। अगर आज ही इस सुन्दर नौजवान के साथ तुम्हारी शादी कर दी जाए, तो कैसा रहेगा ?"

दोनों की शादी हो गई। एक-दो रोज वहां रहने के बाद नौजवान ने अपनी सास से विदा ली और अपनी पत्नी के साथ खुशी-खुशी घर की ओर चल पड़ा। उसके पास रात को चमकने वाला मोती और बहुत-सा सोना-चांदी भी था।

जब घर पहुंचा तो उसने देखा, बेटे की प्रतीक्षा में उसकी बूढ़ी मां की आंखें रोते-रोते अन्धी हो गई हैं।

नौजवान सोचता था कि उसकी मां अपनी सुन्दर और चतुर बहू को देखकर बड़ी खुश होगी। पर वह बहू के मुलायम चेहरे पर हाथ फेरकर उसके तीखे नाक-नक्श का अनुमान लगाने के सिवाय और कुछ नहीं कर पाई। वह सोचता था कि उसकी मां सोना-चांदी देखकर बहुत खुश होगी। पर वह केवल सोने-चांदी की आवाज सुनकर तसल्ली करने के सिवाय और कुछ नहीं कर पाई। नौजवान ने चमकदार मोती निकालकर मां की आंखों के चारों तरफ घुमाया। पर मोती की चमक-दमक मां को बिलकुल नहीं दिखाई दी। उसे अन्धकार के सिवाय और कुछ नजर नहीं आ रहा था।

यह देखकर नौजवान को बहुत दुख हुआ। उसने मन ही मन सोचा :

"काश, मेरी मां की आंखों में फिर एक बार रोशनी आ सकती!" जैसे ही उसके मन में यह विचार आया, उसकी मां की आंखों की रोशनी लौट आई।

अपनी मनोकामना एकदम पूरी होती देख नौजवान आश्चर्य में पड़ गया। मोती को हिलाते हुए उसने फिर सोचा :

"अगर गांव में जमींदार न होते, तो गरीबों का शोषण न होता!" उसके यह सोचते ही गांव के सब जमींदार मर गए।

अब नौजवान को पता चला कि यह कोई साधारण मोती नहीं है। यह न केवल रात में चमकता है बल्कि लोगों की मनोकामना भी पूरी कर सकता है।

उस दिन से जैतून झील का पानी गदला नहीं रह गया और उस गांव के गरीब लोग सुखमय जीवन बिताने लगे।

अलगौझा

(थुङ जाति की लोककथा)

बहुत पुरानी बात है। एक गांव में दो भाई रहते थे। बड़े भाई का नाम था ता लाङ और छोटे भाई का नाम था श्याओ लाङ। अभी वे बच्चे ही थे कि उनके माता-पिता स्वर्ग सिधार गए। दोनों भाइयों के पास माता-पिता की एकमात्र सम्पत्ति थी – घटिया किस्म की थोड़ी-सी जमीन, एक बैल और एक बादामी कुत्ता। इनके अलावा उनके पास कुछ नहीं था।

बड़ा भाई ता लाङ बड़ा आलसी था। वह खेत में काम करने के बजाय दिनभर घर में ही पड़ा रहता था। बैल की देखभाल करने और जमीन जोतने का सारा काम छोटा भाई ही करता था।

एक दिन बड़े भाई के मन में एक विचार आया। उसने छोटे भाई से कहा : "जब पेड़ बड़ा हो जाता है, तो उसमें शाखें फूट जाती हैं। जब बच्चे बड़े हो जाते हैं, तो वे अपनी जमीन-जायदाद का बंटवारा कर लेते हैं। अब हम दोनों बड़े हो गए हैं, इसलिए हमें भी अपनी जमीन-जायदाद आपस में बांट लेनी चाहिए और अलग-अलग रहना चाहिए।"

"लेकिन हम दोनों में तो खूब मेल-मिलाप है," छोटे भाई ने जवाब दिया। "आखिर हमें अलग होने की क्या जरूरत है?"

पर बड़ा भाई नहीं माना। वह नाराज होकर बोला, "मैं तुम्हें साफ-साफ बता देना चाहता हूं कि अब हम दोनों एक दिन भी साथ नहीं रह सकते। मैं तुम्हारे लिए रोज खाना तैयार करता हूं और तुम हाथ पर हाथ धरे बैठे रहते हो! अब मैं यह काम एक दिन भी नहीं करूंगा।"

श्याओ लाङ अपने बड़े भाई को समझाने में सफल न हो सका। दोनों भाई अलग हो गए। बंटवारे में बड़े भाई ने चालाकी से अच्छे-अच्छे खेतों और बैल पर खुद कब्जा कर लिया। छोटे भाई के हिस्से एक बादामी कुत्ता और कुछ अनुपजाऊ खेत आए।

इस तरह उस छोटी-सी सम्पत्ति का दोनों भाइयों में विभाजन हो गया। पर बड़े भाई के आलसीपन में कोई कमी न आई। उसका बैल भूख के मारे दिन-ब-दिन दुबला होता गया और लड़खड़ाकर चलने लगा। दूसरी ओर छोटा भाई अपने कुत्ते को खूब अच्छी तरह खिलाता-पिलाता था। इसलिए उसका कुत्ता खूब मोटा-ताजा होता गया। वह रोज पहाड़ पर लकड़ी काटने जाता और कुत्ते को भी साथ ले जाता। इस तरह वह सुख-चैन से जिन्दगी बिताने लगा।

वसन्त की जुताई का समय आया, तो श्याओ लाङ चिन्ता में पड़ गया। उसके पास बैल नहीं था। बैल के बिना वह जुताई कैसे करेगा? यह सोचकर उसकी भूख-प्यास गायब होने लगी।

एक दिन जब श्याओ लाङ चिन्तातुर होकर आग के पास बैठा ऊंघ रहा था, तो कुत्ता उसके करीब आकर भौंकने लगा। श्याओ लाङ हड़-बड़ाकर उठ बैठा। उसने जल्दी-जल्दी अपनी गेंती-कुदाली उठाई और कुत्ते के साथ खेतों की तरफ चल पड़ा। कुछ देर काम करने के बाद वह थक गया और हांफता हुआ जमीन पर बैठ गया। कुत्ता फिर उसकी तरफ मुंह करके भौंकने लगा। "मेरे प्यारे कुत्ते, तुम क्यों भौंक रहे हो?" श्याओ लाङ ने पूछा। "क्या तुम मेरे खेत जोत सकते हो?"

कुत्ता खेतों में ऐसे घूमने लगा, मानो हल चला रहा हो। यह देखकर

श्याओ लाङ ने फैसला किया कि वह जमीन जोतने के लिए बैल के बदले अपने कुत्ते को इस्तेमाल करेगा। उसने एक छोटा-सा हल बनाया, जिसे उसका कुत्ता खींच सकता था। इस तरह वह रोजाना अपने खेत जोतने लगा।

ता लाङ ने जब यह देखा कि छोटे भाई की जमीन पर बड़ी अच्छी जुताई हुई है, तो उसे बड़ा ताज्जुब हुआ।

"श्याओ लाङ, तुम्हारे खेत किसने जोते हैं?" बड़े भाई ने पूछा।

"मैंने खुद ही जोते हैं।"

"बैल कहां से लाए?"

"मेरे पास मेरा दोस्त कुत्ता जो मौजूद है!"

ता लाङ ने जब यह सुना कि उसके खेत कुत्ते ने जोते हैं, तो उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा। अपने खेत जोतने के लिए उसने कुछ दिनों के लिए छोटे भाई से उसका कुत्ता मांग लिया।

पर ता लाङ के खेतों में कुत्ता टस से मस न हुआ। यह देखकर ता लाङ को बेहद गुस्सा आया और उसने उस निरीह प्राणी को जान से मार डाला।

अंधेरा होता जा रहा था। कुत्ता अभी वापस नहीं लौटा था। श्याओ लाङ कुत्ते के बारे में पूछताछ करने बड़े भाई के घर गया।

"भैया, मेरा कुत्ता कहां है?"

"कौन जाने तुम्हारा कुत्ता कहां चला गया?"

बड़े भाई का खूंखार चेहरा देखकर छोटा भाई कुछ न बोला। कुत्ते की तलाश में वह जगह-जगह मारा-मारा फिरा। पर कहीं उसकी छाया तक न दिखाई दी। निराश होकर घर लौट रहा था, तो अचानक एक झाड़ी के पास कुत्ते की लाश मिल गई। श्याओ लाङ का दिल टुकड़े-टुकड़े हो गया। उसने अपने प्यारे कुत्ते को उठाया और आंसू बहाता हुआ घर की तरफ चल पड़ा। शोक में डूबा वह रास्तेभर गाता रहा :

"जायदाद के बंटवारे में मिला मुझे एक कुत्ता,
खेत जोतता, हाथ बंटाता मेरा प्यारा कुत्ता।
हाय, प्राण हर लिए न जाने किस जालिम ने उसके,
मेरे प्यारे साथी नन्हे बेजबान कुत्ते के!"

श्याम्रो लाङ ने अपने कुत्ते को मिट्टी के एक टीले के नीचे दफना दिया और सुबह-शाम बेनागा उसकी कब्र पर जाने लगा।

एक दिन सुबह के समय उसने देखा, कुत्ते की कब्र पर बांस का एक चमकदार सुनहरा पौधा उग रहा है। जब शाम को वहां गया, तो ताज्जुब में पड़ गया। पौधा बांस का एक खूबसूरत लम्बा पेड़ बन चुका था। श्याम्रो लाङ खुशी से फूला न समाया और बांस के तने को जोर-जोर से हिलाता हुआ गुनगुनाने लगा :

"सुनो कल्पतरु, सुनो जरा विनती मेरी,
भर दो सोने-चांदी से झोली मेरी!
सुबह मुझे दो सोना तोले एक हजार,
सांझ समय तुम चांदी की कर दो भरमार।"

ज्योंही उसने गाना समाप्त किया, बांस के पेड़ से सोने-चांदी और हीरे-जवाहरात की वर्षा होने लगी। उसने ये मूल्यवान चीजें फौरन अपनी झोली में भर लीं और घर लौट गया। बाद में जब भी वह कुत्ते की कब्र पर जाता, हर बार बांस के पेड़ को हिलाकर वही पंक्तियां गाता। गाना खत्म होते ही ढेर सारा सोना-चांदी जमीन पर बरसने लगता।

जब बड़े भाई को मालूम हुआ कि छोटे भाई के पास बहुत-सा सोना-चांदी है, तो उसने छोटे भाई से पूछा :

"श्याम्रो लाङ, तुमने इतना सोना-चांदी कहां से चुराया है?"

"मैंने इसे कहीं से नहीं चुराया। मुझे तो यह सब अपने कुत्ते की कब्र पर उगे बांस के पेड़ को हिलाने से मिला है।"

"क्या तुम सच कह रहे हो? क्या ग्रब भी वहां कुछ सोना-चांदी बाकी है?" ता लाङ ने सवाल किया।

"हां, वहां ग्रब भी वहुत सा सोना-चांदी बाकी है। तुम बांस के पेड़ को हिलाना ग्रौर सोना-चांदी जमीन पर गिरने लगेगा।"

"तुम बांस के पेड़ को कैसे हिलाते हो?"

श्याग्रो लाङ ने ग्रपने बड़े भाई को सच-सच बता दिया कि वह बांस के पेड़ से सोना-चांदी कैसे प्राप्त करता है।

ता लाङ ने जल्दी-जल्दी दो टोकरियां उठाईं ग्रौर टीले पर बनी कुत्ते की कब्र की ग्रोर दौड़ पड़ा। कब्र पर उगे बांस को हिलाकर वह ग्रपना गाना शुरू करने ही वाला था कि वहां सोने-चांदी के बदले इल्लियों की वर्षा होने लगी। शीघ्र ही उसका सिर, चेहरा ग्रौर पूरा शरीर इल्लियों से भर गया। इतना ही नहीं, इल्लियां उसके कपड़ों के ग्रन्दर घुस गईं ग्रौर उसके शरीर में रेंगने लगीं। उसके सारे शरीर में खुजली मचने लगी ग्रौर वह परेशान होकर जमीन पर लुढ़क गया।

ता लाङ क्रोध से ग्रागवबूला हो उठा। वह दौड़कर घर गया ग्रौर एक गड़ासा उठा लाया। गड़ासे से उसने बांस के पेड़ को काट डाला।

दूसरे दिन श्याग्रो लाङ हमेशा की तरह कुत्ते की कब्र पर गया, तो बांस का पेड़ कटा देखकर उसे बेहद दुख हुग्रा। उसने पेड़ को उठा लिया ग्रौर दुखी होकर गुनगुनाने लगा :

"जायदाद के बंटवारे में मिला मुझे एक कुत्ता,
खेत जोतता, हाथ बंटाता मेरा प्यारा कुत्ता!
हाय, प्राण हर लिए न जाने किस जालिम ने उसके,
मेरे प्यारे साथी नन्हे बेजबान कुत्ते के!
मेरे कुत्ते की समाधि पर उग ग्राया एक बांस,
रोज सुबह सोना बरसाता, चांदी हरदिन सांझ!
हाय न जाने किस जालिम ने काट दिया यह बांस!
टूट गया दिल, जीवन में ग्रब रही न कोई ग्रास!"

श्याम्रो लाङ ने बांस को चीरकर उससे मुर्गियों का दरबा बना लिया और उसे अपने घर के बाहर रख दिया। वह सोच रहा था कि उसे मेले में बेच देगा। लेकिन इस बीच पड़ोस की बहुत सी मुर्गियों और तीतरों ने श्याम्रो लाङ के दरबे में अण्डे दे दिए। इस तरह श्याम्रो लाङ के पास बहुत से अण्डे हो गए।

उसका चेहरा खुशी से खिल उठा। वह अण्डों को बाजार में बेच आया। बड़े भाई ने अण्डों के बारे में सुना, तो वह श्याम्रो लाङ के पास जा पहुंचा और बोला :

"तुमने ये अण्डे कहां से चुराए, श्याम्रो लाङ ?"

"मैंने उन्हें चुराया नहीं। मुर्गियों और तीतरों ने मेरे दरबे में आकर अपने आप अण्डे दे दिए।"

"श्याम्रो लाङ, क्या तुम अपना दरबा एक महीने के लिए मुझे दे सकते हो ?"

श्याम्रो लाङ एक नेक और सीधा-सच्चा आदमी था। उसने अपना दरबा एक महीने के लिए बड़े भाई को दे दिया।

ता लाङ ने उसे अपने घर की ओलती के नीचे रख दिया। थोड़ी देर में मुर्गियों और मादा तीतरों का झुण्ड उसके दरबे में आ पहुंचा। मुर्गियां "कुकड़ू-कूं" की आवाज करने लगीं।

ता लाङ फौरन देखने जा पहुंचा। लेकिन जब उसने अपना हाथ दरबे में डाला, तो उसके हाथ अण्डों के बदले गन्दगी लगी। उसे इतना गुस्सा आया कि उसने दरबे को तोड़ डाला और जला दिया।

श्याम्रो लाङ को जब यह पता चला कि उसके बड़े भाई ने दरबे को जला दिया है, तो उसे बड़ा दुख हुआ। वह उसकी सारी राख उठाकर अपने घर ले गया। रास्तेभर उसका मन दुखी रहा और वह गुनगुनाता रहा :

"जायदाद के बंटवारे में मिला मुझे एक कुत्ता,
खेत जोतता, हाथ बंटाता मेरा प्यारा कुत्ता !
हाय, प्राण हर लिए न जाने किस जालिम ने उसके !
मेरे प्यारे साथी नन्हे बेजवान कुत्ते के !
मेरे कुत्ते की समाधि पर उग आया एक बांस,
रोज सुवह सोना बरसाता, चांदी हरदिन सांझ !
हाय, न जाने किस जालिम ने काट दिया वह बांस !
टूट गया दिल, जीवन में अब रही न कोई आस !
कटे बांस से रचा एक छोटा-सा दरबा मैंने,
मुर्गी-तीतर खुश हो आते उसमें अण्डे देने।
हाय, न जाने किस जालिम ने भस्म उसे कर डाला !
मेरी सारी आशाओं पर आज पड़ गया पाला !

श्याओ लाङ के पास अब कुछ नहीं बचा था। उसका प्यारा कुत्ता, सोना-चांदी बरसाने वाला बांस का पेड़, मुर्गी-तीतर के अण्डे देने वाला बांस का दरबा, सभी कुछ चला गया था। उसने अपनी गैंती उठाई और बंजर जमीन के एक टुकड़े को खेत में बदलने अकेला ही पहाड़ पर चला गया। जब खेत तैयार हो गया, तो उसने उसमें दरबे की राख खाद के रूप में डाल दी और कद्दू के बीज बो दिए।

बीज जल्दी ही अंकुरों में बदल गए। पहले दिन कोंपलें फूट गईं; दूसरे दिन पत्तियां चमकने लगीं; तीसरे दिन कद्दू की बेलें चारों तरफ फैलने लगीं, चौथे दिन पूरी पहाड़ी ढलान कद्दू की बेलों से ढक गई, पांचवें दिन समूचे पहाड़ पर कद्दू के सुनहरे फूल खिल उठे; छठे दिन हर बेल पर कद्दूओं के ढेर लग गए। सबसे बड़े कद्दू की गोलाई आठ-नौ फुट थी। उसे दो आदमी बाजू फैलाकर भी नहीं उठा सकते थे। वह कद्दू इतना बड़ा था कि श्याओ लाङ ने उसका नाम "कद्दुओं का राजा" रख दिया।

एक बन्दर उधर से गुजर रहा था। उसने बेलों पर कद्दू लगे देखे। बन्दर ने एक कद्दू उठाया और चलता बना। उसने फौरन गुफा में जाकर यह खुशखबरी बाकी बन्दरों को भी सुनाई: "दोस्तो, पहाड़ पर बहुत से कद्दू लगे हुए हैं। जल्दी जाओ और कुछ कद्दू तोड़ लाओ!"

रात को बन्दरों के झुण्ड के झुण्ड श्याओ लाङ के खेत में आ पहुंचे और लगभग आधे कद्दू उठा ले गए। अगले दिन जब श्याओ लाङ को पता चला कि उसके बहुत से कद्दू चोरी चले गए हैं, तो उसे बड़ा गुस्सा आया।

उस दिन वह अपने कद्दुओं की निगरानी करने खेत पर ही रहा। उसने "कद्दुओं के राजा" के पेट में एक बड़ा-सा छेद कर लिया और चोर पकड़ने के लिए उसके अन्दर छिपकर बैठ गया।

आधी रात के वक्त बन्दर वहां फिर आ पहुंचे और बचे-खुचे कद्दू भी उठा ले गए। केवल "कद्दुओं का राजा" बच गया, क्योंकि वह बहुत भारी था।

बन्दर "कद्दुओं के राजा" को नहीं उठा सके थे। उन्होंने "संरक्षक देवी" की सहायता लेने का निश्चय किया। वे दौड़कर गुफा में गए और वहां से सोने-चांदी के प्याले उठा लाए। इन प्यालों को उन्होंने "कद्दुओं के राजा" के सामने रख दिया। फिर लाल मोमबत्ती और धूपबत्ती

जलाकर "संरक्षक देवी" की पूजा करने लगे।

श्याम्रो लाङ कद्दू के अन्दर से यह सब देख रहा था। वह अचानक चिल्ला पड़ा : "हेइ !" बन्दरों ने सोचा, यह शायद "कद्दुओं के राजा" की आवाज है। यह सुनकर वे बुरी तरह घबरा गए और अपने सोने-चांदी के प्याले वहीं छोड़कर भाग खड़े हुए।

जब बन्दरों का कोलाहल समाप्त हो गया, तो श्याम्रो लाङ कद्दू के पेट से बाहर निकल आया और सोने-चांदी के प्यालों को उठाकर घर ले गया।

हमेशा की ही तरह इस बार भी बड़ा भाई ता लाङ फिर पूछताछ करने आ पहुंचा।

"श्याम्रो लाङ, सोने-चांदी के इन प्यालों को तुमने कहां से चुराया है ?"

"इन्हें मैंने चुराया नहीं है। इन्हें मैं कल रात अपने कद्दू के खेत से उठाकर लाया हूं।"

उसने ता लाङ को सारी घटना विस्तार से सुना दी।

जब अंधेरा हो गया, तो ता लाङ अपने भाई के खेत में जा पहुंचा और श्याम्रो लाङ की ही तरह "कद्दुओं के राजा" के पेट में छिपकर बैठ गया। बन्दर फिर आए और पहले से बड़ी तादाद में आए। लेकिन इस बार उनके पास सोने-चांदी के प्याले नहीं थे। सब बन्दरों ने एक साथ मिलकर उस विशाल कद्दू को उठा लिया। वे लोग अभी कुछ ही दूर गए होंगे कि कद्दू के हिलने-डुलने से ता लाङ की आंख लग गई।

"कद्दुओं के राजा" को उठाए हुए बन्दर घाटियों और पहाड़ों को पार करते गए। जब ता लाङ की जाग खुली, तो वे एक सीधी चट्टान के कगार पर पहुंच चुके थे। शोरगुल सुनकर उसने सोचा, लगता है अब ये "संरक्षक देवी" को बुलाने के लिए पूजा कर रहे हैं। इसलिए वह जोर से चिल्लाया : "हेइ !" यह आवाज सुनते ही बन्दर "कद्दुओं के राजा" को चट्टान से नीचे फेंककर भाग खड़े हुए। "कद्दुओं का राजा" पहाड़ी ढलान पर तेजी से लुढ़कता हुआ नीचे घाटी में जा गिरा और उसके टुकड़े-टुकड़े हो गए। साथ ही ता लाङ की भी हड्डी-पसली चूरचूर हो गई !

नसरुद्दीन ग्राफन्ती के किस्से

(उइगुर जाति के लोक-साहित्य से)

मैं ही गलत हूं।

रात का वक्त था। ग्राफन्ती एक कब्रिस्तान से गुजर रहा था। कुछ घुड़सवार उसी दिशा में जा रहे थे। उसे लगा, दाल में जरूर कुछ काला है। वह अभी-अभी खोदी गई एक कब्र में जा छिपा। घुड़सवारों ने उसे कब्र में घुसते देख लिया। उन्हें बड़ा ताज्जुब हुग्रा। समझ में नहीं ग्राया कि वह कब्र के ग्रन्दर क्यों जा रहा है। कब्र के नजदीक पहुंचकर एक घुड़सवार जोर से चिल्लाया : "तुम कौन हो?"

ग्राफन्ती ने कब्र से सिर बाहर निकाला ग्रौर जवाब दिया :

"मैं इस कब्रिस्तान में दफनाई गई एक लाश हूं।"

"इतनी रात में लाश को ऊपर ग्राने की जरूरत क्यों महसूस हुई?"

"ताजा हवा लेने के लिए।"

"क्या लाश को भी ताजा हवा की जरूरत होती है?"

"ग्ररे हां, . . . तुम बिलकुल ठीक कह रहे हो। मैं ही गलत हूं!" यह कहता हुग्रा ग्राफन्ती फिर से कब्र में घुस गया।

घर बदलने में मदद

एक रात कई चोर सेंध लगाकर आफन्ती के घर में जा घुसे और उसका सारा सामान जल्दी-जल्दी बांधकर बाहर निकल गए।

अभी वे आधा ही अहाता पार कर पाए थे कि आफन्ती कुछ और छोटा-मोटा सामान हाथ में उठाए उनके करीब जा पहुंचा।

"आफन्ती, इतनी रात में कहां जा रहे हो ?" एक चोर ने पूछा।

"मैं काफी दिनों से घर बदलने की सोच रहा था। पर मेरे पास घोड़ा-गाड़ी बुलाने के लिए पैसे नहीं थे। आपकी इस मदद के लिए बहुत-बहुत शुक्रिया !"

अनोखा सौदा

एक दिन आफन्ती अपने लिए एक पायजामा खरीदने बाजार गया। काफी मोलभाव करने के बाद उसने एक पायजामे के दाम तय कर लिए। वह कीमत चुकाने ही जा रहा था कि अचानक उसकी राय बदल गई। "मेरा पायजामा अभी ज्यादा पुराना नहीं है," उसने मन ही मन सोचा। फिर दुकानदार की तरफ देखकर बोला : "मेहरबानी करके मुझे इसकी जगह एक कमीज दे दो।"

दुकानदार ने उसकी मांग स्वीकार कर ली और उसे एक कमीज थमा दी ! आफन्ती पैसे दिए बिना ही आगे बढ़ गया। दुकानदार चिल्लाया : "बरखुरदार, तुमने कमीज के दाम अभी नहीं चुकाए।"

"क्या मैंने अभी-अभी एक पायजामा नहीं लौटाया, जिसकी कीमत कमीज के बराबर है ?" आफन्ती तपाक से बोला।

गाय की बिक्री

आफन्ती की बेगम अपनी गाय को बेचना चाहती थी। उसकी गाय बड़ी गुस्सैल और बांझ थी। आफन्ती उसे बेचने बाजार ले गया।

खरीदार आते और गाय को देखने के बाद आगे बढ़ जाते, क्योंकि आफन्ती लगातार कहता जा रहा था : "यह गाय दूध बिलकुल नहीं देती, सिर्फ सींग मारती है!" यह सुनने के बाद उसकी गाय आखिर कौन खरीद सकता था!

मवेशियों का एक व्यापारी कुछ देर तक उसे देखता रहा। आफन्ती के भोलेपन पर उसे बड़ा आश्चर्य हो रहा था। वह बोला : "भाईजान, अपनी गाय जरा मुझे तो दो। मैं इसे चुटकियों में बिकवा दूंगा!"

"आप मुझ पर सचमुच बड़े मेहरबान हैं," आफन्ती बोला। "खुदा आपका भला करे! लीजिए, इस गाय को आप ही बेचिए!" यह कहते हुए आफन्ती ने रस्सी उसके हाथ में थमा दी।

मवेशियों के व्यापारी ने रस्सी हाथ में लेते हुए खरीदारों की ओर देखकर चिल्लाना शुरू कर दिया :

"भाइयो, जरा इस गाय को तो देखो! कितनी सीधी है! हर रोज पन्द्रह कटोरे दूध देती है! यह सौदा आपको किसी भी हालत में मंहगा नहीं पड़ेगा!"

यह सुनते ही आफन्ती ने व्यापारी के हाथ से रस्सी ले ली और बोला : "अगर यह गाय मेमने से भी सीधी है और रोज पन्द्रह कटोरे दूध देती है, तो इसे भला मैं क्यों बेचने लगा!"

गाय से क्यों नहीं पूछते

आफन्ती ने बाजार से एक गाय खरीदी। गाय को लेकर वह घर लौट रहा था। "आफन्ती, तुम्हारी गाय बड़ी अच्छी है!" एक राहगीर

ने कहा। "कितने में खरीदी ?"

यही सवाल कई राहगीरों ने पूछा। आफन्ती बार-बार एक ही जवाब देकर थक गया। अन्त में जब दो आदमियों ने फिर वही सवाल दोहराया, तो उसने गाय की तरफ इशारा करते हुए कहा : "आप लोग बार-बार एक ही सवाल पूछकर मुझे परेशान क्यों कर रहे हैं ? अगर इसका जवाब जानना ही चाहते हैं तो गाय से क्यों नहीं पूछ लेते ?"

अक्लमन्द हो तो पानी में कूद जाओ !

जाड़े का एक दिन था। आफन्ती अपने गधे पर लकड़ियां लादकर घर लौट रहा था। उसे बेहद ठण्ड महसूस होने लगी। उसे गधे की चिन्ता हुई। सोचा, "इस मौसम में गधे को भी जरूर ठण्ड लग रही होगी। अगर मैं गधे की पीठ पर लदी लकड़ियों को सुलगा दूं, तो उनकी आंच से गधा ठण्ड से बच जाएगा।" उसने ऐसा ही किया। सूखी लकड़ियों ने एकदम आग पकड़ ली। गधा डर गया और तेजी से दौड़ने लगा। आफन्ती भी गधे के पीछे दौड़ पड़ा और उससे बोला : "अगर तुम अक्लमन्द हो, तो फौरन पानी में कूद जाओ !"

थैले में सुरक्षित पूंछ

आफन्ती अपने गधे को बेचने बाजार जा रहा था। रास्ते में गधे की पूंछ बहुत गन्दी हो गई। आफन्ती ने मन ही मन सोचा : "इसकी गन्दी पूंछ को देखकर कहीं खरीदारों को बुरा न लगे। यह अच्छा नहीं होगा !" इसलिए उसने गधे की पूंछ काट डाली और उसे काठी पर लटके हुए एक थैले में रख दिया।

एक खरीदार ने गधे पर नजर डाली। "कितना अच्छा गधा है!" वह बोला। "लेकिन दुख इस बात का है कि इसकी पूंछ नहीं है!"

"अगर तुम्हें यह गधा पसन्द है, तो बताओ कितनी कीमत दोगे? आफन्ती झट बोल पड़ा। "इसकी पूंछ मेरे थैले में सुरक्षित है!"

नया-पुराना चांद

किसी ने आफन्ती से पूछा: "जब नया चांद निकलता है, तो पुराना चांद कहां चला जाता है?"

आफन्ती ने फौरन जवाब दिया: "जब नया चांद निकलता है, तो अल्लाह पुराने चांद के टुकड़े-टुकड़े कर देता है और वे सब टुकड़े सितारों में बदल जाते हैं।"

सूरज बड़ा कि चांद?

किसी दोस्त ने आफन्ती से पूछा: "सूरज ज्यादा उपयोगी है या चांद?"

"बेशक, चांद सूरज से ज्यादा उपयोगी है," आफन्ती ने फौरन उत्तर दिया।

"वजह?" दोस्त ने पूछा।

"सूरज दिन में निकलता है। पर उसका कोई फायदा नहीं होता, क्योंकि तब उजाला हो चुका होता है। चांद रात में निकलता है। अगर वह न निकले, तो चारों तरफ गहरा अंधेरा छा जाएगा।" आफन्ती ने उत्तर दिया।

मछलियां पेड़ पर चढ़ जाएंगी !

आफन्ती से किसी ने पूछा : "अगर पानी में आग लग जाए, तो मछलियों का क्या होगा ?"

"वे पेड़ पर चढ़ जाएंगी !" उसने तपाक से उत्तर दिया।

पृथ्वी उलट जाएगी !

एक दिन आफन्ती से दोस्तों ने पूछा : "पौ फटते ही लोग अलग-अलग दिशाओं में क्यों जाने लगते हैं ?" आफन्ती फौरन बोल पड़ा : "यह भी कोई पूछने की बात है ? लगता है, तुम निरे बेवकूफ हो ! यह एक सीधी-सी बात है। अगर सब लोग एक ही दिशा में जाएंगे, तो क्या पृथ्वी उनके बोझ से एक तरफ झुककर उलट नहीं जाएगी ?"

चिट्ठी लिखने का अनुरोध

आफन्ती के एक दोस्त ने कहा : "मेरा एक भाई राजधानी में रहता है। क्या तुम मेरी तरफ से उसके नाम एक चिट्ठी लिख दोगे ?"

"लेकिन मेरे पास राजधानी जाने की फुरसत कहां है !" आफन्ती बोला।

"मैं तुमसे राजधानी जाने को नहीं कह रहा," दोस्त बोला। "मैं तो तुमसे सिर्फ एक चिट्ठी लिखने का अनुरोध कर रहा हूं।"

"मैं तुम्हारी बात समझ गया हूं," आफन्ती ने उत्तर दिया। "लेकिन मेरी लिखावट ही कुछ ऐसी है जिसे मेरे सिवाय कोई और नहीं पढ़ सकता।

अगर मैं चिट्ठी पढ़ने खुद राजधानी न जा सका, तो लिखने का फायदा क्या होगा ! अफसोस यह है कि मेरे पास राजधानी जाने का समय नहीं है।"

प्रायश्चित्त

एक दिन आफन्ती को रास्ते में एक भटकी हुई भेड़ मिल गई। वह उसे घर ले गया और मारकर खा गया। उसके एक दोस्त को पता चला, तो उसने पूछा :

"कयामत के दिन जब खुदा तुमसे पूछेगा, तो तुम अपने कसूर के बारे में क्या सफाई दोगे ?"

"कह दूंगा कि मैंने भेड़ नहीं खाई।"

"लेकिन इससे काम नहीं चलेगा। अगर भेड़ खुद ही गवाह के रूप में पेश हो गई, तो क्या करोगे ?"

"अगर भेड़ ही सामने आ गई तो सोने में सुहागा हो जाएगा ! मैं भेड़ को उसके मालिक के पास पहुंचा दूंगा और इस तरह अपने पाप का प्रायश्चित्त कर लूंगा।"

नाई की दुकान में

एक दिन आफन्ती अपना सिर घुटवाने नाई की दुकान में जा पहुंचा।

नाई तजरबेकार नहीं था। इसलिए उस्तरे से जगह-जगह कट गया। कटी जगहों पर उसने रूई के फाहे लगा दिए। हजामत कराने के बाद जब आफन्ती ने शीशे में अपना मुंह देखा, तो आश्चर्य से बोला :

"कितने बड़े फनकार हो तुम, नाई मियां ! तुमने मेरे आधे सिर पर

कपास उगा दी है। सोचता हूं, बाकी आधे सिर पर अलसी बो दूं!" यह कहता हुआ वह घर लौट गया।

बेगम और नान

आफन्ती जमीन पर बैठा अपनी बेगम से बातें कर रहा था। अचानक उसे भूखे लग आई। वह बेगम से बोला : "बेगम, मुझे भूख लग रही है। क्या तुम्हारे पास कोई नान है?"

"भूख लग रही है? क्या अपनी खूबसूरत बेगम के पास बैठकर और उसे देखकर भी तुम्हें तृप्ति नहीं हो रही?"

"क्यों नहीं? आफन्ती ने उत्तर दिया। "पर तुम्हारे खूबसूरत मुखड़े को निहारने के साथ-साथ अगर नान भी खाता रहूं, तो सोने में सुहागा हो जाएगा!"

पेड़ों की चोटी पर रास्ता

एक बार कुछ शैतान बच्चों ने आफन्ती के साथ ठिठोली करनी चाही। वे आफन्ती से बोले : "आफन्ती चाचा, उस पेड़ पर चिड़िया के अण्डे हैं। क्या आप उन्हें उतारकर हमें दे सकते हैं? हम पेड़ पर नहीं चढ़ सकते।"

आफन्ती बच्चों को निराश नहीं करना चाहता था। इसलिए पेड़ पर चढ़ने के लिए राजी हो गया। पर वह जानता था कि अगर उसने जूते उतारकर नीचे रख दिए तो ये शैतान बच्चे उन्हें उठाकर जरूर चम्पत हो जाएंगे। इसलिए पेड़ पर चढ़ने से पहले उसने अपने जूतों को कमर में बांध लिया।

"आफन्ती चाचा, जूते ऊपर क्यों ले जा रहे हैं? उनकी देखभाल हम

कर लेंगे।" बच्चों ने कहा।

"इसकी जरूरत नहीं है, मेरे नन्हे दोस्तो," आफन्ती ने जवाब दिया। "मैं बेहद मसरूफ हूं। अण्डे तुम्हारे हवाले करने के बाद मैं पेड़ों की चोटी पर पांव रखता हुआ घर लौट जाऊंगा!"

सोने की अंगूठी

एक बार आफन्ती का एक व्यापारी दोस्त लम्बी यात्रा पर जाने से पहले उससे विदाई लेने आया। उसने आफन्ती की उंगली में सोने की अंगूठी देखी। अंगूठी देखते ही उसका मन ललचाने लगा।

"आफन्ती," दोस्त ने कहा, "जब मैं लम्बे समय तक तुमसे नहीं मिल पाता तो बड़ा परेशान हो जाता हूं। बाहर जाने के बाद मुझे तुम्हारी याद हमेशा सताती रहती है। अपनी यादगार के तौर पर तुम यह अंगूठी मुझे क्यों नहीं दे देते? जब मैं इसे देखूंगा, तो मुझे ऐसा लगेगा जैसे मैं तुमसे

मिल रहा हूं। इससे मुझे बड़ी तसल्ली मिलेगी।"

आफन्ती के पास कीमती चीज के नाम पर बस यही अंगूठी थी। वह उसे किसी भी हालत में नहीं देना चाहता था।

इसलिए उसने जवाब दिया : "मेरे प्यारे दोस्त, मैं तुम्हारी दोस्ती की बड़ी कद्र करता हूं। लेकिन मुझे भी लम्बे समय तक तुमसे अलग रहकर चैन नहीं मिलेगा। मुझ पर रहम खाओ और यह अंगूठी मेरे पास ही रहने दो! जब भी मैं इस अंगूठी को देखूंगा, तो मुझे याद आएगा कि इसे मेरे दोस्त ने मांगा था और मैंने उसे नहीं दिया था। इस तरह तुम मेरी यादों में हमेशा बसे रहोगे!"

शहद और तबीयत

एक दिन आफन्ती अपने दोस्त के घर भोजन करने गया। मेजबान ने उसके सामने पनीर, नान और शहद रख दिया। आफन्ती ने पहले पनीर के साथ भरपेट नान खाई और फिर शहद खाना शुरू कर दिया। पर शहद के साथ खाने के लिए एक भी नान बाकी नहीं रह गई थी। मेजवान ने याद दिलाया : "आफन्ती, नान के बिना तुम्हें शहद नहीं खाना चाहिए! इससे तुम्हारी तबीयत खराब हो जाएगी!"

आफन्ती शहद की एक-एक बूंद चाट गया और बोला : "यह बात खुदा ही जानता है कि अन्त में किसकी तबीयत खराव होगी! अल्लाह तुम्हारा भला करे! ..." यह कहता हुआ वह घर लौट गया।

मुर्गी के दाम

एक बार एक कुली ने सराय में एक मुर्गी खाई। जब उसने बिल मांगा, तो सराय-मालिक ने कहा : "तुम्हारे पास अगर पैसे अभी न हों, तो बाद

में दे देना। मैं तुम्हारे खाते में लिख दूंगा।" जिन्दगी में पहली बार उसकी मुलाकात ऐसे दयालु ग्रादमी से हुई थी। उसने सराय-मालिक को धन्य-वाद दिया ग्रौर वहां से चला गया।

कुछ समय बाद कुली ग्रपना उधार चुकाने ग्राया। सराय-मालिक तांबे के सिक्कों को एक के ऊपर एक रखकर हिसाब लगाने लगा। देखने में ऐसा लगता था जैसे कोई कठिन सवाल हल कर रहा हो। कुली ने परेशान होकर पूछा: "तुम्हारी मुर्गी कितने की थी? उसके दाम तो तुम्हें पता ही होंगे? यह लम्बा-चौड़ा हिसाब क्या कर रहे हो?" सराय-मालिक ने ग्रपना हाथ इस तरह हिलाया जैसे वह हिसाब लगाने में डूबा हो ग्रौर इस वक्त बात सुनने को तैयार न हो। कुली बैठकर इन्तजार करता रहा।

काफी देर बाद सराय-मालिक ने कुली को मुर्गी के दाम बता दिए। सुनकर उसे बड़ा धक्का लगा। उसकी मुर्गी के दाम बाजार-भाव से कई सौ गुना ज्यादा थे। कुली ने पूछा: "एक मुर्गी के इतने ज्यादा दाम कैसे हो सकते हैं?"

"क्यों नहीं?" सराय-मालिक बोला। "खुद हिसाब करके क्यों नहीं देख लेते? ग्रगर उस दिन तुमने यह मुर्गी न खाई होती, तो जानते हो ग्रब तक वह कितने ग्रण्डे दे चुकी होती? ग्रण्डों में से चूजे भी निकलते! ये चूजे बड़े होकर फिर ग्रण्डे देते...।" सराय-मालिक ने तांबे के ढेर सारे सिक्के मेज पर रख दिए ग्रौर कुली से कहा:

"तुम कुल इतनी रकम के देनदार हो – एक भी पैसा कम नहीं लूंगा!"

कुली के लिए ग्रब ग्रौर ग्रधिक बरदाश्त करना ग्रसम्भव हो गया। वह जोर से चिल्लाया: "तुम व्यापार नहीं करते, बल्कि लोगों को लूटते हो! मैं तुम्हें एक भी पैसा नहीं दूंगा!"

जब सराय-मालिक ने देखा कि कुली पैसे देने से साफ इनकार कर रहा है, तो वह बोला: "इस झगड़े का फैसला कराने के लिए हम दोनों को मसजिद में जाना होगा!" ग्रपने पक्ष को सही समझकर कुली ने उत्तर दिया: "ग्रगर तुम सच्चे हो, तो दुनिया में हर जगह जा सकते हो, ग्रौर

अगर झूठे हो तो एक इंच भी आगे नहीं बढ़ सकते। मसजिद क्या अगर तुम अल्लाह के पास भी जाओ, तो भी तुम्हें सच्ची बात कहनी पड़ेगी!"

एक-दूसरे को खींचते हुए वे दोनों मसजिद में जा पहुंचे।

मसजिद का इमाम धार्मिक मामलों के अलावा कानूनी मामलों को भी देखता था। उसके फैसले को सभी मुसलमान मानते थे। सराय-मालिक और कुली जब अन्दर पहुंचे, तो इमाम कालीन पर बैठा तम्बाकू खा रहा था। उसकी झबरीली मूंछें गाल से चिपकी हुई थीं। लोग मजाक में कहते थे कि उसकी मूंछें इसलिए घनी हैं क्योंकि वह दिनभर तम्बाकू की खाद डालता रहता है। उसने कनखियों से दोनों को देखा और रूखी आवाज में धीरे से कहा : क्यों आए हो?

पहले सराय-मालिक ने अपनी बात बताई। इमाम को उसकी बात जंच गई और कुली का पक्ष सुने विना ही उसने एकतरफा फैसला सुना दिया : "सराय-मालिक की मांग के मुताबिक कुली को सारी रकम चुकानी होगी।" कुली ने सोचा, बहस करने से कोई फायदा नहीं होगा। उसने इमाम से कुछ दिनों की मोहलत मांगी। इमाम राजी हो गया।

इस बेइन्साफी से दुखी होकर कुली अपने घर लौट रहा था। तभी उसे गाने की अवाज सुनाई दी। गधे पर सवार एक आदमी उसकी ओर आ रहा था, नजदीक आने पर उस आदमी ने अपना दाहिना हाथ सीने पर रखा और बड़े अदव से झुककर बोला : "कुली भैया, सलाम। तुम्हारा क्या हाल है?" इस अलमस्त राहगीर को देखकर कुली और ज्यादा दुखी हो गया और "उंह" कहकर आगे बढ़ गया। गधे पर सवार आदमी उसका व्यवहार देखकर ताज्जुब में पड़ गया। अपने गधे को तेज दौड़ाकर वह कुली के पास जा पहुंचा। "कुली भैया, तुम इतनी जल्दी कहां जा रहे हो?" उसने पूछा। "तुम्हें इतना गुस्सा क्यों आ रहा है? क्या मैं तुम्हारी कोई खिदमत कर सकता हूं?"

कुली थोड़ी देर के लिए रुका और आश्चर्य से बोला : "लेकिन तुम कौन हो?" "मैं नसरुद्दीन आफन्ती हूं," गधे पर सवार आदमी ने कहा।

यह सुनकर कुली बहुत खुश हुआ। "अच्छा, तो तुम ही मशहूर नसरुद्दीन आफन्ती हो!" बाकी लोगों की ही तरह कुली ने भी नसरुद्दीन आफन्ती के बारे में यह सुन रखा था कि वह जगह-जगह जाकर गरीबों की मदद करता है। जैसा उसने सुन रखा था, आफन्ती को उसने ठीक वैसा ही पाया।

कुली ने आफन्ती को सारी घटना विस्तार से सुना दी। सारी बात सुनने के बाद आफन्ती ने कहा: "तुम फौरन मसजिद में लौट जाओ और इमाम से कहो कि तुम्हारे साथ न्याय नहीं हुआ है तथा तुम इस मामले को खुली अदालत में ले जाना चाहते हो। खुली अदालत में तुम्हारे पक्ष की पैरवी मैं करूंगा!"

कुली फौरन मसजिद में लौट गया। इमाम को उसकी मांग मंजूर करनी पड़ी। रिवाज के मुताबिक हर अभियुक्त को अपना मामला खुली अदालत में ले जाने का हक हासिल था। पर अगर खुली अदालत का फैसला अभियुक्त के खिलाफ होता, तो उसे दुगुनी सजा मिलती थी।

खुली अदालत के दिन मसजिद लोगों से खचाखच भर गई। जब जूरी के सदस्यों ने अपना स्थान ग्रहण कर लिया, तो इमाम ने मुकदमा शुरू करने का ऐलान किया। सराय-मालिक ने अपनी कहानी फिर दोहराई। पर जब कुली के बोलने की बारी आई, तो वह चुपचाप बैठा रहा। "तुम बोलते क्यों नहीं?" इमाम ने पूछा। "इमाम साहब, मेरा वकील अभी नहीं आया," कुली ने उत्तर दिया। इमाम को बड़ा आश्चर्य हुआ। "तुम्हारा वकील कौन है?" उसने कुली से पूछा। "नसरुद्दीन आफन्ती," जवाब मिला। यह सुनकर जूरी और इमाम कुछ घबरा गए। पर दर्शक बहुत खुश हुए। वे आपस में कानाफूसी करने लगे और आफन्ती की दिलचस्प दलीलें सुनने की प्रतीक्षा करने लगे।

जब काफी समय बीत गया, तो नसरुद्दीन आफन्ती हांफता हुआ अदालत में हाजिर हो गया। उसने उपस्थित लोगों को सलाम किया तथा इमाम

ग्रौर जूरी के सदस्यों से माफी मांगता हुग्रा बोला : "देर में पहुंचने के लिए ग्राप लोगों से माफी चाहता हूं। मुझे एक बहुत जरूरी काम निपटना पड़ गया था।" ग्राफन्ती को नीचा दिखाने के लिए जूरी का एक सदस्य बोल पड़ा : "क्या वह काम इस मुकदमे से भी ज्यादा जरूरी था?"

"हां, इस मुकदमे से कहीं ज्यादा जरूरी था!" ग्राफन्ती ने उत्तर दिया। "बात यह है कि कल मुझे गेहूं बोने हैं। पर ग्राज सुबह तक गेहूं का एक भी दाना नहीं भून पाया था। क्या इससे ज्यादा जरूरी कोई ग्रौर काम भी हो सकता है? मुझे देर इसलिए हो गई क्योंकि यहां ग्राने से पहले लगभग तीन बुशल गेहूं भूनने पड़े!"

इमाम ग्रौर जूरी के सदस्य उसका बेवकूफीभरा जवाब सुनकर ठहाका मारकर हंस पड़े। फिर वे एक स्वर से बोले : "कैसी बेहूदा बातें कर रहे हो! क्या भुने हुए गेहूं भी कभी बीज के काम ग्रा सकते हैं?" वे जोर से चिल्लाकर ग्राफन्ती का मुंह बन्द करना चाहते थे, ताकि फिर मनमाना फैसला सुना सकें। लोगों में खलबली मच गई। वे सोचने लगे, ग्रगर ग्राफन्ती उनके सवाल का उचित उत्तर न दे पाया, तो कहीं उसे एक ग्रयोग्य वकील साबित न कर दिया जाए। लेकिन जब हंसने की ग्रावाजें बन्द हो गईं तो ग्राफन्ती बड़े धीरज से बोला : "ग्राप लोग बिलकुल सही फरमा रहे हैं – भुने हुए बीज कभी नहीं बोए जा सकते। लेकिन मैं ग्रापसे पूछता हूं : क्या खाई हुई मुर्गी कभी ग्रण्डे दे सकती है?" यह सुनकर इमाम ग्रौर जूरी के सदस्य हक्केबक्के रह गए। ग्रब कहीं उनकी समझ में ग्राया कि ग्राफन्ती उन्हें जाल में फंसाने के लिए ही देर से ग्राया था ग्रौर बेव-कूफीभरी बातें करने लगा था। ग्रदालत में उपस्थित दर्शक खुशी से चिल्ला पड़े : "बिलकुल ठीक है! खाई हुई मुर्गी भला ग्रण्डे कैसे दे सकती है?" ग्रदालत का माहौल देखकर इमाम ग्रौर जूरी के सदस्यों को मजबूर होकर पहले का फैसला रद्द करना पड़ा तथा सराय-मालिक को कुली से बाजार-भाव के मुताबिक मुर्गी के दाम लेने पड़े। इस तरह यह मुकदमा खत्म हो गया।

ग्राफन्ती ने तेल खरीदा

नसरुद्दीन ग्राफन्ती को लोग दुनिया का सबसे बुद्धिमान ग्रादमी समझते थे। लेकिन उसकी बेगम का कहना था कि वह निरा मूर्ख है। एक दिन सब पड़ोसी मिलकर बेगम के पास गए। "तुम नसरुद्दीन को हमेशा बेवकूफ कहती हो। जरा यह तो बताग्रो कि उन्होंने कौन से बेवकूफी के काम किए हैं ?"

"यह न पूछो, उनकी बेवकूफी के किस्से न जाने कितने हैं !" बेगम बोली। "मैं तुम्हें सिर्फ एक किस्सा सुनाती हूं। इससे पता चल जाएगा कि मेरे शौहर कितने बेवकूफ हैं !"

"ग्रगर तुम उन्हें सचमुच बेवकूफ साबित कर दो, तो हम तुम्हारी बात के कायल हो जाएंगे," पड़ोसियों ने कहा।

बेगम ने कुछ ही दिन पुरानी एक घटना सुना दी :

"नसरुद्दीन लम्बी यात्रा के बाद घर लौटे, तो मैंने उन्हें ग्राड़े हाथों लिया। मैंने कहा, 'तुम गप्पों में बेकार वक्त क्यों बरबाद करते हो ग्रौर हमेशा घर से बाहर क्यों रहते हो ?' तुम लोग जानते ही हो, नसरुद्दीन ग्रमीरों के सामने तो शेर की तरह दहाड़ते हैं लेकिन मेरे सामने भीगी बिल्ली बन जाते हैं। मेरी फटकार सुनने के बाद भी वे बड़े ग्रदब से मेरे सामने झुके, जैसे मैं कोई ग्रजनबी हूं, ग्रौर बोले : 'ग्रल्लाह तुम्हारा भला करे ! मेरी प्यारी मैना, क्या मैं लौटकर नहीं ग्रा गया ?' यह सुनते ही मेरा गुस्सा काफूर हो गया। मैंने मैना की तरह फुदककर ग्रपने प्रीतम को बांहों में समेट लिया ग्रौर ग्रांखें मूंदकर मन ही मन सोचने लगी : 'मैं कितनी खुश-किस्मत हूं ! ग्रल्लाह ने मुझे कितना ग्रच्छा शौहर दिया है !' लेकिन कुछ ही देर बाद उनकी हरकतों से मुझे फिर गुस्सा ग्रा गया। ग्रचानक नसरुद्दीन को एक काम याद ग्रा गया, जो किसी ने उन्हें सौंपा था। बस, फिर क्या था ? उसी के बारे में सोचने लगे ग्रौर मेरी हर बात की ग्रनसुनी करने लगे। मैं जानती थी कि यह ग्रच्छा लक्षण नहीं है ग्रौर उनके फिर एक

वार घर से गायब होने का संकेत है ! इसलिए मैंने फौरन उनके हाथ में एक कटोरा व कुछ पैसे थमा दिए और उन्हें तेल खरीदने भेज दिया, क्योंकि घर में तेल की एक भी बूंद नहीं थी। मैं अपने शौहर का ध्यान बटाना चाहती थी, ताकि वे फिर कहीं घर से बाहर न चले जाएं। पर वे रास्तेभर उसी काम के बारे में सोचते रहे। तेल की दुकान आ गई। दुकानदार ने कटोरे में तेल भर दिया, पर उन्हें पता ही न चला कि कटोरा तेल से लबालब भर चुका है। दुकानदार ने पूछा : 'बाकी तेल किस बरतन में डालूं ?' उनके पास कोई दूसरा बरतन न था। इसलिए कटोरे को उलटकर उसके तले में बने रिम की तरफ इशारा करते हुए वे बोले, 'बाकी तेल यहां डाल दो !' कटोरे का सारा तेल जमीन पर फैल गया। आसपास खड़े लोग ठहाका मार कर हंस पड़े। लेकिन अपने ख्यालों में डूबे नसरुद्दीन को कुछ भी पता नहीं चला। वे कटोरे की तरफ इशारा करते हुए बुदबुदाए : 'डालते क्यों नहीं ?' दुकानदार ने बाकी तेल भी उसी में डाल दिया। नसरुद्दीन उलटे कटोरे के रिम के अन्दर दो-चार चम्मच तेल लेकर घर लौट आए। मैंने आश्चर्य से पूछा : 'मैंने तुम्हें जो पैसे दिए थे उनसे क्या सिर्फ इतना ही तेल आया ?' जवाब मिला : 'ऐसी बात नहीं। बाकी तेल कटोरे के दूसरी तरफ है।' यह कहते हुए नसरुद्दीन ने फिर एक बार कटोरे को पलट दिया . . ."

यह सुनकर पड़ोसी हंसते-हंसते लोटपोट हो गए। नसरुद्दीन आफन्ती की बेगम मौके का फायदा उठाकर बोल पड़ी :

"अब तुम्हीं बताओ, दुनिया में क्या नसरुद्दीन जैसा बेवकूफ कोई और भी हो सकता है ?"

लेकिन पड़ोसी बेगम की बात से सहमत नहीं हुए। उनका ख्याल था कि नसरुद्दीन की इस दिमागी उलझन का कोई न कोई कारण जरूर रहा होगा। "यह नहीं कहा जा सकता कि इस मामले में नसरुद्दीन ने बेवकूफी दिखाई। दरअसल उनका दिमाग किसी दूसरे आदमी की गम्भीर समस्या में उलझा हुआ था। तुमने अपने शौहर से यह क्यों नहीं पूछा कि उनके

दिमाग पर कौन सी समस्या हावी थी ? तुम्हारी बात सुनकर हम यह नहीं कह सकते कि तुम्हारी ही सोच सही थी और तुम्हारे शौहर की सोच गलत थी ।"

बेगम ने ज्यादा बहस करना ठीक नहीं समझा । वह अपने शौहर के बारे में बाकी लोगों से ज्यादा जानती थी और अच्छी तरह समझती थी कि वे कितने बेवकूफ हैं । हालांकि वह आफन्ती को हमेशा "जंगली पंछी" जैसे उपनामों से पुकारती थी, फिर भी जब दूसरे लोग उनकी तारीफ करते थे तो वह मन ही मन बेहद खुश होती थी ।

青蛙骑手

——中国民间故事选

张光宇　　张大羽　插图
刘继卣　　蔡　荣

*

外文出版社出版
（中国北京百万庄路24号）
外文印刷厂印刷
中国国际书店发行
（北京399信箱）
1982年（大32开）第一版
编号：（印地）10050—1047
00110
10—H—276P